30.00

मरयम

या फ़ातिमा ज़हरा अ०

जनाबे फ़ातिमा ज़हरा अ०

एक आइडियल ख़ातून अ०

यूनिटी: इमाम ख़ुमैनी की नज़र में

काश! मुझे पता होता!

छोटी-छोटी मगर बड़ी बातें

ख़्वाहिशें

तफ़सीर

फ़ुज़ूलख़र्ची

हाथों की ख़ूबसूरती

ज़लज़ले

बच्चों को मारना-पीटना

इमाम अ० की मारेफ़त

गर्मियों की छुट्टियां

May 2011

अगर आपको 'मरयम' पसंद है तो....
इसे अपने रिश्तेदारों, साथियों और दोस्तों के बीच फैलाने में हमारी मदद कीजिए!

SUBSCRIPTION CHARGES WITHIN INDIA		
1 year	**12** issues	*320/-*
2 years	**24** issues	*600/-*
3 years	**36** issues	*850/-*

CONTACT NO.
+91-522-4009558
+91 9956 62 0017, 9695 26 9006
maryammonthly@gmail.com
LUCKNOW-INDIA

हज़रत फ़ातिमा ज़हरा अ० :

तुम में सबसे अच्छा वह है जो लोगों के साथ नर्म दिल और महरबान हो। और इसी तरह सबसे अहम लोग हैं जो अपने लाइफ़-पार्टनर के साथ महरबान और माफ़ करने वाले होते हैं।

(कन्जुल उम्माल, 7/225)

Monthly Magazine

MAY
2011

मरयम

MARYAM

Editor
M. Hasan Naqvi

Editorial Board
M. Fayyaz Baqir
Akhtar Abbas Jaun
Qamar Mehdi
Ali Zafar Zaidi

Managing Editor
Abbas Asghar Shabrez

Executive Editor
Fasahat Husain

Assist. Exec. Editor
M. Aqeel Zaidi

Contributors
Imtiyaz Abbas Rizwan
Abid Raza Noashad
Azmi Rizvi
Fatima

Graphic Designer
Siraj Abidi
9839099435

Typist
S. Sufyan Ahmad

इस महीने आप पढ़ेंगी...

तफ़्सीर	29
एक आइडियल ख़ातून[अ]	22
हाथों की ख़ूबसूरती	28
जनाबे फ़ातिमा ज़हरा[अ] (इन्टरव्यू)	17
मरसिया (जनाबे फ़ातिमा ज़हरा[अ])	40
एग-फ़्राईड राइस (डिश)	19
ज़लज़ले	26
कामयाबी (अख़लाक़)	5
गर्मियों की छुट्टियां	33
यूनिटी: इमाम ख़ुमैनी की नज़र में	10
इमाम[अ] की मारेफ़त	8
काश! मुझे पता होता! (कहानी)	37
ख़्वाहिशें	14
छोटी-छोटी मगर बड़ी बातें	15
बच्चों को मारना-पीटना	20
शिकवा-शिकायत (सच्ची कहानियां)	36

'मरयम' में छपे सभी लेखों पर संपादक की रज़ामंदी हो, यह ज़रूरी नही है।
'मरयम' में छपे किसी भी लेख पर आपत्ति होने पर उसके खिलाफ़ कारवाई सिर्फ़ लखनऊ कोर्ट में होगी और 'मरयम' में छपे लेख और तस्वीरें 'मरयम' की प्रॉपर्टी हैं।
इसका कोई भी लेख, लेख का अंश या तस्वीरें छापने से पहले 'मरयम' से लिखित इजाज़त लेना ज़रूरी है। 'मरयम' में छपे किसी भी कंटेंट के बारे में पूछताछ या किसी भी तरह की कारवाई प्रकाशन तिथी से 3 महीने के अंदर की जा सकती है। उसके बाद किसी भी तरह की पूछताछ और कारवाई पर हम जवाब देने के लिए मजबूर नहीं हैं।
संपादक 'मरयम' के लिए आने वाले कंटेंट्स मे ज़रुरत के हिसाब से तबदीली कर सकता है।

Printer & publisher Nazar Abbas Rizvi printed at Imagine Grafix,
4-Valmiki Marg,Lalbagh, Lucknow and published from 234/22 Thawai Tola,
Victoria Street, Chowk, Lucknow 226003 UP-India

Contact No.: +91-522-4009558, 9956620017, 9695269006
email: maryammonthly@gmail.com

A Socio-Cultural & Religious Monthly Magazine

ख़ुदा के नाम से जो बड़ा महरबान है...

पिछली सदी से ही चारों तरफ़ औरतों की हिमायत में, उनके हक़ों के लिए और आज़ादी के लिए नारे लगाए जा रहे हैं। इन सबसे औरतों को क्या मिला वह तो हम सब के सामने है जिसपर बात करने की कोई ज़रूरत नहीं है। बात अगर है तो सिर्फ़ इतनी सी कि जिस क़ौम के पास हज़रत फ़ातिमा ज़हरा[अ] जैसा आईडियल मौजूद है उसे दर-दर भटकने की क्या ज़रूरत है? उस क़ौम की औरतें अपनी आज़ादी, अपने हक़ और अपने पांव पर खड़े होने के लिए दूसरी क़ौमों की तरफ़ नज़र उठाकर क्यों देखती हैं?

जनाबे फ़ातिमा ज़हरा[अ] पूरी इन्सानी हिस्ट्री की पहली और आख़िरी ख़ातून हैं जिन्होंने औरतों के जीने के लिए हर एंगिल से एक परफ़ैक्ट आईडियल पेश किया है। जनाबे फ़ातिमा ज़हरा[अ] एक बेटी, एक बीवी और एक माँ के रूप में हमारे लिए एक मिसाल हैं। अगर हमें आईडियल चाहिए है तो आप[अ] की तरफ़ देखें।

जनाबे फ़ातिमा सिर्फ़ एक घरेलू औरत नहीं थीं कि हम यह कहकर जान छुड़ा लें कि अरे वह तो बस घर के काम-काज ही करती रहती थीं, आज की ज़िन्दगी बदल चुकी है, माडर्न ज़माना है और आज की ज़रूरतें भी अलग हैं, हम उनकी तरह घर के अंदर क़ैद नहीं हो सकते। नहीं! ऐसा बिल्कुल नहीं है बल्कि अगर कुछ है तो वह इसके बिल्कुल उल्टा है। हिस्ट्री गवाह है कि जनाबे फ़ातिमा[अ] ने ज़िंदगी के हर मैदान में बढ़-चढ़ कर हिस्सा लिया है। मस्जिद, मिम्बर, जंग, तबलीग़, दूसरों से मिलना-जुलना, उनके दुख-दर्द में काम आना, उनकी मदद करना, दुनिया की हलाल नेमतों से लुत्फ़ उठाना वग़ैरा-वग़ैरा...

हम अगर जनाबे फ़ातिमा ज़हरा से मोहब्बत करते हैं तो हमें उनके बताए रास्ते पर चलना ही पड़ेगा वरना हम कैसे कह सकते हैं कि हम उनके मानने वाले हैं!

हम जनाबे फ़ातिमा की विलादत पर आप सब को दिली मुबारकबाद और इसी महीने में आपकी दर्दनाक शहादत पर ताज़ियत पेश करते हैं!

कामयाबी

■ आयतुल्लाह मकारिम शीराज़ी

कामयाबी है क्या?

कामयाबी को खुलासे के तौर पर इस तरह बयान किया जा सकता है: "हर उस पॉसिबिल परफ़ैक्शन का हासिल करना जिस तक पहुंचने के लिए इंसान के अंदर सलाहियत पाई जाती है। दूसरे अलफ़ाज़ में इंसान के अंदर पाई जाने वाली अलग-अलग ताक़तों और सलाहियतों से सही और असली फ़ायदा उठाना।"

लेकिन मसला यह है कि "परफ़ैक्शन" और "फ़ायदा" अपने आम मायने के लिहाज़ से जितने क्लियर हैं उतने ही इंडिवीजुअल और अलग-अलग लोगों के लिहाज़ से पेचीदा व मुश्किल हैं। यहां तक कि आम तौर पर लोग इस कामयाबी के रास्ते से भटक जाते हैं और ग़ल्तियां कर बैठते हैं जैसे कि हो सकता है कि एक अमीर आदमी जिसने अपने सारे रूहानी और जिस्मानी आराम व सुकून को सिर्फ़ दौलत का ढेर लगाने पर ख़र्च कर दिया हो ख़ुद को कामयाब मान बैठे और उसके मरने के बाद उसका नालायक़ बेटा अपनी दुनियावी ख़्वाहिशों की प्यास बुझाने के लिए इस दौलत को तितर-बितिर करने को ही अपनी कामयाबी समझ बैठे, जबकि यह दोनों ही ग़लती पर होंगे।

यहां ज़रूरी है कि अक़्ल और समझ को इस्तेमाल करते हुए इंसानी परफ़ैक्शन और इस इंसान के अंदर पाई जाने वाली जिस्मानी-रूहानी ताक़तों की शक्ल में पाई जाने वाली नेमतों को पहचाना जाए। वैसे इस उसूली तौर पर यह काम एक गहरी स्टडी वाला और बहुत ज़्यादा परेशानियों भरा है।

क्या कामयाबी सिर्फ़ रूह से जुड़ी है?

पुराने यूनान के कुछ साइनिक्स यानी शक्की फ़िलास्फ़र्स का नज़रिया था कि कामयाबी सिर्फ़ रूह से जुड़ी चीज़ का नाम है यानी जिस्मानी व माद्दी हालत जैसी भी हो, इंसान की कामयाबी पर उसका कोई असर नहीं पड़ता है और इसी वजह से उनका मानना था कि रूहानी और अख़्लाक़ी बुलंदियों को छू लेने का नाम ही कामयाबी है। यहां तक कि उनके मुताबिक़ इंसान के लिए असली और हक़ीक़ी कामयाबी इस दुनिया में पॉसिबिल ही नहीं है क्योंकि रूह जब तक इस जिस्म से जुड़ी है और जिस्मानी गंदगियों का शिकार है, असली कामयाबी और परफ़ैक्शन तक नहीं पहुंच सकती। रूह सिर्फ़ इस हालत में हक़ीक़ी कामयाबी से हाथ मिला सकती है जब जिस्म से अलग हो जाए। इसी वजह से यह लोग कामयाबी और परफ़ैक्शन हासिल करने के लिए सारे दुनियावी कामों से मुंह मोड़ लेते थे।

इस ऊपर वाले फ़लसफ़े की एक मशहूर शख़्सियत डियोजॉन्स की ज़िंदगी के हालात और उसका एक खंडर में अपनी सारी ज़िंदगी बसर कर देना, साथ ही ज़िंदगी के सारे कामों को छोड़ करके सिर्फ़ मिट्टी के एक बरतन पर गुज़ारा कर लेना बहुत मशहूर है। यहां तक कहा जाता है कि एक दिन उसने देखा कि एक आदमी एक नहर के किनारे पानी पीने के लिए अपने हाथों को पानी के बरतन के तौर पर इस्तेमाल कर रहा है। यह मंज़र देखकर उस फ़लसफ़ी ने अपना वह एक बरतन भी फेंक दिया।

इस ऊपर वाले नज़रिए के उलट एक दूसरा नज़रिया पाया जाता है जिसको एग्ज़िस्टेंशियालिज़्म कहा जाता है। जिसके मुताबिक़ कामयाबी और परफ़ैक्शन दुनियावी नेमतों से फ़ायदा उठाने का

नाम है, वह भी बग़ैर किसी शर्त और हद के। साथ ही अगर इस रास्ते में कोई मुश्किल या मसला पैदा हो जाए तो उसको दूर करने और उसकी मुख़ालिफ़त करने को इस नज़रिए के लोग अपना पैदाईशी हक़ मानते हैं।

इन लोगों के मुताबिक़ कामयाबी और परफ़ैक्शन सिर्फ़ दुनियावी नेमतों ही के ज़रिए मिल सकता है। अपने इस नज़रिए में यह लोग इतने पक्के हैं कि इसके लिए सारे अख़्लाक़ी-समाजी उसूलों और वेल्युज़ को अपने पैरों तले रौंदते हुए आगे बढ़ते चले जाते हैं।

यह नज़रिया आज-कल पश्चिमी मुल्कों में दिन बदिन फैलता जा रहा है। वैसे साफ़ सी बात है कि इस नज़रिए को एक स्कूल ऑफ़ थॉट नहीं कहा जा सकता बल्कि यह एक तरह की ज़हनी बीमारी है। बहरहाल जो कुछ भी है यह साइनिसिज़्म जैसे एक्सट्रीम स्कूल ऑफ़ थॉटस के ख़िलाफ़ एक रिएक्शन है जिन्होंने कामयाबी और परफ़ैक्शन के लिए दुनियावी व जिस्मानी एंगिल से पूरी तरह आँखें मूंद ली थीं।

बीच का रास्ता

इंसान सिर्फ़ जिस्म या रूह का नाम नहीं है बल्कि एक ऐसी हक़ीक़त है जो रूह और जिस्म से मिलकर बनी है। इसलिए ज़रूरी है कि कामयाबी और परफ़ैक्शन को रूह और जिस्म दोनों में तलाश किया जाए। ज़ाहिर है कि अगर कोई स्कूल ऑफ़ थॉट या नज़रिया इंसान के सिर्फ़ एक एंगिल पर अपना सारा ध्यान लगा देगा तो किसी भी तरह इंसानों को कामयाबी और परफ़ैक्शन के रास्ते पर नहीं चला सकता। इस बारे में यह बिल्कुल नहीं भूलना चाहिए कि रूह असल है और जिस्म उसके बाद की चीज़ का नाम है यानी रूह तक पहुंचने के लिए जिस्म सिर्फ़ एक ज़रिए का काम करता है।

यूनानी फ़िलास्फ़र्स में से अरस्तू जिसको अरिस्टोटिल भी कहा जाता है और उसके मानने वाले इसी नज़रिए को मानते हैं। साथ ही इस्लामी टीचिंग्स भी इसी नज़रिए की हिमायत करती हैं। इस्लाम ने एक काम यह भी किया है कि इसके लिए नए उसूल और क़ानून भी बनाए हैं। यह एक ऐसी सच्चाई है जो क़ुरआन की बहुत सी आयतों और मासूमीन[अ०] की हदीसों में जगह-जगह नज़र आती है। इस बारे में इस्लामी नज़रिया इन आयतों से बिल्कुल साफ़ हो जाता है, "कुछ लोग ऐसे हैं जो कहते हैं परवरदिगार हमें दुनिया में नेकी दे दे और उनका आख़िरत में कोई हिस्सा नहीं है और कुछ कहते हैं कि परवरदिगार हमें दुनिया में भी नेकी अता फ़रमा और आख़िरत में भी और हम को जहन्नम के अज़ाब से महफ़ूज़ रख। यही वह लोग हैं जिनके लिए उनकी कमाई का हिस्सा है और ख़ुदा बहुत जल्द हिसाब करने वाला है।" (1)

> *हज़रत अली[अ०] :*
> ***मोमिन को चाहिए कि अपने दिन-रात को तीन हिस्सों में बांटे। एक हिस्सा ख़ुदा की इबादत के लिए, दूसरा हिस्सा रोज़ी-रोटी के लिए और तीसरा हिस्सा हलाल चीज़ों से लज़्ज़त हासिल करने के लिए।***

इस बारे में में इस बात का ख़्याल रखना चाहिए कि रूह व जिस्म के बीच रिश्ता इतना गहरा और मज़बूत है कि इनमें से किसी एक पर पड़ने वाला असर यक़ीनी तौर पर दूसरे पर भी पड़ता है।

आज साइकॉलोजी के ज़रिए साबित हो चुका है कि अख़्लाक़ी गुमराहियों में से कुछ गुमराहियां जिस्मानी व दुनियावी ख़्वाहिशों और ज़रूरतों के पूरा न हो पाने की वजह से पैदा होती हैं।

अपने नफ़्स की ख़्वाहिशों का दबाना और कुचलना हमेशा रूहानी परेशानियों और पेचीदगियों की शक्ल में सामने आता है। इस तरह के मसले अख़्लाक़ के उलमा के लिए भी काफ़ी मुश्किलें व पेचीदगियां पैदा कर देते हैं। मुश्किल यहां ख़ड़ी होती है कि उलमा इन मसलों का जो हल पेश करते हैं उस पर आम तौर पर लोग अमल नहीं कर पाते। इन मसलों का हल सिर्फ़ यही है कि जिस रास्ते से यह पैदा होते हैं उसी रास्ते से इनको दूर भी किया जाए यानी ज़रूरी है कि जिस्मानी ज़रूरतों और ख़्वाहिशों को सही तौर पर पूरा किया जाए।

आम इंसानों में न जाने कितने ऐसे लोग देखने में आते हैं जो हसद, जलन, गुरूर, बुरे ख़्यालात, कीना वग़ैरा जैसी बुरी सिफ़तों का शिकार होते हैं। इन सारी बुरी सिफ़तों की वजह वही जिस्मानी ख़्वाहिशों और डिमांड्स का सही तौर पर पूरा न होना है।

इस्लाम ने इस सेंसिटिव और नाज़ुक मसले में साफ़ तौर पर अपना नज़रिया बयान कर दिया है, "पैग़म्बर! आप पूछिए कि किसने उस ज़ीनत को

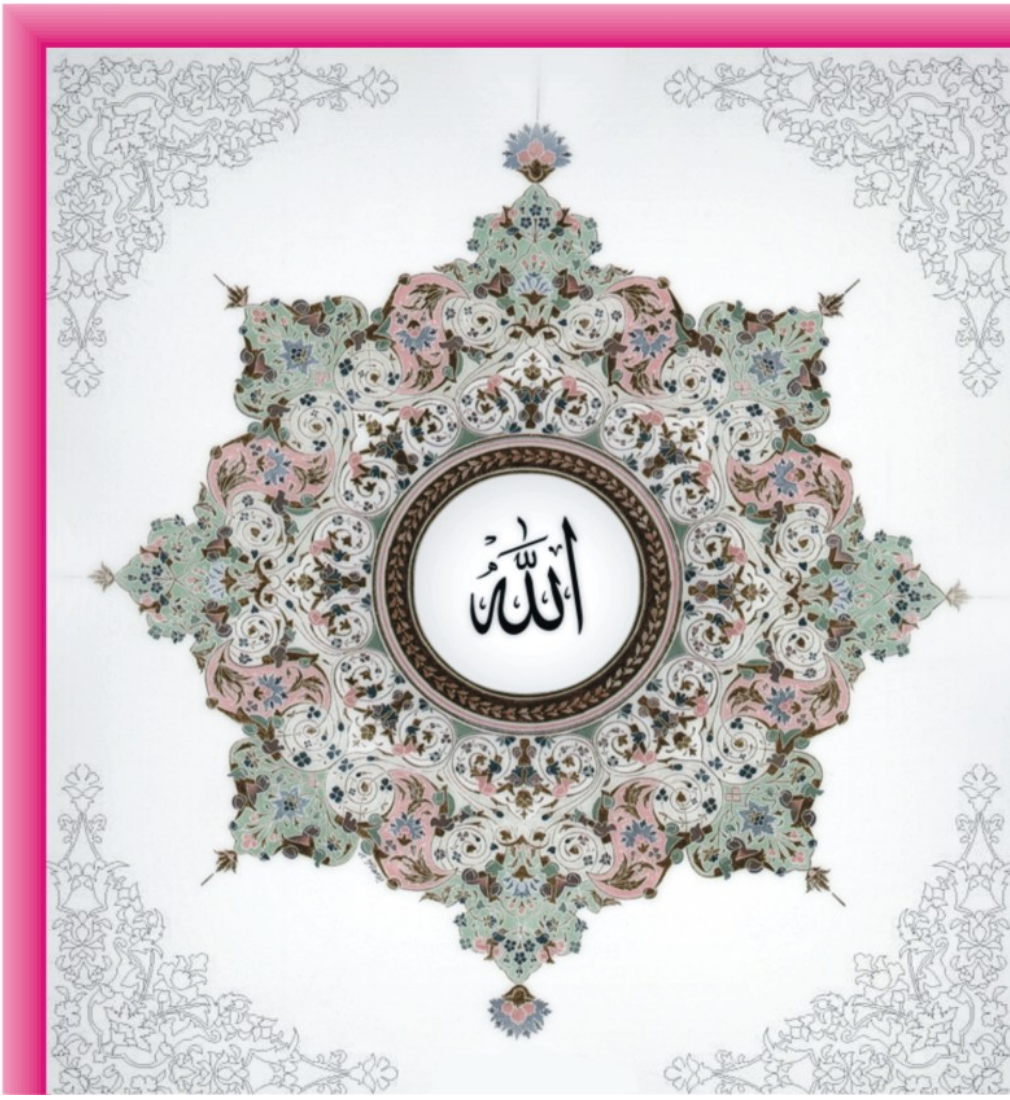

जिसको ख़ुदा ने अपने बंदों के लिए पैदा किया है और पाकीज़ा रिज़्क़ को हराम कर दिया है...और बताइए कि क़यामत के दिन यह चीज़ें सिर्फ़ उन लोगों के लिए हैं जो दुनिया की ज़िंदगी में ईमान लाए हैं।[2]

नहजुल बलाग़ा में हज़रत अली[अ०] फ़रमाते हैं, "मोमिन को चाहिए कि अपने दिन-रात को तीन हिस्सों में बांटे। एक हिस्सा ख़ुदा की इबादत के लिए, दूसरा हिस्सा रोज़ी-रोटी के लिए और तीसरा हिस्सा हलाल चीज़ों से लज़्ज़त हासिल करने के लिए।[3]

कुछ रिवायतों में यह भी मिलता है कि 'इन तीन हिस्सों में से यह आख़िरी हिस्सा दूसरे हिस्सों के लिए मददगार है।'

इंडिवीजुअल और सोशल अख़्लाक़

कुछ लोगों का ख़्याल है कि सारे अख़्लाक़ी उसूल पलट कर इंसानों के एक दूसरे के साथ ख़ास समाजी रिलेशंस की तरफ़ ही जाते हैं यानी अगर समाज दुनिया में होता ही नहीं और हर इंसान एक दूसरे से पूरी तरह पर अलग और बेख़बर होता तो 'अख़्लाक़' की कोई ज़रूरत थी ही नहीं क्योंकि ग़ुरूर-मिलनसारी, दूसरों के बारे में अच्छा सोचना-बदगुमानी, इंसाफ़-ज़ुल्म, बख़्शिश-कंजूसी वग़ैरा उन मसलों में से हैं जो सिर्फ़ और सिर्फ़ समाज और एक दूसरे से मिलने-जुलने की वजह से पैदा होते हैं। इसलिए अगर समाज न हो तो अख़्लाक़ की भी इंसानी ज़िंदगी में कोई अहमियत नहीं होगी लेकिन इस्लामी नज़रिए से अगर देखा जाए तो यह कहना पड़ेगा कि बहुत सी अख़्लाक़ी बुराईयां और अच्छाईयां ऐसी हैं जो समाजी ज़िंदगी पर बेस करती हैं लेकिन बहुत सी अख़्लाक़ी बुराईयां और अच्छाईयां ऐसी भी हैं जो सिर्फ़ इंसान की अपनी ज़ाती ज़िंदगी पर बेस करती हैं यानी अगर दुनिया में एक ही इंसान पाया जाए तब भी यह बुराईयां या अच्छाईयां पैदा हो ही जाएंगी। जैसे मुसीबतों पर सब्र करना, हालात के हिसाब से बहादुरी या डर, अपने मक़सद तक पहुंचने के लिए कोशिश करना या ढीलापन दिखाना, ख़ुदा की इबादत करना या न करना और उसकी कभी ख़त्म न होने वाली नेमतों पर शुक्र या नाशुक्री वग़ैरा ऐसी चीज़ें हैं जो इंडिवीजुअल-लाइफ़ में भी पैदा हो जाती हैं। उलमा ने अपनी अख़्लाक़ी किताबों में इन सब के बारे में लम्बी-लम्बी बहसें की हैं और इनको अख़्लाक़ी बुराईयों या अच्छाईयों में गिना है।

एक बड़ी ग़लती

यहां यह बात ध्यान देने वाली है कि वह लोग एक बहुत बड़ी ग़लती कर बैठते हैं जो यह समझते हैं कि तज़किया-ए-नफ़्स यानी ख़ुद को बुराईयों से पाक रखें और अच्छी अख़्लाक़ी क्वॉलिटीज़ उसी वक़्त मिल सकती हैं जब सारे समाज से कट कर किसी एक कोने में बैठ जाया जाए। ठीक है कि यह काम उनको अख़्लाक़ी बुराईयों से बचा लेता है लेकिन अगर सही मायने में देखें तो यह उसकी अच्छाई नहीं मानी जा सकती। इसकी मिसाल बिल्कुल ऐसे ही है जैसे कोई अपनी चोरी की आदत से बचने के लिए अपने हाथों को ही काट दे। यह सही है कि ऐसा इंसान चोरी करने और गुमराही से बच जाएगा लेकिन यह भी सही है कि इसके लिए यह कोई फ़ज़ीलत और बड़ाई नहीं है।

इसके अलावा तर्जुबे से साबित हो चुका है कि एक कोने में बैठ जाना और गोशा-नशीनी की ज़िंदगी अपने साथ बहुत सी अख़्लाक़ी बुराईयां लेकर आती है जैसे बदमिज़ाजी, बुरे ख़्यालात, ग़ुरूर, अना वग़ैरा।

यही वजह है कि इस्लाम ने मुसलमानों को समाजी ज़िंदगी यहां तक कि बड़े शहरों में रहने यानी समाज के बीचों बीच रहकर अख़्लाक़ी उसूलों पर अमल करने के लिए ज़ोर दिया है।

1-सूरए बक़रा/200-202, 2-सूरए आराफ़/32, 3-नहजुल बलाग़ा, कलिमाते क़िसार, 39

सूरए फ़ातिहा

मरहूम सै. कर्रार हैदर रिज़वी
पैदाइश: पट्टी सादात, छपरा, बिहार
इंतेक़ाल: 19-05-2003 (लखनऊ)
तदफ़ीन: इमामबाड़ा ग़ुफ़रांमाब, लखनऊ

मरहूम N.E. Railways में मलाज़िम रहे। इसके बाद V.R.S. लेकर अपना कंस्ट्रक्शन कंसलटेंट का काम लखनऊ में शुरू कर दिया। मरहूम की शादी बिहार के मशहूर फ़ल्सफ़ी व शायर इजतबा हुसैन रिज़वी की भतीजी, सैय्यद अली मूसा रिज़वी की बेटी से मुज़फ़्फ़रपुर में हुई। मरहूम ने अपनी ज़िंदगी में ही अपनी सात बेटियों और एक बेटे की शादी कर दी थी।

मरहूम के बेटे दानिश रिज़वी और उनकी बुहू ने 'मरयम' के लिए तआवुन किया है। अल्लाह उन्हें इसका अज्र अता करे!

इन मरहूमीन के लिए भी सूरए फ़ातिहा की गुज़ारिश है:

मरहूम सै. अमीर हैदर
मरहूमा सै. अतिया ख़ातून
मरहूम सै. अली मूसा रिज़वी
मरहूमा सै. तैयबा बेगम
मरहूम सै. ज़फ़र अब्बास रिज़वी
मरहूम सै. इजतबा हुसैन रिज़वी
मरहूम सै. शब्बीर हुसैन रिज़वी
मरहूम सै. कर्रार हुसैन रिज़वी
मरहूमा मोमिना ख़ातून
मरहूम सै. मुरतज़ा अज़हर रिज़वी

इमाम की मारेफ़त

■ फ़साहत हुसैन

'मरयम' में इमामे ज़माना[अ०] के बारे में सिलसिलेवार आर्टिकिल्स शुरू किए जा रहे हैं। हम हर इश्यू में इस सिलसिले का एक आर्टिकिल पेश करेंगे। पहला आर्टिकिल इमाम की मारेफ़त के बारे में है।

यह बहुत मशहूर हदीस है कि जो अपने के इमाम को न पहचाने वह जाहिलियत की मौत मरता है। इस हदीस को सुनने के बाद ज़हन में कुछ सवाल आते हैं:

इमाम को पहचानना क्यों ज़रूरी है?
जाहिलियत की मौत का क्या मतलब है?
इमाम को पहचानने का क्या मतलब है?
इमाम को किस तरह पहचाना जा सकता है?
इमाम को पहचानने का फ़ाएदा क्या है?

इमाम की मारेफ़त

यह बात तो हम सभी जानते हैं कि हम पर खुदा की इताअत और बंदगी वाजिब है और खुदा ने हमें अपने एहकाम बताने के लिए नबियों को भेजा और नबुव्वत व रिसालत के बाद इमामत का सिलसिला शुरू किया यानी अम्बिया के बाद इमाम हमारे दीनी रहनुमा हैं और हम पर उनकी इताअत वाजिब है ज़ाहिर है कि जिस तरह इताअत वाजिब है उसे पहचानना और मारेफ़त हासिल करना भी ज़रूरी है क्योंकि बग़ैर पहचाने हुए किसी की इताअत नहीं की जा सकती और अगर बग़ैर पहचाने किसी को माना जाए तो उसका नुक़सान यह होता है कि जो कोई भी यह दावा कर दे कि मैं इमाम हूँ तो लोग उसे मानने लगते हैं। रसूल ने अपने बाद आने वाले सारे इमामों को पहचनवाया था और आपकी यह हदीसें शिया और अहलेसुन्नत दोनों की किताबों में मौजूद हैं जिनमें आप ने इमामे ज़माना[अ०] के बारे में लोगों को बताया है कि आख़िरी ज़माने में मेरी औलाद में से 'मेहदी' आएगा जो दुनिया को इंसाफ से भर देगा और आपके बाद दूसरे इमामों ने भी आख़िरी इमाम के आने की ख़बर दी है। इसलिए बहुत से लोगों ने *मेहदी* होने का झूठा दावा। जिन लोगों को इमाम की मारेफ़त नहीं थी उनहोंने यह दावा मान भी लिया। इसलिए ऐसा झूठा दावा करने वालों से बचने के लिए इमाम की मारेफ़त ज़रूरी है।

हक़ीक़त में ख़ुदा की मारेफ़त भी उस वक़्त तक सही हासिल नहीं हो सकती जब इमाम को ना पहचाना जाए। दुनिया में बहुत सी क़ौमें ख़ुदा को तो मानती हैं लेकिन उनहोंने अपनी सोच के मुताबिक अपना ख़ुदा बना लिया है इसीलिए वह समझते हैं कि ख़ुदा ग़लती कर सकता है, ग़लत काम कर सकता है वग़ैरा। लेकिन इस्लाम ने ख़ुदा को पहचनवाने के लिए नबियों और इमामों को

भेजा है। जब हम हदीसों और दुआओं को पढ़ते हैं तो हमें इनसे ख़ुदा की सही मारेफ़त मिलती है। इसलिए इमाम की मारेफ़त ख़ुदा की मारेफ़त का ज़रिया है।

जाहिलियत की मौत

अरब के इस्लाम से पहले के ज़माने को जाहिलियत का दौर कहा जाता है यानी वह दौर जब लोग ख़ुदा और रसूल को नहीं पहचानते थे। इसलिए जो शख़्स अपने ज़माने के इमाम को न पहचाने वह बिलकुल ऐसे है जैसे उसने ना ख़ुदा को पहचाना है और ना रसूल को।

एक शख़्स ने इमाम सादिक़[अ०] से उस जाहिलियत के बारे में पूछा तो आपने फ़रमाया 'इससे मुराद कुफ़्र, निफ़ाक़ और गुमराही की जाहिलियत है'।

इमाम को पहचानने का क्या मतलब है?

इमाम को दो ऐतबार से पहचाना जा सकता है

इमाम का नाम और नसब मालूम होना। रसूल[स०] ने अपने बाद वाले बारह इमामों के नाम लोगों को बता दिए थे और उनहें यह भी बता दिया था कि वह मेरी नस्ल से होंगे।

इमाम की सिफ़तों व फ़ज़ाएल का पता होना

यानी यह पता होना कि:

1-ख़ुदा ने उनहें हमारी हिदायत के लिए इमाम बनाया है।

2-इमाम गुनाहों से पाक और मासूम होता है।

3-इमाम का हर काम और हर बात ख़ुदा के मुताबिक़ होती है।

4-ख़ुदा ने इमाम को ग़ैब का इल्म दिया है यानी इमाम को जिस चीज़ के जानने की ज़रूरत होती है ख़ुदा उन्हें उसका इल्म दे देता है।

5-हम पर इमाम का हुक्म मानना वाजिब है।

6-इमामत दीन का सिस्टम है और इमाम के ज़रिए ही मुसलमानों को इज़्ज़त और सरबुलनदी मिल सकती है।

इमाम को पहचानने का तरीक़ा

इमाम को तीन तरह से पहचाना जा सकता है:

1-रसूल[स०] का लोगों को यह बताना कि मेरे बाद ख़ुदा ने इन लोगों को इमाम बनाया है यानी पैग़मबर[स०] ख़ुदा के हुक्म की ख़बर दें या हर इमाम अपने बाद वाले इमाम के बारे में बताए। जैसा कि इमामे ज़माना[अ०] के बारे में पैग़मबर[स०] और सारे इमामों ने ख़बर दी है। क्योंकि आम लोगों को यह नहीं मालूम हो सकता कि किस के अंदर वह सिफ़ात पाई जाती हैं जिन में से कुछ को पहले बयान किया गया है। यह सिफ़ात ख़ुदा जान सकता है और वह अपने रसूल और इमाम के ज़रिए हमें बताता है।

> *"इमाम को पहचानने का सबसे पहला फाएदा इमाम से इश्क और मोहब्बत है। क्योंकि इमाम ऐसे फज़ाएल और कमालात का मालिक होता है कि हर इन्सान उनहें देखने के बाद इमाम से मोहब्बत करने लगता है और इस मोहब्बत की वजह से उनकी इताअत करता है और उनके हर हुक्म पर अमल करता है।"*

2-मोजेज़ा यानी ऐसा काम जो न तो जादू होता है और न ही आम लोग उसे कर सकते हैं। जो शख़्स यह दावा कर रहा है कि उसे ख़ुदा की तरफ से लोगों का इमाम बनाया गया है तो वह ख़ुदा के हुक्म से ऐसा ग़ैर मामूली काम अंजाम देता है ताकि लोगों को उसकी बात पर यक़ीन आ जाए। जिस तरह हजरे असवद ने इमाम ज़ैनुल आबेदीन[अ०] की इमामत की गवाही दी थी।

3-ज़िंदगी और सीरत की रिवायत में इमाम की सिफात बयान की गई हैं। जिसके पास इल्म और सलाहियत हो वह किसी की ज़िंदगी और सीरत देख कर समझ सकता है कि वह हक़ीक़ी इमाम है या नहीं।

मारेफ़त का फाएदा

1-मोहब्बत और इताअत

इमाम को पहचानने का सबसे पहला फाएदा इमाम से इश्क और मोहब्बत है। क्योंकि इमाम ऐसे फज़ाएल और कमालात का मालिक होता है कि हर इन्सान उनहें देखने के बाद इमाम से मोहब्बत करने लगता है और इस मोहब्बत की वजह से उनकी इताअत करता है और उनके हर हुक्म पर अमल करता है।

2-गुमराही से बचना

जो अपने ज़माने के इमाम को पहचान ले वह गुमराह होने से बच जाता है क्योंकि इमाम उसकी हिदायत करते हैं। जैसा कि हम इमाम हुसैन[अ०] के ज़माने में देखते हैं कि जो लोग आपको पहचानते थे और आपको इमाम जानते थे वह यज़ीद और उसकी फैलाई हुई गुमराहियों में गिरफ़तार नहीं हुए थे। इसलिए इस दुआ में कहा गया 'ख़ुदा हमें अपनी हुज्जत यानी इमाम की मारेफ़त अता फरमा क्योंकि अगर मैंने इमाम को न पहचाना तो मैं अपने दीन से गुमराह हो जाऊँगा'।

3-इमाम से ग़लत उम्मीदें न लगाना

जो भी इमाम को पहचान लेता है वह इमाम से सिर्फ़ वही काम चाहता है जो ख़ुदा की मर्ज़ी के मुताबिक़ होते हैं क्योंकि इमाम सिर्फ़ ख़ुदा की मर्ज़ी के मुताबिक़ फ़ैसला करते हैं। जिस तरह इमाम अली[अ०] के ज़माने में कुछ लोग चाहते थे कि वह इमाम के पास हैं इसलिए इमाम उनके साथ सख़्ती न बरतें लेकिन फिर भी इमाम उनके साथ वही बर्ताव करते थे जो इंसाफ़ के उसूल पर चलते हुए करना चाहिए था। इसलिए कुछ लोग आप से दूर हो गए और आपके दुश्मनों के साथ मिल गए मगर इमाम को इसकी परवा नहीं थी।

जो इमाम को जानता है उसे पता होता है कि इमाम कोई गुनाह नहीं कर सकता और कोई ग़लत काम भी नहीं कर सकता।

जो यह जानता है कि इमाम को हर चीज़ के बारे में पता है उसे इस बात का ध्यान रहता है कि उसके आमाल को उसके ज़माने का इमाम जानता है। इसलिए वह ऐसा कोई काम नहीं करता जिससे उसका इमाम नाराज़ हो जाए।

यूनिटी इमाम ख़ुमैनी की नज़र में

■ हुज्जतुल इस्लाम अहमद ख़ुमैनी

"20 जमादिउस्सानी हज़रत फ़ातिमा ज़हरा की विलादत का दिन है और इत्तेफ़ाक़ यह है कि यही दिन इमाम ख़ुमैनी की पैदाइश का भी दिन है। शायद यह इसी दिन पैदा होने की बरकत थी कि आपने पिछली सदी को पूरी तरह हिलाकर रख दिया था। इमाम ख़ुमैनी का सबसे बड़ा नारा 'यूनिटी' था और इसी पर चलते हुए आपने अपने मिशन को कामयाबी की मंज़िलों तक पहँचाया था। यह आर्टिकिल आपके बेटे हुज्जतुल इस्लाम अहमद ख़ुमैनी ने लिखा था। हम यह आर्टिकिल आपके लिए पेश कर रहे हैं इससे हमें इमाम ख़ुमैनी के 'यूनिटी' वाले नज़रिए का अंदाज़ा हो जाएगा..."

इमाम ख़ुमैनी अपने ज़माने में इस्लामी उम्मत के बीच यूनिटी के सबसे बड़े अलम्बरदार रहे हैं और इसी बुनियाद पर उन्होंने एक इस्लामी सिस्टम की बुनियाद रखी थी। आपके के नज़रियों को जानना और समझना इस यूनिटी के तरफ़दारों के लिए रास्ते खोलने वाला और गुत्थियां सुलझाने वाला सब्जेक्ट रहा है।

इन्सान पैदाइशी तौर पर तौहीद की तरफ़ झुकने वाला होता है और पूरी हिस्ट्री को अगर उठाकर देखा जाए तो नज़र आता है कि जहां-जहां इन्सानी अक़्ल पर उसकी ख़्वाहिशों और शैतानी सोच ने क़ब्ज़ा नहीं किया है वहां-वहां इन्सान ने तौहीद के रास्ते पर ही क़दम आगे बढ़ाए हैं। साथ ही लड़ाई-झगड़ों, टूट-फूट, डिस-यूनिटी और फ़िर्क़ेबंदी को इंसानी समाज के लिए नासूर माना है।

सारे नबियों[अ०] की दीनी दावत की बुनियाद तौहीद पर ही थी। उन्होंने तौहीद ही के सहारे इंसान को बेदीनी से पाक करने की कोशिश की थी। तौहीद का अक़ीदा इस्लाम और बेदीनी के बीच फ़ासला ख़ींचने वाली लाइन है।

इस्लाम के सारे स्कूल ऑफ़ थॉट्स चाहे फ़लसफ़ी हों या इरफ़ानी, अख़्लाक़ी हों या कलामी या तरबियती, सब की बुनियाद तौहीद है। यह सब के सब इन्सानियत को एक ख़ुदा की तरफ़ ले जाते हैं। जो पढ़े-लिखे हैं उन पर यह छुपा नहीं है कि इंसानी समाज की यूनिटी की ख़्वाहिश तौहीद के अक़ीदे की वजह से है और उसके मुक़ाबले में धड़ेबंदी और फ़िर्क़ाबंदी बेदीनी की बुनियाद पर होती है। क़ुरआने मजीद में एक उम्मत वाला नज़रिया हक़ीक़ी मायने में ख़ुदा की तरफ़ जाने का ज़ीना है, "शुरू ही से हक़ व बातिल का इख़्तेलाफ़ जिस शक्ल में या जिस तरह पर हो तौहीद और शिर्क की बुनियादों पर रहा है।

इमाम ख़ुमैनी फ़रमाते हैं, "गुटबंदी शैतान की तरफ़ से और युनिटी रहमान की तरफ़ से है।"

दुनिया देख रही है कि वह इंटरनेशल फ़ौरम्स अक्सर मौक़ों पर नाकाम रहे हैं जिनके बनने का मक़सद और नारा ही क़ौमों और हुकूमतों के बीच यूनिटी पैदा करना और झगड़ों का ख़त्म कराना था बल्कि ख़ुद साम्राज के हाथों इस्तेमाल होकर दूरियों और इख़्तेलाफ़ की वजह बने हैं। पिछली दहाईयों में सैकड़ों तनज़ीमों और हुकूमतों ने आपस में मदद और यूनिटी क़ायम करने के एग्रीमेंट किए हैं जिनके बारे में बड़े चर्चे भी किए गए और जिनसे लोगों में उम्मीदें भी पैदा हो गईं थीं लेकिन उनका कोई नतीजा नहीं निकला और नाकामकी ही हाथ आई।

एक ज़माने से इस्लामी मुल्कों के बीच यूनिटी की बात की जा रही है। इस बीच बहुत से इस्लामी मुल्कों में सियासी लीडरों और पार्टियों ने यूनिटी का नारा लगाकर हुकूमत हासिल कर ली और अभी भी हुकूमत चला रहे हैं। इस सब्जेक्ट पर सैकड़ों किताबें और आर्टिकिल्स भी लिखे जा चुके हैं, स्कालर्स और राइटर्स यूनिटी की अहमियत पर ज़ोर देते रहे हैं लेकिन इस रास्ते में अभी तक कोई अमली क़दम नहीं उठाया गया है। मेरे ख़्याल में इन नाकामियों की वजह उन बुनियादी चीज़ों में तलाश करनी चाहिए कि जिन पर ध्यान दिए बग़ैर सारी कोशिशें इसी तरह नाकाम होती रहेंगी।

मेरे ख़्याल में इन इंटरनेशनल फ़ौरम्स की सबसे बड़ी ज़िम्मेदारी यह है कि वह यूनिटी, अक़ीदों और अख़्लाक़ी सिस्टम्स के बीच पाए जाने वाले अटूट बंधन को साफ़ करें। क्या हम तौहीद का अक़ीदा रखते हुए, एक ख़ुदा पर ईमान रखते हुए और ख़ुदा को सबसे बड़ी क़ुदरत वाला मानते हुए जब अमल के मैदान में आएंगे तो क्या इसका उल्टा करेंगे और ख़ुदा के बन्दों के हालात से बेख़बर रहेंगे? क्या हम तौहीद का अक़ीदे पर अमल करते हुए गुटबाज़ी और लड़ाई-झगड़ों में शामिल हो सकते हैं?

इस्लाम के शुरू में जब तौहीद की दिलनशीं आवाज़ उन लोगों के कानों में पहुंचती थी जो ज़ुल्म और बेदीनी से तंग आ चुके थे तो जिहालत वाला तास्सुब और क़ौम परस्ती के जज़बात फ़ौरन ख़त्म हो जाते थे। इख़्तेलाफ़ और झगड़ों की सारी वजहें यहां तक कि नस्ली तास्सुब भी ख़ुदाए वहदहु ला शरीक पर ईमान और बन्दगी के नूर के सामने

फीके पड़ जाते थे,
उन लोगों ने ऐसा ज़र्बदस्त समाज तैयार कर दिया था कि खुदा ने उन्हें बहतरीन उम्मत का ख़िताब दिया। इस समाज में ऐसी यूनिटी और भाई-चारा पाया जाता था कि हबशी ग़ुलाम बिलाल को इज़्ज़तदार और बड़ी शख़्सियतों के बराबर समझा जाता था बल्कि वह ग़ुलाम अपने ईमान की बुनियाद पर उनसे आगे भी निकल गया था। यही वह लोग थे जिन्होंने ऐसी शानदार तहज़ीब और कल्चर की बुनियाद रखी कि ईरान और रूम की सलतनतें भी उसके मुक़ाबले में नहीं ठहर सकीं थीं और कुछ ही दिनों में इस तहज़ीब और कल्चर ने सारी दुनिया के दिल जीत लिए थे।

हमें खुद से यह सवाल ज़रूर पूछना चाहिए कि क़ुरआन व सुन्नत में 'उम्मत' पर बहुत ज़्यादा ज़ौर के बावजूद हम क्यों इस इतनी ख़ास चीज़ से मुंह मोड़े हुए हैं और क्यों हमारे समाज में दोबारा जाहिलियत के ज़माने की आदतें और क़ौमी मसले पैदा हो गए हैं? यहां तक कि हम इन मसलों का शिकार होकर एक दूसरे के फ़ायदों को एक दूसरे से अलग-अलग देखने लगे हैं। क्या इन ग़लत आदतों से हमारे दीनी फ़ायदों को ख़तरा नहीं है?

आर्टिकिल के शुरू में मैंने इमाम खुमैनी का यह क़ौल नक़ल किया था कि 'इख़्तेलाफ़ व गुटबाज़ीा शैतान की तरफ़ से है और यूनिटी रहमान की तरफ़ से'। हिस्ट्री में यह हक़ीक़त साबित हो चुकी है कि सच्ची यूनिटी पैदा करने की आवाज़ पर वही लोग लब्बैक कहते हैं जिन्होंने अपनी नेचुरल तौहीद के मुताबिक़ भरपूर अंदाज़ में तौहीद की टीचिंग्स पर अमल किया हो।

यूनिटी क़ायम रखना और गुटबाज़ी से बचना वाजिब है। इसकी जड़ें तौहीद के अक़ीदे से मिलती हैं। याद रहे कि फ़िर्क़ेबाज़ी और गुटबाज़ी फैलाने वाले शैतान के दोस्त होते हैं और यूनिटी का नारा लगा कर उस पर अमल करने वाले रहमान के मुख़िलस बंदे होते हैं जो उम्मत के मसलों से बेख़बर नहीं होते।

> *इमाम ख़ुमैनीः*
> *नबियों और शरीअत लाने वालों के आने का एक अहम मक़सद तौहीद के अक़ीदे और उम्मत की यूनिटी है। इसी मक़सद के तहेत समाज के अहम मसले हल होते हैं और ताक़तवर लोगों के ज़ुल्म की रोकथाम होती है क्योंकि यही ज़ुल्म इंसानों में बुराईयां फैलाते हैं और इन्हीं से समाज तबाह होता है।*

इस्लामी इंक़ेलाब ने यह हक़ीक़त अमली तौर पर साबित कर दी है कि फ़िर्क़ेबाज़ी और गुटबाज़ी यूनिटी के सैलाब में तिनके की तरह बह जाते हैं। हिस्ट्री इस बात को कभी भूल नहीं सकती कि ख़ुदा के एक बन्दे ने ख़ाली हाथों सिर्फ़ ख़ुदा पर भरोसा करते हुए यूनिटी की आवाज़ बुलंद की और लोग उसकी आवाज़ पर लब्बैक कहते हुए उसके बताए हुए रास्ते पर चल पड़े। सो-कॉल्ड माडर्न दुनिया ने उसके मुक़ाबले में महाज़ खोल दिया, यही नहीं बल्कि उसके सारे दुश्मनों को अल्ट्रा-माडर्न हथियारों से लैस करके उसके ख़िलाफ़ ला खड़ा किया लेकिन यूनिटी ताक़तवर होती है कि क़ौम उन सारी साज़िशों को नाकाम बनाने में कामयाब हो गई। जब इस्लामी इंक़ेलाब ने दुश्मन पर कंट्रोल कर लिया और शाही हुकूमत के सारी बुनियादे हिल गईं तो साम्राज की हिमायत वाले छोटे-छोटे सैकड़ों ग्रुप्स ने इंक़ेलाब की मुख़ालिफ़त शुरू कर दी लेकिन चूंकि क़ौम यूनाईटेड थी इसलिए उन ग्रुप्स को नाकामी का मुंह देखना पड़ा।

इमाम खुमैनी क़ुरआने करीम, हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा[स॰] और दूसरे मासूम इमामों[अ॰] के सच्चे शार्गिद थे। इसलिए उन्होंने इस दुनिया में रहने वालों की हक़ीक़ी यूनिटी की पेचीदा गुत्थियां सुलझा ली थीं। वह अपने फ़लसफ़ी नज़रियों के मुताबिक़ न सिर्फ़ 'वहदते वुजूद' के क़ायल थे बल्कि असरारे रब्बानी के लायक़ लोगों के बीच सारे मौजूदात की हक़ीक़ी यूनिटी को भी बयान करते थे।

इमाम खुमैनी आम लोगों के लिए लिखी गई अपनी किताब 'चहल हदीस' में फ़रमाते हैं, ''नबियों और शरीअत लाने वाले के आने का एक अहम मक़सद तौहीद के अक़ीदे और उम्मत की यूनिटी है। इसी मक़सद के तहेत समाज के अहम मसले हल होते हैं और ताक़तवर लोगों के ज़ुल्म की रोकथाम होती है क्योंकि यही ज़ुल्म इंसानों में बुराईयां फैलाते हैं और इन्हीं से समाज तबाह होता है। इमाम खुमैनी ने इस अज़ीम मक़सद के लिए कुछ ख़ास चीज़ों का ज़िक्र किया है जिनके बग़ैर यह मक़सद यानी यूनिटी हासिल नहीं हो सकती। इमाम खुमैनी फ़रमाते हैं कि हमें कोशिश करना चाहिए कि यह रहमत जारी रहे और हमारी कोशिश यह हो कि हमें सबसे पहले इलाही वेल्युज़ और अख़लाक़ वाला होना चाहिए, ख़ुदा की राह में ख़िदमत करना चाहिए, खुद को ख़ुदा के हुक्म के मुताबिक़ चलने वाला बनाना चाहिए, उसकी तरफ़ से होने और उसकी तरफ़ लौटने का यक़ीन रखना

चाहिए। सिर्फ़ इसी तरह हम यूनिटी तक पहुंच सकते हैं क्योंकि इख़्तेलाफ़ शैतान की तरफ़ से है और यूनिटी रहमान की तरफ़ से।

इमाम ख़ुमैनी समाज में उस यूनिटी को मुक़द्दस मानते थे जिसकी बुनियादें खोखली न हों। एक जगह आप फ़रमाते हैं कि हमें क़ुरआने मजीद की टीचिंग्स के तहेत यूनाईटेड होकर रहना चाहिए। इस बात की कोई अहमियत नहीं है कि सब लोग एक चीज़ पर मुत्तफ़िक़ हो जाएं बल्कि ख़ुदा का हुक्म यह है कि सब मिलकर ख़ुदा की रस्सी को थाम लें। नबियों की बेसत का मक़सद लोगों को अलग-अलग मामलों पर इकट्ठा करना नहीं था बल्कि वह इंसान को राहे हक़ पर इकट्ठा करना चाहते थे।

इमाम ख़ुमैनी के मुताबिक़ यूनिटी दीनी और शरई फ़र्ज़ है। आपकी नज़र में इस सिलसिले में उलमा और स्कालर्स पर सबसे ज़्यादा ज़िम्मेदारी आएद होती है। आपने इस सिलसिले में बहुत ज़ोर दिया है। इमाम ख़ुमैनी का ख़्याल था कि यूनिटी और उसकी मज़बूती के लिए क़ुरबानियां देना पड़ेंगी। इस बारे में आपने लोगों के लिए अमली तौर पर मिसाल भी क़ायम की। इमाम ख़ुमैनी जितना यूनिटी पर ज़ोर देते थे उतना ही उससे रिलेटेड चीज़ों पर भी। उनका ख़्याल था कि यूनिटी के लिए कुछ चीज़ों का होना ज़रूरी है जिनमें से लीडरशिप है। इन चीज़ों के बिना यूनिटी पैदा हो ही नहीं सकती और अगर पैदा हो भी गई तो इसका बाक़ी रह पाना मुश्किल है।

इमाम ख़ुमैनी और उनके मूवमेंट की कामयाबी इस आयत *'कम मिन फ़िअतिन...'* की मिसदाक़ है।

इमाम ख़ुमैनी ने अपने मूवमेंट के दौरान बहुत सी ऐसी जगहों पर जहां इन्सान मायूस हो जाता है हमें सिखाया है कि ज़ाहिरी और दुनियावी बुराईयां हक़ व बातिल की ज़्यादती के मुक़ाबले में फ़ैसला करने वाली नहीं होतीं बल्कि जिस चीज़ की अहमियत है वह बेदारी व ख़ुलूस और शरई ज़िम्मेदारियों पर अमल करना है।

अगर आज हम ने यह समझ लिया है कि हमारे सारे मसलों का हल हमारी यूनिटी और एक उम्मत की तरफ़ लौटने में है तो हमें किसी डर या ख़ौफ़ के बिना इस रास्ते पर चल पड़ना चाहिए और इस मुक़द्दस रास्ते पर आगे-आगे होना चाहिए। रसूले इस्लाम[स०] की उम्मत के लिए यह शर्म की बात है कि वह इतनी बड़ी तादाद में और इतने नेचुरल रिर्सोसेस की मालिक होते हुए भी गुटबंदी और इख़्तेलाफ़ की आग में जलती रहे। उधर ख़ुदा के दीन और इन्सानियत के दुश्मन उसकी इस हालत पर हंसें और वह उम्मत जो सदियों तक सच्चे इंसानी कल्चर की परचमदार थी वह तो उस कल्चर को छोड़ दे लेकिन आज की दुनिया इसे अपनाते हुए फ़ख़्र करे।

इस वक़्त ख़ुदा की किताब, क़ुरआन बिना किसी तबदीली और एक लफ़्ज़ की भी ज़्यादती या कमी के बिना हमारे बीच मौजूद है। इसके साथ-साथ रसूले अकरम[स०] की सुन्नत भी इस बारे में हमें गाइडेंस देने वाली है। सारे मुसलमानों का ख़ुदा एक, रसूल एक, किताब एक, क़िब्ला एक है और भी न जाने इनके बीच कितनी चीज़ें एक जैसी हैं जो उम्मत को जोड़ने के लिए एक मज़बूत बुनियाद बन सकते हैं। इस सिलसिले में अवाम की कोई ग़लती नहीं है, यह उलमा, स्कालर्स और ज़िम्मेदार लोगों की ज़िम्मेदारी है कि वह इस यूनिटी में अपना रोल अदा करें।

आइए! हम इस्लामी भाईचारे के कभी न टूटने वाले बंधन में बंधकर और इस परचम के तले यूनाईटेड होकर एक हो जाएं और अपनी अज़मत को दोबारा पाने की कोशिश करें। ●

ख़्वाहिशें

मौलाना अख़तर अब्बास जौन

दीने इस्लाम नें वाक़ई, नेचुरल, इंडिवीजुअल, सोशल सारी ज़रूरतों और मसलहेतों को नज़र में रखते हुए सेक्चुअल डिज़ायर्स को सही तरह पूरा करने के लिए रास्ता तय किया है जिसमें बेजा पाबन्दियों के न ख़राब असर हैं और न बिना शर्त आज़ादी के बर्बाद कर देने वाले रिज़ल्टस।

इस्लाम ने एक तरफ़ ग़ैर शादी शुदा रहने और समाज से किनारा कश होने से मना किया है और दूसरी तरफ़ सेक्चुअल डिज़ायर्स को पूरा करने के लिए शादी पर ज़ोर दिया है और जहां यह ख़्वाहिशें बेलगाम हो रही हों वहां शादी को वाजिब क़रार दिया है।

ग़ैर शादी शुदा रहना

इस्लाम ने तन्हा और ग़ैर शादी शुदा रहने को अच्छा नहीं समझा है बल्कि इसको बहुत बुरा कहा है। रसूले ख़ुदा[स०] से हदीस है, "मेरी उम्मत के बेहतरीन लोग शादी शुदा हैं और वह लोग बुरे हैं जो शादी शुदा नहीं है।" [1]

अब्दुल्लाह इब्ने मसऊद का बयान है कि एक जंग में हम लोग रसूले ख़ुदा[स०] के साथ थे। हमारी बीवियां हमारे साथ नहीं थीं, इसलिए हम लोग सख़्ती से दिन गुज़ार रहे थे। हम लोगों ने ख़ुदा के रसूल से पूछा कि क्या जाएज़ है कि हम लोग अपनी सेक्चुअल डिज़ायर्स को बिल्कुल ख़त्म कर दें? हज़रत ने ऐसा करने से मना किया। [2]

इस्लाम ने रहबानियत यानी दुनिया और उसकी नेमतों को छोड़ देने को सख़्ती से मना किया है। पैग़म्बरे इस्लाम ने फ़रमाया है, "मेरी उम्मत में रहबानियत नहीं है।" [3]

रसूल[स०] को जब यह मालूम हुआ कि एक सहाबी, उस्मान बिन मज़ऊन ने दुनिया से मुंह फ़ेर लिया है, बीवी बच्चों को छोड़ दिया है, दिन रोज़े में रात इबादत में बसर करते हैं तो रसूल[स०] बहुत नाराज़ हुए। उसी आलम में घर से बाहर आए और उस्मान बिन मज़ऊन के पास जाकर कहा कि ख़ुदा ने मुझे रहबानियत के लिए नहीं भेजा है बल्कि मुझे ऐसे दीन के साथ भेजा है जो बैलेंस्ड है और आसान है, जिसमें सख़्तियां नहीं हैं। मैं भी रोज़ा रखता हूं, नमाज़ें पढ़ता हूं और अपनी बीवियों के साथ रहता हूं। जो मेरे इस दीन को पसंद करता है उसे चाहिए कि वह मेरी सुन्नत पर चले और शादी करना मेरी सुन्नत है।" [4]

इस्लाम और शादी

इस्लामी उसूलों में शादी पर बहुत ज़ौर दिया गया है, "उसकी निशानियों में से यह भी है कि उसने तुम्हारा जोड़ा तुम्हीं में से पैदा किया है ताकि तुम्हें उससे सुकून मिल सके और फिर तुम्हारे बीच मुहब्बत और रहमत पैदा की।" [5]

क़ुरआन की नज़र में शादी कोई बुराई और गंदगी नहीं है बल्कि शादी दिल के सुकून और आपसी मुहब्बत का ज़रिया है। शादी से मिलने वाले सुकून को वह लोग ज़्यादा महसूस कर सकते हैं जिन्होंने तन्हाई की सख़्तियां बर्दाशत की हों और कुंवारी ज़िन्दगी के तलातुम को महसूस किया हो।

पैग़म्बरे इस्लाम[स०] ने फ़रमाया है, "ऐ जवानो! अगर शादी करने की सलाहियत रखते हो तो ज़रूर शादी करो क्योंकि शादी आँख को नामहरमों से ज़्यादा महफ़ूज़ रखती है और पाकदामनी व परहेज़गारी देती है।" [6]

रसूले इस्लाम ने यह भी फ़रमाया है, "जिसने शादी की उसने अपना आधा दीन बचा लिया।" [7]

अगर शादी के ज़रिए सेक्चुअल डिज़ायर्स को राम कर लिया गया तो तड़पती रूह को सुकून मिल जाएगा और ज़िन्दगी की हक़ीक़त को बेहतर तरीक़े से समझा जा सकेगा। दीन और अपनी कामयाबी की तरफ़ क़दम बढ़ सकेंगे। इस मक़सद के हासिल करने के लिए हर एक के लिए ज़रूरी है कि वह शादी की शर्तों को पूरा करे ताकि जवानी से लुत्फ़ उठाकर कामयाबियों की आग़ोश में मुहब्बत के फूल सूंघ सके ताकि जवानी की बहारों में रहमतों की बारिश हो सके और उसके किरदार को गुनाह की गंदगी मैला न कर सके और उसकी ज़िंदगी ग़मों के अंधेरों में भटकने न पाए, आँखें दलदल में न धसें, उसकी पाकीज़गी न टूटे और नेकियां बुराईयों में न बदलें।

1-बिहार, 103/221, 2-सहीह मुस्लिम, 1/130, 3-बिहार, 70/115, 4-वसाएल, 12/72, 5-सूरए रूम/21, 6-मुस्तदरकुल वसाएल, 2/531, ह० 21, 7-वसाएल, जि० 12/72

छोटी-छोटी मगर बड़ी बातें

■ दुरदाना हैदर

शादीशुदा रिलेशन और शादीशुदा ज़िंदगी को जारी रखना दरअस्ल इंसान के नेचर की एक ऐसी डिमांड है जो इंसान के वुजूद की गहराईयों में छुपी हुई है। यह खुदा की बड़ी नेमतों में से एक है।

हर नए जोड़े के लिए शादी के शुरू के दिन बहुत ही ख़ूबसूरत होते हैं और उनकी यादें कभी भुलाई नहीं जा सकतीं। उसकी सबसे बड़ी वजह यह है कि इस दौरान में दोनों तरफ़ से एक दूसरे के जज़बात व एहसासात का भरपूर ख़्याल रखा जाता है, बेवजह की पूछ-ताछ और रोक-टोक नहीं होती और छोटी-मोटी ग़लतियों को खुले दिल से माफ़ कर दिया जाता है। हर मामले में दोनों एक दूसरे की अच्छाईयों को सराहते हैं, लेकिन फिर धीरे-धीरे और चुपके-चुपके बिहेवियर में बदलाव आना शुरू हो जाता है। कभी-कभी मामूली और छोटी-छोटी बातों को बहुत बड़ा बना दिया जाता है, दोनों तरफ़ से बात को ख़त्म करने के बजाए बढ़ाना-चढ़ाना शुरू हो जाता है और झगड़े खुलकर सामने आने लगते हैं। यह झगड़े कई तरह के हो सकते हैं, जैसे कि माली मसले, माहौल, परवरिश का असर, आस-पास वालों का फ़ालतू इंटरफ़ियर वग़ैरा लेकिन इस सब में सबसे ख़ास वजह मियां-बीवी का एक दूसरे की हैसियत और हकों व ज़िम्मेदारियों की जानकारी न होना हैं। कभी-कभी यह लोग खुद अपनी ज़िम्मेदारियों को भी सही तौर पर नहीं जानते।

शादीशुदा ज़िंदगी में एक दूसरे के हकों व ज़िम्मेदारियों को समझना, कामयाब शादीशुदा ज़िंदगी के राज़ों में से अहम तरीन राज़ है लेकिन इसके साथ-साथ कुछ ऐसी 'छोटी-छोटी मगर बड़ी बातें' हैं जिनका ख़्याल रखने से न सिर्फ़ शादीशुदा ज़िंदगी के झगड़े ख़त्म हो सकते हैं बल्कि बहुत पुर सुकून, ख़ुशहाल और कामयाबी से ज़िंदगी गुज़ारी जा सकती है।

इसमें सबसे पहली चीज़ है 'मुहब्बत'। इंसानों के दिल मुहब्बत ही से ज़िंदा हैं और शादीशुदा ज़िंदगी में भी दोनों तरफ़ यानी मियां और बीवी एक दूसरे की मुहब्बत के प्यासे होते हैं। मुहब्बत में एक कशिश होती है। इस पूरी दुनिया का सिस्टम ग्रेविटेश्नल फ़ोर्स के तहत चल रहा है, छोटे से छोटे ज़र्रे से लेकर बड़े से बड़े सितारे इसी फ़ोर्स की वजह से बाक़ी हैं। अगर एक मिनट के लिए भी यह फोर्स बीच से हट जाए तो सारे युनिवर्स का सिस्टम बिगड़ जाएगा और यह युनिवर्स ख़त्म हो जाएगा। बिल्कुल इसी तरह से एक फ़ैमिली और एक घर का सिस्टम भी एक तरह की फ़ोर्स पर बाक़ी है और वह फ़ोर्स है मुहब्बत।

अगर किसी घर में मुहब्बत न हो, प्यार न हो, मेहरबानी व ख़ुलूस न हो तो वह घर तबाह और बर्बाद हो जाता है और घर बिखर कर रह जाता है। यूं कहा जा सकता है कि जिस घर में मुहब्बत व चाहत न हो वह घर क़ब्र की तरह है क्योंकि उसमें ज़िंदगी की सच्चाई नहीं होती बल्कि एक ऐसी मौत होती है जो धीरे-धीरे आती है।

यह खुदा की मेहरबानी है कि जब एक फ़ैमिली बनती है तो खुदा आपस में मुहब्बत और प्यार पैदा कर देता है जैसा कि क़ुरआन के सूरए रूम आयत 21 में है, ''खुदा की निशानियों में से यह भी है कि उसने तुम्हारा जोड़ा तुम्हीं में से पैदा किया है ताकि तुम्हें उससे सुकून हासिल हो और फिर तुम्हारे बीच मुहब्बत और रहमत पैदा की।''

यानी इस दुनिया में खुदा की निशानियों में से एक निशानी यह भी है कि जब मर्द और औरत एक फ़ैमिली को बनाते हैं तो उनके दिलों में एक दूसरे के लिए मुहब्बत भी दी जाती है। जिस तरह किसी भी इमारत की मज़बूती के लिए उसकी बुनियाद को मज़बूत करना ज़रूरी है जिसके लिए लोहे, सीमेंट और पानी वग़ैरा की ज़रूरत होती है उसी तरह शादीशुदा ज़िंदगी भी है। शादी की बुनियाद से बढ़कर कोई बुनियाद नही है जिसकी मज़बूती के लिए मुहब्बत और प्यार का सीमेंट इस्तेमाल किया जाता है। अगर किसी इमारत की बुनियाद मज़बूत न हो तो वह इमारत बहुत जल्दी कमज़ोर होकर टूट जाती है। इसी तरह एक घर में अगर मुहब्बत और चाहत न हो तो वह घर वीरानी और बर्बादी की

तस्वीर बन जाता है।

सरपरस्ती

किसी भी सिस्टम में एक हाकिम और सरपरस्त का होना ज़रूरी होता है। आर्गेनाइज़ेशन चाहे कितना ही छोटा क्यों न हो अगर वहां कोई उसकी देख भाल करने वाला न हो तो उस आर्गेनाइज़ेशन में सिस्टम बाक़ी नहीं रह सकता। घर भी न सिर्फ़ एक आर्गेनाइज़ेशन की तरह है बल्कि यह कुछ स्कॉलर्स के मुताबिक़ एक छोटी सी हुकूमत है और एक बड़ी हुकूमत उन ही छोटी-छोटी हुकूमतों से मिलकर बनती है इसलिए इस छोटी सी हुकूमत को भी देख भाल करने वाले की ज़रूरत होती है।

नेचर के क़ानून के मुताबिक़ मर्द घर का मालिक है क्योंकि घर के ख़र्चे, औरत की रोज़ी-रोटी, बच्चों के ख़र्चे मर्द के ज़िम्मे है। इसीलिए क़ुरआन घर की सरपरस्ती मर्द को देता है, "मर्द घर में औरत का सरपरस्त है।"

इसलिए फ़ितरत के मुताबिक़ घर के लोगों को चाहिए कि वह मर्द को फ़ॉलो करें। बीवी को चाहिए कि वह शौहर की फ़रमाबरदार हो, उसकी बात माने और यही बात अपने बच्चों को भी बताए कि वह बाप की बातों को सुनें और उस पर अमल करें। अगर किसी घर में ऐसा न हो तो वह बिल्कुल इस तरह है जैसे आर्गेनाइज़ेशन में कुछ लोग अपने बॉस की बात न मानें। अगर बीवी अपने शौहर की बात न माने तो वह ऐसा ही है जैसे किसी आर्गेनाइज़ेशन का असिस्टेंट मैनेजर अपने मैनेजर की बात मानने से इन्कार कर दे। ऐसी आर्गेनाइज़ेशन कभी तरक़्क़ी नही कर सकती और इसमें झगड़े-फ़साद के अलावा और कुछ नहीं होगा। अगर एक घर, एक फैमिली के लोग अपने घर में सुकून व आराम चाहते हैं तो उनको सरपरस्त की हैसियत से मर्द की बात मानना चाहिए। बच्चे अपने बाप की बात मानें, बीवी को भी शौहर की बात क़ुबूल करनी चाहिए क्योंकि यह उसका हक़ है लेकिन इसके साथ मर्द के लिए भी ज़रूरी है कि वह अपने घर के माहौल को अच्छा बनाए रखने के लिए घर वालों पर फ़ालतू रोक-टोक और सख़्ती से बचे।

इमाम जाफ़र सादिक़[अ०] फ़रमाते हैं, "ख़ुदा रहमत करे उस मर्द पर जो अपने और बीवी के बीच इस्लाह करता है क्योंकि ख़ुदा ने बीवी का इख़्तियार शौहर के हाथ में दिया है और उसे बीवी की हिफ़ाज़त करने वाला और सरपरस्त बनाया।"

एक दूसरे का एहतेराम

एक-दूसरे का एहतेराम भी शादीशुदा ज़िंदगी में बहुत अहमियत रखता है, हर इंसान का दिल चाहता है कि लोग उसकी पर्सनेलिटी का एहतेराम करें। अपनी ज़ात से मुहब्बत और दूसरों से एहतेराम की उम्मीद एक नेचरल ख़्वाहिश है।

एक मर्द पूरा दिन मेहनत करता है और उसका सिला बीवी के हाथ पर लाकर रख देता है। उसके बदले में वह इस इंतिज़ार में रहता है कि उसकी बीवी उसकी इज़्ज़त करे। वह सारा दिन घर से बाहर अलग-अलग लोगों के साथ मिलता है। हो सकता है कि कभी किसी ने उसकी बेइज़्ज़ती कर दी हो या उसकी पर्सनेलिटी का एहतेराम न किया गया हो। इसलिए सबसे ज़्यादा वह इस बात की उम्मीद रखता है कि घर में उसका एहतेराम किया जाए और उसकी पर्सनेलिटी में निखार पैदा हो सके। इसी तरह एक औरत भी अपनी पर्सनेलिटी और अपने वजूद को पसंद करती है। वह भी चाहती है कि उसे पसंद किया जाए, उसकी इज़्ज़त की जाए। औरत जब सारा दिन घर का काम काज करती है, सफ़ाई-सुथराई करती है, खाना पकाती है और घर को अपने शौहर और बच्चों के लिए पूरे आराम व सुकून की जगह बनाती है तो उसके मुक़ाबले में वह भी शुक्रिया चाहती है। खास तौर पर दूसरों से ज़्यादा वह अपने शौहर से इस बात की उम्मीद रखती है कि उसका शौहर उसे पसंद करे और उसका एहतेराम करे क्योंकि वह उसे अपनी ज़िंदगी का पार्टनर और सच्चा साथी मानती है। इसलिए मियां-बीवी को चाहिए कि अपने एहसासात और नज़रयों को खुले दिल से एक दूसरे के सामने बयान करें और सामने वाले के जज़बात को समझने की कोशिश करें। अपनी मुश्किलों को बयान करना, उस पर मशवेरा करना दरअसल लाइफ पार्टनर का एहतेराम करना और उसे अहमियत देने के जैसा है। इस तरीक़े से वह दोनों इस बात का इज़हार करते हैं कि वह एक-दूसरे के मशवरे, राय और मदद के ज़रूरतमन्द हैं और यही तरीक़ा एहसासात के इज़हार का और आपसी ताअल्लुक़ात की मज़बूती की वजह बनता है।

याद रखें! शादीशुदा रिश्ता वन वे ट्रेफ़िक नही होता इसलिए इसको अच्छा बनाने के लिए एक आदमी की कोशिश से कामयाबी हासिल नही होती बल्कि शादीशुदा ताअल्लुक़ात उस वक़्त अच्छे हो सकते हैं जब मियां और बीवी दोनों मिलकर उसे अच्छा बनाने की कोशिश करते हैं।

यह बात हमेशा ज़ेहन में रखें कि घर अमन व सुकून की जगह होती है और अमन व सुकून की जगह को ज़रा भी ख़तरे में न पड़ने दें।

रसूले अकरम[स०] फ़रमाते हैं, "दुनिया आख़िरत के मुक़ाबले में इससे ज़्यादा कुछ नहीं है कि तुम में से कोई अपनी शहादत वाली उंगली समंदर में डुबो दे, फिर उस पानी को देखे जो उसकी उंगलियों में लगा हुआ है।"

Interview

हज़रत फ़ातिमा स० ज़हरा

इस बार 'मरयम' में अपने रीडर्स की डिमांड पर हम कई नए कॉलम शुरू कर रहे हैं। उन्हीं में से एक इंटरव्यु भी है। हम हर महीने किसी नए और अछूते सब्जेक्ट पर एक एक्सपर्ट से इंटरव्यु आपकी ख़िदमत में पेश करेंगे...इस बार जनाबे फ़ातिमा ज़हरा अ० की विलादत के ख़ुशियों भरे मौक़े पर हमने आपकी शख़्सियत के बारे में हुज्जतुल इस्लाम जनाब मौलाना अख़तर अब्बास जौन से बात की है जो आपके हाथों में है..

मरयमः मौलाना! सबसे पहले तो हम आपकी ख़िदमत में सलाम और जनाबे फ़ातिमा ज़हरा स० की विलादत पर मुबारकबाद पेश करते हैं।

मौलानाः वा अलैकुम सलाम! आपको भी मुबारक हो!

मरयमः सबसे पहला सवाल जो आमतौर पर ज़हनों में आता है वह यह है कि जनाबे फ़ातिमा अ० का नाम 'फ़ातिमा' क्यों रखा गया था?

मौलानाः यूं तो रसूल स० की बेटी के बहुत सारे लक़ब हैं लेकिन आपका नाम फ़ातिमा स० है। फ़ातिमा के मायने 'रोकना, अलग करना और छोड़ना' बताए गए हैं। रिवायत में हज़रत फ़ातिमा अ० के नाम की वजहें यह बताई गई हैं:

इमाम मोहम्मद बाक़िर अ० से रिवायत है, "ख़ुदा की क़सम! अल्लाह तआला ने फ़ातिमा को उनके इल्म की वजह से दूसरों से अलग किया है।" (1)

दूसरी रिवायत में इमाम जाफ़र सादिक़ अ० ने फ़रमाया है, "फ़ातिमा नाम इसलिए रखा गया क्योंकि लोग फ़ातिमा के बुलन्द मुक़ाम को नहीं समझ सकते और उनकी मारेफ़त हासिल नहीं कर सकते।" (2)

मरयमः जनाबे फ़ातिमा स० को 'उम्मे अबीहा' क्यों कहा जाता है?

मौलानाः हम जानते हैं कि रसूले इस्लाम स० बचपन में ही यतीम हो गए थे। आपकी विलादत से कुछ महीने पहले आप के वालिद जनाबे अब्दुल्लाह और विलादत के कुछ साल बाद आपकी वालिदा जनाबे आमिना का इंतिक़ाल हो गया था जिसकी वजह से बचपन ही में दुनिया का सबसे ज़्यादा इमोशनल रिश्ता टूट गया था और रसूले इस्लाम माँ-बाप दोनों ही की मोहब्बतों और मेहरबानियों से महरूम हो गए थे। यूं तो आप के दादा जनाबे अब्दुल मुत्तलिब, चचा जनाबे अबू तालिब और चची जनाबे फ़ातिमा बिन्ते असद ने एक लम्हे के लिए आपको माँ-बाप की कमी का एहसास नहीं होने दिया था लेकिन जनाबे फ़ातिमा ज़हरा स० ने बचपन ही से अपने बाप का इतना ख़्याल रखा और दीन की तबलीग़ में पेश आने वाली सारी सख़्तियों में अपने बचपने के बावुजूद रसूल स० को ऐसी मादिराना शफ़क़त व मोहब्बत दी कि आपकी ज़ुबान पर बार बार यह जुमला आया, "फ़ातिमा 'उम्मे अबीहा' यानी अपने बाप की माँ है।" (3)

मरयमः जनाबे फ़ातिमा सिर्फ़ औरतों के लिए ही आईडियल हैं या मर्द और औरतों, दोनों के लिए?

मौलानाः जनाब ज़हरा स० की ज़िंदगी सिर्फ़ बेटी, बीवी और माँ या सिर्फ़ औरतों के लिए ही एक आईडियल नहीं है बल्कि एक इन्सान की हैसियत से सारे इन्सानों के लिए आईडियल है। आपके घर मे ज़िंदगी के सामान तो बहुत कम थे लेकिन आपकी ज़िंदगी में किरदार की बुलंदियां इतनी ज़्यादा हैं कि आप हर दौर में सारे इन्सानों के लिए बहतरीन आईडियल हैं। आईडियल से मुराद यह है कि हज़रत ज़हरा अ० की ज़िंदगी में जो फ़ज़ीलतें और इन्सानी कमाल पाए जाते थे जैसे इल्म, हिक्मत, मारेफ़त, तक़वा, पाकीज़गी, तहारत, सब्र, शुजाअत, रहमदिली, सादगी, सच्चाई, अमानतदारी, ज़िम्मेदारी की अदाएगी वग़ैरा... इन फ़ज़ीलतों को कोई भी औरत या मर्द जितना चाहे अपना सकता है।

मरयमः जनाबे फ़ातिमा की ज़िंदगी से औरतों को एक कामयाब बीवी और एक कामयाब माँ बनने के लिए क्या सबक़ मिलता है?

मौलानाः कामयाब बीवी और कामयाब माँ के अलावा एक अज़ीम बेटी जिसे दुनिया का सबसे बड़ा इन्सान यानी रसूल स० अपनी माँ का लक़ब दे।

इसमें कोई शक नहीं कि हर इन्सान को अच्छी ज़िंदगी जीने के लिए एक अच्छे आईडियल की ज़रूरत होती है और हज़रत ज़हरा अ० की ज़िंदगी एक बेटी, एक बीवी और एक माँ की हैसीयत से बहतरीन आईडियल है। सिर्फ़ जनाबे फ़ातिमा ही हैं जो पूरी हिस्ट्री में दुनिया की बहतरीन बेटी, बहतरीन बीवी और बहतरीन माँ हैं।

मरयमः क्या जनाबे फ़ातिमा स० सिर्फ़ घरेलू औरत थीं या समाजी, मज़हबी, सियासी और

दुनियावी कामों में भी हिस्सा लेती थीं?

मौलानाः जनाबे फ़ातिमा[स॰] मुकम्मल ख़ुदाई दीन और एक परफ़ैक्ट लाइफ़-सिस्टम के तहेत ज़िंदगी गुज़ार रहीं थीं। इसलिए समाजी, सियासी, इबादती, इल्मी और मारेफ़ती यानी दीन के हर मैदान में हिस्सा लेती थीं। यही वजह है कि जंगे ओहद में आप रसूल के साथ गईं और रसूल के ज़ख़्मों की मरहम पट्टी की, आपके छोटे-छोटे बच्चे थे फिर भी आपने हज का लम्बा सफ़र किया। ख़ास कर आपकी आख़िरी तहरीक एक ज़बरदस्त दीनी तहरीक होने के साथ-साथ एक अज़ीम समाजी-सियासी तहरीक भी थी। लेकिन ख़्याल रहे कि सियासत के उन सही मायनों में जो इस्लाम ने बताए हैं, न कि वह गंदी सियासत जो ख़ुदग़र्ज़ और धोकेबाज़ सियासतदान करते हैं।

मरयमः आप क़यामत में शफ़ाअत करेंगी, क्या आपकी शफ़ाअत सारे गुनाहगारों को मिलेगी या इसकी कुछ ख़ास शर्तें हैं?

मौलानाः शफ़ाअत के बारे में हमारे ज़हनों में बहुत अजीबो-ग़रीब पिक्चर पाई जाती है जिसके बारे में तफ़सील से बात करने की ज़रूरत है जिसका यहां मौका नहीं है। मुख़्तसर यह कि अरबी में 'शफ़ा' एक से दो होने को कहते हैं। ज़ाहिर है कि शफ़ाअत के मायने यह नहीं है कि गुनहगार को माफ़ करा दिया जाएगा वरना नबियों के भेजने, किताबों के नाज़िल करने और शरीअत व हलाल-हराम के बयान करने का क्या फ़ाएदा रह जाता है। शफ़ाअत की बहुत सी शर्तें हैं। पहली शर्त यह है कि अगर इन्सान ने इस दुनिया में रसूल व अहलेबैत[अ॰] के साथ ज़िंदगी गुज़ारी हो, उसकी ज़िंदगी में अहले बैत[अ॰] की ज़िंदगी की झलक पाई जाती हो और उनके साथ रहा हो तो आख़िरत में भी वह उसे अकेला नहीं छोड़ेंगे बल्कि उसके साथ उसके शफ़ी यानी उसके साथ हो जाएंगे।

मरयमः आज जबकि दुश्मन ताक़तें इस्लाम को यह कहकर बदनाम कर रही हैं कि इस्लाम में औरतों की इज़्ज़त नहीं है और औरतें घर में क़ैद होकर रह जाती हैं, ऐसे में जनाबे फ़ातिमा की ज़िंदगी से उनकी बातों को शह मिलती है या काट होती है?

मौलानाः इस तरह की बातें करने वाले इस्लाम को अच्छी तरह से पहचानते नहीं हैं या इस्लाम व इन्सानियत के दुश्मन हैं और सही पूछें तो वह औरतों के भी दुश्मन हैं जो औरतों के हक़ों के नाम पर मां-बहनों को सड़कों, बाज़ारों, काउंटर्स या टी. वी. स्क्रीन पर लाकर सजा देना चाहते हैं ताकि उनकी हवस भरी निगाहों और दिलों को तस्कीन मिल सके और उनका बिज़िनेस और फ़ाइनेंस भी फलत-फूलता रहे।

हक़ीक़त यह है कि इस्लाम ने औरतों को वह इज़्ज़त दी है जो उनका हक़ है जिसका बहतरीन नमूना ख़ुद हज़रत फ़ातिमा[अ॰] हैं। रसूल[स॰] ने हज़रत फ़ातिमा[अ॰] की इतनी इज़्ज़त की है कि अपनी लड़कियों को ज़िदा दफ़न करने वाले जाहिल अरब इसका तसव्वुर भी नहीं कर सकते थे। इस्लाम औरतों को क़ैद नहीं करना चाहता बल्कि महफ़ूज़ करना चाहता है और उन्हें इज़्ज़त व विक़ार देना चाहता है। इसलिए हिजाब पाबंदी नहीं है बल्कि हिजाब औरत का हक़ है ताकि हिजाब के ज़रिए वह अपनी इज़्ज़त और पाकीज़गी को बचा सकें

ताकि उनकी तरफ़ हवस भरी निगाहें न उठ सकें।

मरयमः आपको जनाबे फ़ातिमा[स॰] की ज़िंदगी का सबसे ख़ूबसूरत एंग्लि कौन सा लगता है?

मौलानाः जनाबे फ़ातिमा[स॰] की ज़िंदगी के जिस एंग्लि पर निगाह डालिए वही सबसे ज़्यादा ख़ूबसूरत लगता है। इसका मतलब यह है कि आपकी ज़िंदगी के किसी भी एंग्लि में कोई कमी नहीं है। इसीलिए हर एंग्लि अपनी जगह सबसे ख़ूबसूरत लगता है।

मरयमः जनाबे फ़ातिमा[स॰] की ज़िंदगी का सबसे ख़ास वाक़ेआ आप किसे मानते हैं?

मौलानाः मेरे ख़्याल से आपकी ज़िंदगी का सबसे ख़ास वाक़ेआ आपकी ज़िंदगी के आख़िरी हिस्से का है जब रसूल की वफ़ात के बाद आपने सही दीन और सही शरीअत की हिफ़ाज़त के लिए तहरीक चलाई थी और दीन की रूह, विलायत को अगली नस्लों तक पहुचाया था। आज अगर इमामत बाक़ी है तो इसमें सबसे बड़ा रोल जनाबे फ़ातिमा[स॰] का है। हालांकि इस राह में आपको बड़ी क़ुरबानियां देना पड़ीं, इमाम अली और अपने छोटे बच्चों को अकेला छोड़ना पड़ा, पेट में बच्चा शहीद हो गया लेकिन आपने पूरी मज़बूती और सब्र के साथ अपनी ज़िंदगी के आख़िरी वक़्त तक अपनी कोशिशों को जारी रखा। अगर आपकी यह सारी कोशिशें न होतीं तो आज शायद इमामत मौजूदा सूरत में हमारे सामने न होती।

मरयमः मरयम मैगज़ीन के ज़रिए जनाबे फ़ातिमा[अ॰] की ज़िंदगी से क़ौम की औरतों को आप क्या पैग़ाम देना चाहेंगे?

मौलानाः जनाबे ज़हरा[अ॰] ने अपनी छोटी सी ज़िंदगी में ही सही लेकिन सारे इन्सानों और ख़ास कर औरतों को बहुत सारे पैग़ाम दिए हैं। हम यहां सिर्फ़ यह कहना चाहेंगे कि यह कहना कि उस ज़माने की ज़िंदगी और आज की माडर्न ज़िंदगी में बहुत फ़र्क़ है इसलिए उस ज़माने की ज़िदगी को आज के ज़माने में नहीं अपनाया जा सकता, यह कहना हज़रत ज़हरा[अ॰] और सारे नबियों व इमामों पर सबसे बड़ा ज़ुल्म है क्योंकि उन सबको भेजा ही इसलिए गया था ताकि क़यामत तक के इन्सानों के लिए आइडियल बन सकें।

यह सही है कि ज़िंदगी के सामान और ज़िंदगी के तरीक़े बदलते रहते हैं लेकिन ज़िंदगी की बुनियादें कभी नहीं बदलतीं। पाकीज़गी, तहारत, सच्चाई, अमानतदारी, मारेफ़त, बंदगी... यह ज़िंदगी के वह तरीक़े और ढंग हैं जिनकी आज भी इन्सानियत को हर चीज़ से ज़्यादा ज़रूरत है।

मरयमः इंटरव्यु के आख़िर में आप कुछ और कहना चाहेंगे?

मौलानाः इंटरव्यु बहुत लम्बा हो गया है। इसलिए हम सिर्फ़ ख़ुदा से दुआ करेंगे कि वह हमें जनाबे फ़ातिमा की ज़िंदगी के उसूलों और तरीक़ों को अच्छी तरह समझने और उन्हें अपनी ज़िंदगियों में अपनाने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए!

1-कश्फ़ुल ग़ुम्मा, 1/463, 2-बिहारुल अनवार, 43/19, 3-असदुल ग़ाबा,5/510, इस्तीआब,4/380

Recipe

एग फ़ाईड राईस

- चावल.....आधा किलो
  (बग़ैर नमक वाले पानी में उबालें)
- अंडे.....पाँच अदद (फेंट लें)
- हरी प्याज़.....आधा किलो
- हरी मिर्च.....कुछ पीस
- गाजर.....आधा कप
- मटर.....आधा कप
- नमक.....एक चाय का चम्मच
- चाइनीज़ नमक.....दो चाय के चम्मच
- सफ़ेद मिर्च पाउडर.....दो चाय के चम्मच
- सोया सॉस.....दो खाने के चम्मच
- तेल.....आधा कप

तरकीबः

गाजर, मटर, हरी प्याज़ को चौकोर काट लें, सब्ज़ियों को हलका सा उबाल लें और ठण्डे पानी में डाल दें। थोड़ी देर के बाद सब्ज़ियों को पानी से निकाल कर अलग रख लें।

तेल गर्म करके अंडे फ्राइ करें। फिर तले हुए अंडों को अलग करके आधी सब्ज़ियाँ उसमें डाल दें। उसके बाद उसमें बाक़ी सब्ज़ियाँ और चावल भी डाल दें और अच्छी तरह मिक्स कर लें।

आख़िर में चाइनीज़ नमक, नमक, सोया सॉस, सफ़ेद मिर्च पाउडर, हरी मिर्चें डाल कर मिक्स करके दम पर रख दें।

मज़ेदार एग-फ़्राइड राइस केचप के साथ सर्व करें।

बच्चों को मारना-पीटना

बच्चों को मारने-पीटने के ग़लत असर क्या-क्या हैं?

सिर्फ़ कुछ ही ऐसी जगहें हैं जहां पर बच्चों को मारना चाहिए वरना ज़्यादातर जगहों पर बच्चों की परवरिश के लिए यह तरीक़ा सही नहीं है क्योंकि इन्सान नर्मी और नसीहत से सुधरता है और जानवर मारपीट के ज़रिए बात मानते हैं। हज़रत अली[अ०] फ़रमाते हैं, "अक़्लमंद इंसान नसीहत के ज़रिए सीखता है और जानवर मारपीट के बग़ैर नहीं समझता।" (1)

मारने के बुरे नतीजे

1- बेइज़्ज़ती फ़ील करना

मार खाने वाला बच्चा या नौजवान अपनी बेइज़्ज़ती फ़ील करता है और जिसकी बेइज़्ज़ती की जाए उससे किसी तरह की अच्छाई की उम्मीद नहीं की जा सकती है। इस बारे में इमाम अली[अ०] फ़रमाते हैं, "जिसकी बेइज़्ज़ती की जाए उससे किसी अच्छाई की उम्मीद नहीं की जा सकती।" (2)

"जिसकी बेइज़्ज़ती की जाए उसकी बुराई से नहीं बचा जा सकता।" (3)

यानी उससे हर तरह की बुराई की उम्मीद की जा सकती है।

2- साइकॉलोजिकली कमज़ोर हो जाना

मार-पीट से आपका बच्चा ज़ेहनी तौर पर कमज़ोर हो जाएगा और उसका कैरेक्टर इस तरह का हो जाएगा कि हर आदमी उससे ताक़त के बलबूते पर बात करेगा और वह उनकी बातें मानता रहेगा।

3- मारने वाले से नफ़रत

बच्चा मारने वाले से दिल ही दिल में नफ़रत करने लगता है जो फ़्यूचर में दूसरी शक्ल में ज़ाहिर होती है जैसे कि पढ़ाई न करना, इबादत से जान चुराना, वक़्त पर कोई काम न करना और दूसरे ग़लत काम करना, इस तरह वह मारने वाले से अपना बदला ले लेता है। एक मालिक ने अपने नौकर से कहा कि मैं अब कभी तुम्हें नहीं मारूंगा। जब नौकर को यक़ीन हो गया कि उसका मालिक सच कह रहा है तो उसने मुस्कुराते हुए बहुत भोलेपन के साथ कहा कि तो मैं भी आज के बाद आपके खाने में नहीं थूकूंगा।

4- मुजरिम को जुर्म में माहिर बनाना

कुछ मां-बाप यह सोचते हैं कि उन्होंने मार-पीट कर बच्चे को सुधार दिया है लेकिन ऐसा नहीं है बल्कि उसे उसके जुर्म और ग़लती में माहिर बना दिया है और उसे मार-पीट कर यह समझा दिया है कि ग़लती करते वक़्त ज़्यादा ध्यान दे ताकि पकड़ा न जाए।

5- डरे-डरे रहना

बच्चे या नौजवानों को हमेशा डर रहता है कि कहीं वह फ़ुलां काम करने पर दूसरों के सामने मारे न जाएं।

6- अपने ऊपर भरोसा ख़त्म हो जाना

जो बच्चा हमेशा डांटा और मारा जाता है उसका अपने ऊपर से भरोसा ख़त्म हो जाता है और उसमें बड़े काम करने की हिम्मत नहीं रह जाती है।

7- ज़ुल्म करने की आदत

ऐसा बच्चा अपने से छोटों जैसे भाई, बहन, मोहल्ले के बच्चों से भी ताक़त की ज़ुबान इस्तेमाल करेगा और उन्हें मारे-पीटेगा। अगर आप इस चीज़ को अच्छी तरह समझना चाहते हैं तो देखें कि वह अपने छोटे भाई या बहन से किस तरह से पेश आता है। जिस तरह आप उससे पेश आते हैं वह भी उनके साथ उसी तरह से पेश आता है यहां तक कि जो अलफ़ाज़ आप इस्तेमाल करते हैं वह भी वही अलफ़ाज़ इस्तेमाल करता है।

किस वक़्त बच्चे की परवरिश के लिए उसे मारना-पीटना ठीक है?

कुछ ऐसी चीज़ें हैं जिन्हें इस्तेमाल करके मार-पीट से बचा जा सकता है हम उन्हें बाद में बताएंगे। अगर वह काम न आएं तो उस वक़्त थोड़ा बहुत मारा जा सकता है लेकिन इसमें बहुत सी चीज़ों पर ध्यान रखना चाहिए।

बहुत छोटे बच्चों को मारने का मतलब यह है कि जिस वक़्त वह ग़लती कर रहे हों उनके हाथ के पीछे हाथ से मारा जाए और थोड़े बड़े बच्चों को पीठ पर या हल्के हाथ से जिस्म पर मारना

चाहिए।

किसी भी क़ीमत पर मारने के लिए ज़ंजीर, बेल्ट, डंडा या इस तरह की दूसरी चीज़ें न इस्तेमाल कीजिए।

मारने के लिए पहले आपको ख़ुद को तैयार करना होगा और उसके बारे में सोचना होगा। कुछ मां-बाप बग़ैर सोचे-समझे ग़ुस्सा आने पर मारना शुरू कर देते हैं इस तरह वह अपने बच्चे को सुधारते नहीं हैं बल्कि उन्हें उनके जुर्म में और ज़्यादा माहिर और ढीट बना देते हैं। सिर्फ़ छोटे बच्चों को ही ग़लती करने पर फ़ौरन रीएक्शन दिखाना चाहिए लेकिन बड़े बच्चों को मारने से पहले डराना चाहिए। उसे इशारे में मारने के लिए समझाएं कि ऐसा काम न करो कि मैं बरदाशत न कर पाऊं, ऐसा काम न करो कि बाद में तुम्हें पछताना पड़े...।

कई बार डराने के बाद आप अपनी बात पर अमल करें और यक़ीन रखिए कि उसका बहुत असर होगा क्योंकि वह बच्चा जिसने कई साल तक देखा है कि मां-बाप ने उसकी ग़लतियों को इतना बरदाशत किया है, इतना ज़्यादा समझाया है और तरह-तरह से उसे उन कामों से रोकने की कोशिश की है अब वह आपके इस रीएक्शन को सही समझेगा और यह जानेगा कि यह उसका हक़ था। इस तरह वह ग़लती करने से बचेगा।

यह बात ज़रूर याद रखिए कि जब आप बच्चे को मार रही हैं तो उसकी वजह ज़रूर उसे बताएं। इस्लाम की निगाह में अगर बच्चे ने गुनाहे कबीरा किया हो तो उसका गार्जेन उसे सिर्फ़ इतना मार सकता है कि उसके जिस्म पर निशान न बन जाएं

वरना मां-बाप पर भी इस्लामी कोर्ट में मुक़दमा चल सकता है और मां-बाप पर भी दियत देना वाजिब हो सकता है ।

मार-पीट के ग़लत नतीजे और असर को ख़त्म करना

जिन मां-बाप ने अपने बच्चों को बहुत मारा है क्या वह उसके बुरे असर ख़त्म करने के लिए कुछ कर सकते हैं?

उसके लिए यह रास्ते अपनाए जा सकते हैं :-

1- बेइज़्ज़ती महसूस करने और अपनी निगाहों में गिरने का इलाज यह है कि आप उसकी पर्सनॉलिटी का एहतेराम कीजिए। ख़ास तौर पर लोगों के सामने उसकी अच्छी बातें बताइए और उसका एहतेराम कीजिए।

2- साइकॉलोजिकली बीमार हो जाना - इसे दूर करने के लिए उसे मौक़ा दीजिए कि वह अपनी राय और नज़रिया आपके सामने रखे चाहे उसकी राय आपके ख़िलाफ़ ही क्यों न हो।

3- अगर वह डरा हुआ है तो उसको यह यक़ीन दिलाएं कि आप अब उसे नहीं मारेंगे।

4- अगर उसमें सिर्फ़ अपनी बात मनवाने और दूसरों को मारने-पीटने की आदत पड़ गई है तो आराम से उसे समझाइए उसकी बात को ग़लत बताने के लिए दलील दीजिए।

5- बच्चे में सेल्फ़-कांफ़िडेंस बढ़ाने के लिए उसके साथ ज़्यादा से ज़्यादा घुलिए-मिलिए, उसे ज़िम्मेदारियां दीजिए, मेहरबानी और मुहब्बत से पेश आइए, उसे समझाइए कि आप उस पर भरोसा करती हैं और ज़िंदगी के कामों में उससे मशवेरा कीजिए।

इन सब के अलावा ख़ुदा से माफ़ी मांगिए। लेकिन असली सवाल यह है कि मारने-पीटने के बजाए क्या करना चाहिए। किस तरह अपने बच्चों को मारे बग़ैर ग़लती करने से रोका जाए। इसके लिए आप कुछ काम कर सकती हैं :-

1- थोड़ी देर के लिए उससे कुछ चीज़ों को छुपा देना- यह तरीक़ा छोटे बच्चों जैसे 5 साल से कम के बच्चों के लिए ठीक है। जैसे अगर बच्चा एक साल का है तो उसे ख़ाली कमरे में एक मिनट के लिए छोड़ दीजिए। लेकिन कमरे में अंधेरा न हो और वह कमरा डरावना न हो। इसी तरह तीन साल के बच्चे को तीन मिनट तक कमरे में रहने दीजिए और उसे ख़ेलने-कूदने या कोई और काम न करने दीजिए। अगर उस पर कोई असर न हो तो यह टाइम दोगुना कर दीजिए। बहुत छोटे बच्चों को एक कुर्सी पर बिठाया जा सकता है ताकि वह उस पर बैठे रहें लेकिन आप उनके पास में खड़े रहें ताकि वह ज़मीन पर न गिरें।

2- महरूम करना- यह तरीक़ा हर उम्र के बच्चों के लिए ठीक है। इसके लिए यह करना होगा कि बच्चे को कुछ देर के लिए उसे खिलौनों से मत खेलने दीजिए, टी.वी. मत देखने दीजिए, कम्प्यूटर इस्तेमाल मत करने दीजिए, पॉकिट-मनी मत दीजिए वग़ैरा...और जैसा काम उसने किया हो उसके मुताबिक़ वैसी चीज़ों से उसे दूर कर दीजिए।

3- न बोलना- बात न करना बच्चों और नौजवानों को समझाने का बहुत अच्छा तरीक़ा है लेकिन ज़्यादा देर तक ऐसा नहीं करना चाहिए और हमेशा यही तरीक़ा नहीं अपनाना चाहिए।

4- बच्चों के जज़बात उभारना- बच्चे को समझाने के लिए अलग-अलग जज़बाती और प्यार भरे जुमले इस्तेमाल करना चाहिए जैसे 'तुम्हारे इस काम से मुझे बहुत तकलीफ़ पहुंची है' 'मैं बहुत परेशान हूं'... लेकिन यह ध्यान रहे कि ऐसा ज़्यादा करने से इन बातों में असर नहीं रहेगा।

कुछ मां-बाप ख़ास कर मां बच्चे के जज़बात उभारने के लिए कहते हैं कि 'तुमने अपने इन कामों से मुझे बूढ़ा कर दिया है' या 'इस तरह तुमने मुझे जान से मार दिया है' या 'मैं मर जाऊंगी'... इससे बच्चे के एहसासात को झटका लग सकता है और उस पर ग़लत असर पड़ सकता है।

5- लेन-देन- बच्चों की बहुत सी ज़रूरतें होती हैं। अगर वह आपकी बात नहीं मानता है तो आप इंतेज़ार कीजिए कि वह अपनी ज़रूरत पूरी करने के लिए आपके पास आए। ऐसे वक़्त में उससे कहिए, मेरी भी कुछ ख़्वाहिश हैं तुम उन्हें पूरा करो ताकि मैं भी तुम्हारी बात माना करूं।

6- मारने की धमकी देना- अगर ऊपर बताई गई बातों का कोई असर न हो तो उसको इनडायरेक्टली और इशारे में मारने के लिए डराएं।

1-बिहार, 71/327, 2-गुरुल हिकम,2/712, 3-बिहार,75/300

एक आइडियल ख़्वातून

20 जमादिउस्सानी, हज़रत फ़ातिमा ज़ेहरा[स०] की विलादत जिसे इमाम ख़ुमैनी[रह०] ने इंटरनेशनल वीमेन डे का नाम दिया था, के मौक़े पर ख़ास पेशकश।

■ सै. सादिक़ रज़ा नक़वी

औरत इंसानी हिस्ट्री में हमेशा बड़ी मज़लूम, बैकव्वर्ड और ज़ुल्म का शिकार रही है।

पश्चिमी दुनिया ने 17वीं सदी के बाद साइंटिफ़िक और फ़लसफ़ी मूवमेंट्स शुरू किए जिसके नतीजे में 'ह्यूमेन राइट्स' के नाम से समाजी मैदान में एक मूवमेंट ने जन्म लिया। इस मूवमेंट का नारा था 'सब इंसानों के हक़ और आज़ादियां बराबर हैं'। यह समाजी मूवमेंट तेज़ी से उभरा और इसके नतीजे पहले इंग्लैंड, फिर अमेरिका और उसके बाद फ्रांस के रेवूलूशन की शक्ल में सामने आए, सिस्टम बदले, एग्रीमेंट्स पर दस्तख़त हुए और फिर पूरी दुनिया पर इसका असर पड़ने लगा।

उन्नीसवीं सदी में इस मूवमेंट और इस नज़रिए ने नित नए ऐंगिल बनाए जिनका रिलेशन फ़ाइनेंशल, सोशल और पॉलिटिकल मसलों से था। हालात बदले जिसकी एक शक्ल 'सोशलिज़्म' थी। उन्नीसवीं सदी के आख़िर और बीसवीं सदी के शुरू में 'ह्यूमेन राइट्स' पर बहस और अमली क़दम उठाए गए जिनमें से ज़्यादातर का ताअल्लुक़ हुकूमत के मुक़ाबले में क़ौम या मालिक या करख़नदार के मुक़ाबले में मेहनत-मज़दूरी करने वाले तबक़े से था। बीसवीं सदी में मर्दों के हक़ों के साथ-साथ औरतों के हक़ों का मसला भी उठा। 1948 में दूसरी वर्ल्ड-वार के बाद UNO बनाया गया तो उसने 'सबको बराबर के राइट्स' का खुला मंशूर आम कर दिया और यूं औरत की इंसानियत और सच्ची आज़ादी का गला घोंट दिया गया क्योंकि आज़ादी मिलने पर अब तो औरत को ख़ुश होना चाहिए था...लेकिन औरत आज भी परेशान और प्यासी है... वह आज भी यह सोच रही है कि मर्द ने तो मुझे आज़ादी दे दी है... पूरी आज़ादी... फिर दिल में दर्द क्यों है? टीस क्यों उठती है? यह प्यास कैसी है?

इस सवाल का जवाब हासिल करने के लिए हमें वीमेन राइट्स के लिए यूरोप में शुरू होने वाले इन मूवमेंट्स की हक़ीक़त को जानना होगा।

यूरोप के इन समाजी मूवमेंट्स में सत्तरहवीं सदी से अब तक दो असली चीज़ें थीं:

1-आज़ादी, 2-बराबरी, इसके अलावा और कुछ नहीं।

बात इससे आगे बढ़ी ही नहीं सकी। इंक़ेलाबी लीडर्स ने कहा, ''जब तक औरत की आज़ादी और उसके हक़ मर्द के बराबर नहीं माने जाते, आज़ादी और ह्यूमेन राइट्स पर बहस बेकार है। सारी मुश्किलें सिर्फ़ इसलिए हैं क्योंकि औरत न आज़ाद है और न उसके हक़ मर्द के बराबर हैं। सच्ची बात तो यह है कि औरत का सिर्फ़ दो हाथों और दो पैरों का इंसान होना उसके औरतपन को नज़रअंदाज़ करने की वजह बन गया था।

इस ग़फ़लत और बे-ध्यानी को एक ऐसी ग़फ़लत का नाम नहीं देना चाहिए जो जल्दबाज़ी की वजह से हुई हो बल्कि इस मूवमेंट के पीछे बहुत सी दूसरी चीज़ें भी थीं। इस मूवमेंट के पीछे सरमायादारों के फ़ायदे भी काम कर रहे थे। वह औरत को घर से बाहर लाकर माली फ़ायदे उठाने की फ़िक्र में थे। इन लोगों ने नारा लगाया था कि 'औरत के हक़, औरत की माली आज़ादी और मर्दों के हक़ बराबर हैं'। मशहूर फ़िलास्फ़र, विल डियोरेंट औरतों के लिए चलाई जाने वाली बीसवीं सदी के मूवमेंट के बारे में लिखता है, ''औरत की आज़ादी इंडस्ट्रियल इंक़ेलाब की बदौलत है। औरत सस्ती मज़दूर थी। कारख़ानेदार लोग तेज़-तर्रार और मेंहगे मर्द मज़दूरों के मुक़ाबले में उन्हें पसंद करते थे।''

मशीनी दौर की तरक़्क़ी, इंडस्ट्रियल पैदावार

में ज़रूरत से ज़्यादा इज़ाफ़ा, फिर प्रोडक्ट्स को इस्तेमाल करने और ख़रीदने वालों को अपनी तरफ़ लुभाने की ज़रूरत थी। इसके लिए साइकोलोजिकल एंगिल, जज़बाती फ़न और आर्ट यहां तक कि सेक्चुअल फ़ैक्टर्स भी ज़रूरी थे जो ख़रीदारों को न चाहते हुए भी चीज़ें ख़रीदने पर मजबूर करें। यह नई ज़रूरत मजबूर कर रही थी कि सरमायेदार, औरतों के वुजूद से फ़ायदा उठाएं। इस मोड़ पर औरत को इस्तेमाल करने का अंदाज़ कुछ और था। अब औरत जिस्मानी ताक़त, काम करने की सलाहियत, मामूली कारीगर और पैदावार में मर्द के बराबर की हैसियत से नहीं देखी जा रही थी बल्कि अब उसका ऐट्रेक्शन, मैग्नेटिक कशिश, दूसरों की सोच व ख़्यालों को कंट्रोल करने की ताक़त, इरादा बदल देने की ताक़त और इज़्ज़त-आबरू बेच डालने की उम्मीद से फ़ायदा उठाने का एंगिल सामने आया। अब पैदावार को लोगों के सर थोपने और माल बनाने की बात थी। इस कारोबार के लिए मर्द और औरत की 'आज़ादी और बराबरी' का नारा बहुत फ़ायदेमंद था।

सियासत भी इन फ़ैक्टर्स को इस्तेमाल करने में पीछे नहीं थी। यह सब औरत के वुजूद से फ़ायदा उठाने की मुहिम थी और मर्द इसे अपने मक़सदों के पूरा करने के लिए इस्तेमाल कर रहा था मगर औरत की आज़ादी और बराबरी के पर्दे में।

सूवियत रूस के आख़िरी प्रेसीडेंट मीख़ाईल गोरबा चोफ़ ने कहा था, ''हम ने अपनी औरतों को घरों से बाहर निकाला ताकि कारख़ानों की पैदावार में बढ़े। कारख़ानों की पैदावार तो बढ़ गई लेकिन हमारी घरेलू ज़िंदगी बर्बाद हो गई।''

यह उस घरेलू ज़िंदगी की तरफ़ इशारा है जिसकी हिफ़ाज़त के लिए इस्लाम ने बहुत ज़ोर दिया है। बेशक हमारी सदी ने औरतों से बदनसीबी की एक बेड़ी तो वापस ली है लेकिन उसे नई बदनसीबियों का तोहफ़ा भी दिया है। इसलिए हमारे ख़्याल में औरत को इतनी तो आज़ादी ज़रूर होना चाहिए कि वह अपनी पुरानी बदनसीबियां भी दूर करे और नई बदबख़्तियों को भी रौंद डाले।

सच्चाई तो यह है कि औरत पर कोई ज़बरदस्ती नहीं है। पुरानी बदनसीबियां इस वजह से पैदा हुईं थीं कि औरत की 'इंसानियत' को भुला दिया गया था और नई बदबख़्तियां इस वजह से उसके साथ हैं क्योंकि उसके 'औरतपन, उसकी नेचरल सोच, ज़िम्मेदारी वाली हैसियत, घर की मालकिन वाले फ़ैक्टर, घरेलू डिमांड्स और उसकी ख़ास सलाहियतों' को भुला दिया गया है।

बहरहाल औरत का औरतपन हर ज़माने और हर सदी में प्यासा रहा है। पहले वह 'जाहिलियत' की वजह से घर में जानवर जैसी इंसान थी और आज के नए समाज में वह ''वीमेन राइट्स, बराबरी, सरमायादारों के फ़ायदे और पैदावार में इज़ाफ़ा, एड-वर्ल्ड के दौर में माडल गर्ल, ग्लेमर, सेक्चुअल एट्रेक्शन, नाइट क्लबस, डांस-पार्टीज़, अय्याशी के अड्डों और कल्चरल आज़ादी'' के नाम पर जब घरेलू ज़िंदगी छोड़कर सड़क पर आई है तब भी मज़लूम और हाथों का खिलौना बनी हुई है। मर्द अपने मक़सदों को पूरा करने के लिए अलग-अलग नारे लगाकर, आज़ादियों के बहाने देकर और हक़ों की बराबरी के नाम पर उसे इस्तेमाल करता है। इसलिए कल भी और आज भी औरत अपनी रूह को सूकून देने के लिए एक 'आईडियल' की तलाश में परेशान है।

औरत की निगाहें इस दुनिया में आने से आज तक, हिस्ट्री पर टिकी हुई हैं कि कोई ऐसी औरत या घराना मिल जाए जिसे वह अपने लिए आइडियल बना सके। एक ऐसा घराना जिसमें औरत के 'औरत वाली' और 'इंसान' वाली, दोनों ख़ुसूसियतें अपनी ऊँचाईयों पर हों। ऐसा घराना जिसमें औरत अपने वुजूद के सारे एंगिल्स के साथ अपना जलवा बिखेर सके। ऐसा घराना जिसमें औरत एक माँ, एक बीवी, एक बेटी और एक बहन के रूप में अपने आख़िरी दर्जे पर हो।

दुनिया की हिस्ट्री का सदियों से सफ़र करती हुई एक आइडियल की तलाश में परेशान और थकी हुई औरत की निगाहें अचानक ज़मीन व आसमान पर टिके एक नूर पर ठहर जाती हैं। अपने कमाल की तलाश में भटकती हुई औरत दुनिया को रौशन करने वाले नूर के इस सोर्स को तलाश करते हुए मदीने की गलियों में आ निकलती है। जहां उसकी निगाहें एक कच्चे मकान पर ठहर जाती हैं। वह हैरान रह जाती है। जाहिलियत के ज़माने की अंधेरों का लम्बा सफ़र तय करती हुई यह औरत परेशान है कि यह कैसा नूर है? नए ज़माने की यह औरत जो औरत की आज़ादी के

नाम पर अपना वुजूद खो चुकी है, तहज़ीब व कल्चर के नाम पर और कल्चरल आज़ादी के बहाने जिसकी पहचान को तार-तार कर दिया गया, मर्द की हवस की भेंट चढ़ चुकी है, माल की हवस में उसका ग़लत इस्तेमाल किया जा चुका है। जिसके वुजूद और इज़्ज़त को मर्द ने सरे बाज़ार नीलाम कर दिया, जिसने आदम से लेकर आज तक हज़ारों ज़ख़्म खाए, जिसकी गवाही उसके ज़ख़्मों से रिसता हुआ ख़ून है। यह औरत भी परेशान है कि एक कच्चा घर और उससे निकलने वाला नूर!... कि जिससे सारी दुनिया जगमगा रही है! औरत यह सोच कर हंस दी कि यह भी मर्द की एक और नई चाल है, आज फिर इसी पुराने शिकारी ने नया जाल बिछाया है, अब फिर आज़ादी की बातें की जाएंगी।

ऐ औरत! ऐ औरत! बदगुमानी मत कर...यह फ़ातिमा ज़ेहरा[अ] का घर है। यह नबी[स] अहलेबैत के घर वाले हैं। इस मकान के ज़ाहिर पर मत जाओ बल्कि इसमें दाख़िल हो जाओ। इसी घर में तुम्हारे दर्दों की दवा, ज़ख़्मों का मरहम और तुम जैसी हज़ारों औरतों बल्कि सारी दुनिया की औरतों के लिए एक परफ़ैक्ट आइडियल मौजूद है। यह नबी[स] की बेटी, अली[अ] की बीवी और हसन[अ]-हुसैन[अ] और ज़ैनब[अ] व उम्मे कुलसूम की मां का घर है जो रिसालत और इस्लाम का चमकता हुआ सितारा हैं।

वह सारे अच्छे एंगिल्स, नेक सिफ़ात व आदतें और पाकीज़ा ख़्यालात जो एक औरत के बारे में सोचे जा सकते हैं, वह हज़रत फ़ातिमा ज़ेहरा[अ] में मौजूद थे। हज़रत फ़ातिमा ज़ेहरा[अ] कोई मामूली औरत नहीं थीं बल्कि वह सारी इंसानी बुलंदियों और अज़मतों वाली थीं। इंसानियत और शराफ़त की सारी क्वॉलिटीज़ आपके अंदर पाई जाती थीं। हज़रत फ़ातिमा[अ] दुनिया की सारी औरतों के लिए फ़ख़्र हैं। आप[अ] की ज़ात सारी ख़ूबियों, अच्छाईयों, नेक आदतों, नेक सिफ़ात, इंसानी अज़मतों, बुलंदियों और कमालात से भरी पड़ी थी।

बहरहाल हज़रत फ़ातिमा ज़ेहरा[अ] हर एतेबार से मुकम्मल इंसान और एक परफ़ैक्ट औरत थीं बल्कि सारे इंसानी कमालात की आख़िरी मंज़िल पर थीं।

यह सब ठीक है लेकिन हमारी औरतें फ़ातिमा ज़ेहरा[अ] की सीरत को अपने लिए आइडियल कैसे मानें?

फ़ातिमा[स] के बाबा मुहम्मद[स], दुनिया व आख़िरत के बादशाह, रहम दिल और आख़िरी नबी होने के बावजूद बड़े सादा इंसान थे जिन्होंने बचपन में भेड़-बकरियां चराईं, दौलत और हुकूमतों को पैरों तले रौंद डाला और अपने सारे

दुनिया की औरतों की सरदार यह औरत घर के सारे काम अपने हाथों से करती थीं। चक्की पीसना, रोटियां पकाना, पानी भरना और घर की सफ़ाई। जबकि आपके ज़्यादातर दिन फ़ाक़े में गुज़रते थे मगर फिर भी ज़ुबान हर वक़्त अल्लाह का शुक्र करती और दिल झुका रहता था। जहेज़ भी ऐसा कि उंगलियों पर गिना जा सके, जिसमें से अक्सर मिट्टी का बना हुआ था।

काम आख़िरी दम तक ख़ुद अपने हाथों से करते रहे।

हज़रत फ़ातिमा ज़ेहरा[अ] की मां ख़दीजा, अरब की मालदार औरत होने के बावजूद इतनी दीनदार थीं कि अपनी सारी दौलत ख़ुदा की राह में, उसके पैग़ाम को फैलाने में लगा दी। वह औरत होने के बावजूद लम्बे-चौड़े पहाड़ को पार करके अपने शौहर को खाना पहुंचातीं और उनकी तरफ़ चलने वाले पत्थरों के सामने अपने बदन को सिपर बना लेतीं थीं। वह सब्र की आख़िरी मंज़िलों पर थीं और जब उनका इंतेक़ाल हुआ तो वह ख़ाली हाथ थीं।

मुहम्मद[स] जैसे अज़ीम बाप और ख़दीजा जैसी अज़ीम मां की परवरिश ने फ़ातिमा[अ] को फ़ातिमा[अ] बना दिया।

बाप के घर में फ़ातिमा[अ] बेटी के रूप में कभी नमाज़ के बीच बाप की पीठ पर से दुश्मनों की तरफ़ से डाला जाने वाला कूड़ा-कड़कट साफ़ करती हुई नज़र आती हैं तो कभी दीन की तबलीग़ की ख़ातिर लहूलहान बाप के ज़ख़्मों की मरहम पट्टी करती हुई। अपनी ख़िदमतों और बेशुमार फ़ज़ीलतों की वजह से उनके बाबा मुहम्मद[स] उनके आने पर उनके इस्तेक़बाल के लिए ख़ड़े हो जाते, उनके हाथ और चेहरे को चूम लेते, अपनी जगह बिठाते और कहते, "मुझे फ़ातिमा[अ] से जन्नत की ख़ुशबू आती है।"

बीवी के रूप में भी फ़ातिमा[अ] एक मुकम्मल इंसान के तौर पर सामने आती हैं। दुनिया की औरतों की सरदार यह औरत घर के सारे काम अपने हाथों से करती थीं। चक्की पीसना, रोटियां पकाना, पानी भरना और घर की सफ़ाई। जबकि आपके ज़्यादातर दिन फ़ाक़े में गुज़रते थे मगर फिर भी ज़ुबान हर वक़्त अल्लाह का शुक्र करती और दिल झुका रहता था। जहेज़ भी ऐसा कि उंगलियों पर गिना जा सके, जिसमें से अक्सर मिट्टी का बना हुआ था।

मुसलमानों के ख़लीफ़ा, हज़रत अली[अ] की

इस बीवी के घर का सामान बहुत थोड़ा सा था। रात को आराम करने के लिए एक खाल थी और दिन को इसी खाल पर ऊंटों के लिए चारा डाला जाता था।

दिन भर के काम काज के बाद यही औरत जिसकी शान में 'सूरए कौसर' और 'आयते ततहीर' नाज़िल हुई, अपने माबूद की बारगाह में इतना खड़ी रहती थी कि पांव सूज जाते थे, सारी-सारी रात दुआएं करती रहती थीं। एक दिन बड़े बेटे हसन[अ] ने देखा कि मां रात के अंधेरे में दुआ मांग रही हैं। बेटे ने सोचा कि देखें, मां हमारे लिए क्या दुआ मांगती हैं? रात के शुरू के हिस्से से फ़ज्र की अज़ान तक मां ने अपने बच्चों के लिए कुछ नहीं मांगा। बेटे ने पूछा कि अम्मा! आपने हमारे लिए दुआ क्यों नहीं की? मां ने जवाब दिया कि बेटा पहले पड़ोसी, फिर घर।

चक्की पीसते-पीसते फ़ातिमा[अ] के हाथ ज़ख़्मी हो जाते थे, पानी भरते-भरते कमर झुक जाती थी मगर आपने नौकरानी न रखी। जंगों में इस्लाम की जीत और हालात के अच्छा होने के बाद रसूले इस्लाम[स] ने हबशे की फ़िज़्ज़ा नाम की औरत को फ़ातिमा ज़ेहरा[अ] की कनीज़ी में दे दिया। इस पर बराबरी और इंसाफ़ का यह आलम कि एक दिन फ़ातिमा[अ] काम करतीं और एक दिन अपनी कनीज़, फ़िज़्ज़ा से काम लेतीं।

मां के रूप में भी इस अज़ीम औरत ने दुनिया की औरतों के लिए अच्छे नमूने पेश किए। औलाद का पहला स्कूल मां की गोद होती है। उसकी पाकीज़ा गोद में उसके दोनों बेटों हसन[अ] और हुसैन[अ] और दो बेटियों ज़ैनब[अ] व कुलसूम[अ] ने परवरिश पाई।

हां! फ़ातिमा ज़ेहरा[अ] की परवरिश में परवान चढ़ कर हुसैन[अ] ने करबला की तपती रेत पर अपनी, अपने घर वालों और अपने सहाबियों की क़ुर्बानी देकर इस्लाम को यज़ीदियत से निजात और ज़िंदगी बख़्शी और इस अज़ीम और बहादुर बेटी ज़ैनब[अ] ने कूफ़ा व शाम में अपने ख़ुतबों से यज़ीदियत को बेनक़ाब कर दिया।

दुनिया की इस अज़ीम औरत के बारे में ख़ुदा के आख़िरी नबी[स] ने कई बार फ़रमाया, "बेशक! ख़ुदावंदे आलम ने तुम्हें चुना है और तुम्हें पाकीज़ा बनाया है और सारे जहानों की औरतों में से तम्हें चुना है।"

यही वजह है कि पिछली और इस सदी के अज़ीम रहनुमा इमाम ख़ुमैनी ने हज़रत फ़ातिमा ज़ेहरा[अ] के यौमे विलादत, 20 जमादिउस्सानी को 'इंटरनेशनल वीमेंस डे' का नाम दिया है।

हज़रत फ़ातिमा ज़ेहरा[स] के इस कच्चे मकान की नूरानियत के सामने दुनिया के सारे बादशाहों और महाराजाओं के महलों की रोशनियां फीकी दिखाई देती हैं। इस कच्चे मकान के रहने वालों और इसमें परवरिश पाने वाले लोगों ने इस्लाम की बड़ी-बड़ी ख़िदमतें की हैं। इसीलिए इमाम ख़ुमैनी ने कहा था, "औरत इंसानी आरज़ू और तमन्ना को पूरा करने का नाम है। यह औरत अज़ीम मर्दों और अज़ीम औरतों को परवान चढ़ाने वाली है... औरत ही के दामन से मर्द मेराज पर जाता है।"

फ़ातिमा ज़ेहरा[स] के इसी कच्चे मकान पर आकर सदियों से थकी हारी औरत का थका देने वाला सफ़र ख़त्म हुआ और मेराज, सरबुलंदी, ऊँचा किरदार और अज़मत का सफ़र शुरू हो गया क्योंकि उसे एक परफ़ैक्ट इंसान और आइडियल औरत का नमूना मिल गया क्योंकि हज़रत फ़ातिमा ज़ेहरा[स] हर लिहाज़ से एक आइडियल औरत हैं।

बाप के लिए एक आइडियल बेटी...

शौहर के लिए एक आइडियल बीवी...

बच्चों के लिए से एक आइडियल मां...

फ़ातिमा ज़ेहरा[स] एक आइडियल औरत हैं क्योंकि उनकी सीरत व किरदार ऐसा है कि सारी औरतों को उसपर अमल करना चाहिए।

इसलिए मैंने चाहा कि इस उनवान से फ़ातिमा ज़ेहरा[स] की तारीफ़ में कोई जुमला कहूं मगर मेरा क़लम चुप हो गया है।

मैंने चाहा कहूं कि 'फ़ातिमा ज़ेहरा[स] ख़दीजा की बेटी हैं।' मगर देखा कि यह फ़ातिमा[स] की पूरी तारीफ़ नहीं है।

मैंने चाहा कहूं, 'फ़ातिमा ज़ेहरा[स] मुहम्मद[स] की बेटी हैं।' देखा यह तारीफ़ भी फ़ातिमा[स] की पूरी तारीफ़ नहीं कर सकी है।

सोचा, कहूं कि 'फ़ातिमा ज़ेहरा[स] हसन[अ] और हुसैन[अ] की मां है।' मगर यह तारीफ़ भी फ़ातिमा ज़ेहरा[स] की अज़मतों को पेश नहीं कर सकी।

ठीक है...फ़ातिमा ज़ेहरा[स] यह सब कुछ हैं और यह सारे एंगिल फ़ातिमा ज़ेहरा[स] की ज़ात में पाए जाते हैं मगर यह सारे एंगिल 'सब कुछ' नहीं हैं!!

'तो फिर फ़ातिमा[अ] कौन हैं?'

"फ़ातिमा[स]... फ़ातिमा[स] है।" हां!

ज़लज़ले

साइंस और इस्लाम की नज़र में

सै. आले हाशिम रिज़वी
यूनिटी मिशन स्कूल, लखनऊ

पिछले दिनों जापान में आए ज़बरदस्त ज़लज़ले ने वहाँ के बाशिंदो के साथ साथ तमाम दुनिया के लोगों को भी ज़हनी तौर पर परेशान और फिक्रमंद कर दिया। ये ज़लज़ले तबाही और दहशत का माहौल पैदा कर देते हैं। कुदरती हादसों में ज़लज़ले से बढ़कर कोई आफत नही है। ज़लज़ला एक निहायत ख़तरनाक सिचुएशन है। जिसमे चंद सेकेंडो मे शहर के शहर बर्बाद हो जाते हैं। देखते ही देखते हज़ारो लोग मौत के हवाले हो जाते हैं। दरअसल ज़लज़लों का सबसे ख़तरनाक पहलु ये है कि साइंस आज तक कोई ऐसा तरीका ढूंढ़ नही पायी है जिससे पहले से ज़लज़ले आने की ख़बर दी जा सके। एक रिसर्च के मुताबिक अब तक लगभग आठ करोड़ से ज़्यादा इंसानों को ज़लज़लों की वजह से अपनी जान गवानी पड़ी है।

आइए देखें कि इन ज़लज़लों के आने की वजह के बारे में साइंस और इस्लाम की क्या थ्योरीज़ हैं। मार्डन साइंस ज़लज़लों के आने की वजह के सिलसिले में प्लेट्स टेक्टोनिक्स की थ्यौरी को ही कुबल करती है। इस थ्यौरी के मुताबिम ज़मीन कई जगहों पर एक दूसरे से जुड़ी है। ज़मीन के ये अलग अलग हिस्से प्लेट्स कहलाते हैं। जब ज़मीन के नीचे भीतरी हिस्से में मौजूद गर्म पिघले हुए मैग्मा यानि माद्दे में लहरें पैदा होती हैं तो ये प्लेट्स भी उसके झटके से हिल जाती हैं। मैग्मा उनको चलाने में ईंधन का काम करता है। ये प्लेट्स एक दूसरे की तरफ खिसकती हैं। प्लेट्स के खिसकने से उनके ज्वाइंट्स में दरार पैदा होती हैं जिसकी वजह से लहरें उठती हैं जो ज़लज़ले की सिचुएशन पैदा करती हैं।

बगदाद युरिवर्सिटी के जियोलोजिस्ट डा. सालेह मुहम्मद के मुताबिक ज़मीन की प्लेट्स जिनके ऊपर समुद्रं और कॉटिनेन्ट मौजूद हैं लगातार निहायत धीमी रफ़्तार से अपनी जगह बदल रही हैं। साथ ही उनकी शक्ल भी बदल रही है। उनमें से कुछ आपस में जुड़कर तो कुछ टूटकर नयी प्लेट्स बनाती रहती हैं। कभी कभी इनकी रफ़्तार बेतरतीब भी हो जाती है। नतीजे में ज़लज़ले और सूनामी आने के हालात पैदा हो जाते हैं। साइंस की इन थ्योरी को मद्देनज़र रखते हुए जब हम इस्लामिक थ्योरी की स्टडी करते हैं तो दोनो थ्योरीज़ आपस मे काफी मैच करती हैं।

शेख़ सुदूक़ की किताब इ-ल-लुश्शराये में दर्ज हदीस के मुताबिक जब इमाम जाफ़र सादिक़[अ०] से ज़लज़ले के मुताल्लिक़ सवाल किया गया तो आपने

आपके लैटर्स

सलामुन अलैकुम
एडीटर साहब!

मैं एक टीचर हूँ। एक दिन मैं अपने फ्री पीरियड में 'मरयम' पढ़ रही थी कि एक स्टूडेंट ने मैगज़ीन देखने के लिए माँगी। उसके बाद तो वह मैगज़ीन पूरी क्लास में सबने पढ़ी और सब स्टूडेंट्स को बहुत पसन्द आई और उसके सारे एडीशन्स की भी डिमांड की। एक बात और बताना चाहूँगी कि यह स्टूडेंट्स अहले सुन्नत हैं।

लड़कियों ने 'मरयम' पढ़ने के बाद से हिजाब भी शुरू कर दिया है। आप सब की मैं शुक्रगुज़ार हूँ क्योंकि इस मैगज़ीन से हमारे साथ-साथ दूसरों की भी इस्लाह हो रही है।

तहसीन फ़ातिमा
लखनऊ

सलाम अलैकुम

मैं मरयम शुरू से पढ़ रही हूँ। पढ़ने के बाद मुझे एहसास होता है कि मारफ़ते इलाही का ज़रिया मेरे पास पहुंच चुका है मुझे फ़ख के साथ उम्मीद है कि आने वाले कुछ सालों में हमारी क़ौम में काफ़ी बदलाव आएगा, मगर इस शर्त के साथ कि मरयम ज़्यादा से ज़्यादा लोगों तक पहुंचे और लोग इस की बातों पर अमल करें।

राज़िया रिज़वी, लखनऊ

MARYAM MAILBOX

maryammonthly@gmail.com

Fantastic magazine...keep it up.
Uzma, Delhi

It feels great going through this thought provoking magazine in Hindi...
Samiul Hasan, Mumbai

To be read by whole family.
Taj Bano, Nasik

My daughters don't let me read this mag. as I always see it in their hands...what to do?
Mehjabeen, Pune

Maryam ko padhne men barha maza aata hai.
Fiza, Kanpur

Plz add Shia Matrimonial Corner too.
Kaneez Zehra, Patna

Khuda aap sab ki taufeeqat men izaafa kare
Azra Fatima, allahabad

TO,
MARYAM MAGAZINE
234/22, Thwai Tola
Victoria Street, Chowk
LUCKNOW-226003-INDIA

फ़रमाया, "अल्लाह तआला ने ज़मीन की हर रग और रेशे पर एक एक मलक बिठाया है और जब खुदा ज़मीन के किसी हिस्से पर ज़लज़ला लाने का इरादा करता है तो उस मलक की तरफ़ 'वही' फ़रमा देता है कि फलां फलां रग को हरकत दे दो। रगों की इसी हरकत के नतीजे मे ज़मीन पर ज़लज़ला आ जाता है।" इमाम के इस क़ौल में साइंस की थ्योरी पूरी तरह फिट बैठती है। किसी जिस्म के अलग अलग हिस्से रगों के ज़रिए ही आपस मे जुड़े रहते हैं। ठीक इसी तरह ज़मीन के ज्वाइंट्स ज़मीन की प्लेट्स को आपस मे जोड़ते हैं। इससे साफ़ ज़ाहिर है कि इमाम उस ज़माने के लोगों की समझ को मद्देनज़र रखते हुए ज़मीन के ज्वाइंट्स और प्लेट्स को जिस्म की रगों और रेशों के ज़रिए समझा रहे थे। इमाम के मुताबिक मलक इन रगों यानि प्लेट्स को हरकत देते हैं। क़ुरआन के मुताबिक़ मलक की ख़िलक़त नूर से हुई है। नूर यानि एनर्जी, तो बात साफ है मलक के ज़रिए ज़मीन की रगों को हरकत दिए जाने की इस्लामिक थ्यौरी को साइंस ने एनर्जी के ज़रिए ज़मीन की प्लेट्स को हरकत दिया जाना बताया है। ज़ाहिर है इस्लाम और साइंस की ज़लज़ले के मुताल्लिक थ्योरी पूरी तरह मैच करती हैं।

इस्लाम के अलावा दूसरे मज़हबों मे ज़लज़ले के सिलसिले मे जो वजह बतायी गयी हैं वो साइंस की थ्योरी से बिल्कुल अलग हैं। जैसे एक ख़्याल है कि ज़मीन के अंदर निहायत बड़े और ताक़तवर जानवर पाए जाते हैं जिनकी हरकत से ज़लज़ले पैदा होते है। जापान जहाँ सबसे ज़्यादा ज़लज़ले आते हैं वहाँ की मज़हबी थ्योरी कहती है कि एक ताक़तवर छिपकली ज़मीन को अपनी पीठ पर उठाए हुए है और उसके हिलने से ज़लज़ले आते हैं। कुछ ऐसा ही अक़ीदा हमारे मुल्क मे भी पाया जाता है कि ज़मीन गाय के एक सींग पर रखी हुई है और जब गाया ज़मीन को दूसरी सींग पर ट्रांस्फ़र करती है तो ज़मीन हिलती है और ज़लज़ला आ जाता है। ज़ाहिर है ये ख़्यालात साइंस से कोसों दूर हैं। इस्लाम ने काफी पहले ज़लज़ले की वजह बता दी थी आज साइंस उस थ्योरी की तसदीक़ कर रही है।

हाथों की ख़ूबसूरती

हाथ आपकी पर्सनॉलिटी की पहचान होते हैं क्योंकि ख़ूबसूरत हाथों का असर ख़ूबसूरत चेहरे पर भी पड़ता है। ज़्यादातर औरतें अपने हाथों के बारे में ज़्यादा लापरवाह होती हैं। शादी के बाद तो वह और भी लापरवाह हो जाती हैं। औरतें अगर हाथों की ख़ूबसूरती पर ध्यान दें तो हाथों को बदनुमा होने से बचा सकती हैं।

हाथों की ख़ूबसूरती की देखभाल के लिए हाथ को हथेली, कोहनी, नाख़ून और बाजुओं में अलग-अलग बांट लें, ताकि आप अपने हाथों की देखभाल सही तरीक़े से कर सकें। हाथ के ऊपर वाले हिस्से की स्किन काफ़ी नर्म और पतली होती है जिसकी वजह से हाथों की स्किन पर झुर्रियां जल्दी पड़ जाती हैं और उनसे बढ़ती उम्र का पता चल जाता है। हथेली के निचले हिस्से की स्किन सख़्त और मोटी होती है। इस हिस्से में किसी भी तरह के चिकने सेल्स नहीं होते जिससे साबुन, डिर्टजेंट, सोडा, भारी पानी वग़ैरा के इस्तेमाल से ही हाथ का यह हिस्सा फ़ौरन फटने लगता है।

इन बातों पर ध्यान दीजिए

हफ़्ते में एक बार मेनीक्योर ज़रूर करें। कपड़े धोते, बर्तन साफ़ करते, बाग़ीचे में काम करते, पेंट वग़ैरा करते वक़्त हाथों पर रबड़ के दस्ताने पहन लें, इससे आपके हाथ बचे रहेंगे।

सब्ज़ी काटने से पहले हाथों पर मूंगफली, सरसों, ज़ैतून में से किसी एक का तेल लगा लें इससे हाथों पर निशान नहीं पड़ेंगे। हाथों को ज़्यादा देर तक गीला न रखें, इससे हाथों की स्किन सूख जाती है जिससे नाख़ूनों के आस पास की स्किन ढीली और बेजान सी होती है। हाथों की स्किन को ख़ूबसूरत और एट्रेक्टिव बनाए रखने के लिए आप अपनी ख़ूराक में विटामिन ए, बी, सी, डी, कैल्शियम, आयरन और प्रोटीन से भरपूर खाने पीने की चीज़ों को शामिल करें। हाथों की ख़ूबसूरती के लिए एक्सर्साइज़ करें, दोनों हाथों की मुट्ठियों को जल्दी-जल्दी खोलें और बंद करें। ऐसा पंद्रह-बीस बार करें, उंगलियों को फैलाएं और फिर आपस में मिलाएं। इसे भी पंद्रह-बीस बार करें। इससे हाथों की उंगलियां ज़्यादा ख़ूबसूरत और एट्रेक्टिव हो जाएंगी।

मुट्ठी बांध कर हाथ को कलाई की तरफ़ दस-पंद्रह बार घुमाएं। फिर घड़ी की उल्टी तरफ़ में घुमाएं। इससे कलाई में लचीलापन आएगा। तैरने, रस्सी कूदने वग़ैरा जैसी एक्सर्साइज़ से बाजुओं की ख़ूबसूरती बढ़ जाती है।

मेनीक्योर

हाथों की सफ़ाई के तरीक़े को मेनीक्योर कहा जाता है जिसको हफ़्ते में एक बार इस्तेमाल किया जा सकता है। मेनीक्योर करने से हाथों की स्किन नर्म, मुलायम, तंदुरुस्त, ख़ूबसूरत और सुडोल बनती है।

सामान

दो मगों में गुनगुना पानी, आधा नींबू, क्योटिकल पुशर, नेल फ़ायल, नेल कटर और स्टिक बैंड, नेल रिमूवर लोशन, रूई और तौलिया।

तरीक़ा

सबसे पहले रूई में नेल पालिश रिमूवर लगाकर नाख़ूनों पर लगी हुई पालिश को अच्छी तरह साफ़ कर लें। नाख़ूनों को नेल कटर या फ़ायल से घिस कर सही करें। अब दोनों हाथों को मगों के गुनगुने पानी में डुबो दें। थोड़ी देर बाद हाथों को बाहर निकाल कर औरेंज स्टिक से नाख़ूनों में फंसे मैल को साफ़ करें और क्योटिकल पुशर से क्योटिक को हल्के हाथों से अंदर की तरफ़ धकेलें, इससे नाखुन लंबे और ख़ूबसूरत दिखाई देंगे। नाख़ूनों की जड़ के पास वाले हिस्से को क्योटिक कहा जाता है।

अब नींबू को पानी में निचोड़ें, इस पानी में हाथों को कुछ देर तक डुबो कर रखें, नींबू के छिलके को नाख़ूनों पर रगड़ें, इससे नाख़ुन साफ़ और ख़ूबसूरत हो जाएंगे, नीबू के छिलके को हाथों की ऊपरी स्किन पर भी रगड़ें इससे यहां के डेड-सेल्स अच्छी तरह निकल जाएंगे।

हाथों को पानी से निकालने के बाद तौलिए से अच्छी तरह पोंछ कर सुखा लें, बाद में हाथों पर हैंड्स लोशन लगाएं।

हैंड्स लोशन बनाने का तरीक़ा और इस्तेमाल

गुलाब जल, ग्लीस्रीन, नींबू का रस, इन तीनों को बराबर से अच्छी तरह मिक्स कर लें। अब इसको शीशी में भर कर रख लें। यह एक अच्छा हैंड लोशन है। इससे हाथ मुलायम और स्किन ख़ूबसूरत और चमकदार बनती है। इसे कोई भी काम करने के बाद हाथों पर लगाया जा सकता है।

तफ़्सीर

إِنَّا أَعْطَيْنَاكَ الْكَوْثَرَ

सूरए कौसर

■ आयतुल्लाह मोहसिन क़राअती

सारी दुनिया की औरतों की सरदार, हज़रत फ़ातिमा ज़हरा[स०] की विलादत के मुबारक मौक़े पर यह ख़ास आर्टिकल पेश किया जा रहा है।

इस सूरे की तीन आयतें हैं जो मक्के में नाज़िल हुई थीं। यह कुरआन का सबसे छोटा सूरह है। इस सूरे का नाम इस की पहली आयत से लिया गया है कि जिसके मायने हैं 'बहुत ज़्यादा अच्छाई'।

जब रसूले इस्लाम[स०] के बेटे का इंतेकाल हुआ तो उमर बिन आस के बाप, आस बिन दाएल ने रसूल को ताना देते हुए 'अबतर' यानी जिस की नस्ल उसके मरने के बाद ख़त्म हो जाए, कहा था।

ख़ुदा ने अपने पैग़मबर[स०] का दिल बढ़ाने और इस फ़िज़ूल बात का जवाब देने के लिए यह सूरह नाज़िल किया। साथ ही दुशमनों के नाकाम होने, पैग़मबर[स०] की नस्ल और उन की शरीअत के बाक़ी रहने का एलान भी किया। रिवायत में है कि जो शख़्स अपनी वाजिब और मुस्तहब नमाज़ों में इस सूरए कौसर को पढ़ेगा वह क़यामत के दिन हौज़े कौसर से सैराब किया जाएगा।

तरजुमा

शुरू करता हूँ अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान और निहायत रहम करने वाला है। बेशक ऐ नबी! हमने आपको कौसर अता किया है। इसलिए आप अपने परवरदिगार के लिए नमाज़ पढ़ें और क़ुरबानी दें। यक़ीनी तौर पर आपका दुश्मन बेऔलाद रहेगा।

ख़ास बातें

कौसर के मायने 'बहुत ज़्यादा अच्छाई' के हैं। यह मायने अपने अंदर बहुत सी चीज़ों को समेटे हुए हैं जैसे नुबुव्वत, कुरआन, वही, शफ़ाअत, इल्म वग़ैरह लेकिन सूरे की आखिरी आयत बता रही है कि कौसर का मतलब पैग़मबर[स०] की मुबारक नस्ल है क्योंकि जलन और हसद से भरे हुए दुश्मन पैग़मबर[स०] को अबतर यानी जिसकी नस्ल ख़त्म हो जाए, कहते थे तो ख़ुदा ने अपने नबी का डिफेंस करते हुए फ़रमाया, ''बेशक आप का दुश्मन बेऔलाद रहेगा।''

अगर कौसर के मायने पैग़मबर[स०] की नस्ल न लिए जाएं तो पहली और आख़िरी आयत के बीच कोई आपसी कनेक्शन बनता हुआ नहीं दिखता।

'अबतर' लफ़्ज़ हक़ीक़त में दुम कटे जानवर के लिए इस्तेमाल होता है और टर्मिनालोजिकली उस आदमी को कहते हैं जिसकी औलाद न हो जो उसके मरने के बाद उसकी यादगार के तौर पर बाक़ी रहे। जब पैग़मबर[स०] के बेटों का बचपने ही में इंतेक़ाल हो गया तो दुश्मन कहने लगे कि उनके बाद उनकी नस्ल ख़त्म हो गई है क्योंकि जाहिलियत के दौर में बेटी बाप के नाम को ज़िंदा रखने के क़ाबिल नहीं समझी जाती थी। इसलिए 'इन्ना शानि-अ-का हुवल अबतर' इस बात की दलील है कि कौसर का मतलब 'बहुत ज़्यादा औलाद' है जो हज़रत फ़ातिमा ज़हरा[अ०] से चली है। अहले सुन्नत के मशहूर आलिमे दीन, फ़ख़्रूद्दीन राज़ी अपनी किताब 'तफ़सीरे कबीर' में लिखते हैं, ''हज़रत फ़ातिमा की नस्ल कितनी बरकत वाली है कि जिससे इमाम मोहम्मद बाक़िर[अ०], इमाम जाफ़र सादिक़[अ०] और इमाम अली रज़ा[अ०] जैसी हसतियों ने जन्म ले कर दुनिया को

अपने नूर से रौशन कर दिया और बनी उमय्या और बनी अब्बास की हुकूमतों में सादात के क़त्ले आम के बावजूद अब भी सादात पूरी दूनिया में फैले हुए हैं''।

जिस ज़माने में बेटी की पैदाइश पर बाप के चहरे का रंग काला पड़ जाता था और वह सोचने लगता था कि अब लोगों के बीच से भाग जाए या अपनी बेटी को ज़िन्दा दफ़न कर दे। यह वही ज़माना है कि क़ुरआन ने आकर बेटी को 'कौसर' का लक़ब दिया ताकि वह जाहिल समाज के कल्चर को अख़्लाकी और इंसानी वेल्युज़ से मालामाल कल्चर मे बदल दे।

रिवायत के मुताबिक जन्नत की एक नहर का नाम भी कौसर है जिससे ईमान वाले सेराब होंगे।

कौसर का मर्द या औरत होने से कोई ताल्लुक़ नहीं होता। जनाबे फ़ातिमा ज़हरा एक बेटी थीं यानी औरत थीं लेकिन 'कौसर' (बहुत ज़्यादा अच्छाई) बन गईं।

इसी तरह कौसर का लोगों के ज़्यादा होने से भी कोई ताल्लुक नहीं होता। जनाबे ज़हरा अकेली थीं लेकिन फिर भी कौसर यानी बहुत बड़ी नस्ल की मालिक बन गईं। जी हां! ख़ुदा 'कम' को 'कौसर' बना सकता है और दुश्मन को बहुत ज़्यादा होने के बावजूद मिटा सकता है।

ख़ुदा अपने क़रीबी बंदों का डिफ़ेंस ख़ुद करता है। जिस शख़्स ने पैग़मबर[स०] को अबतर कहा तो ख़ुदा ने उसकी बात का जवाब न सिर्फ़ यह कि इस आयत की शक्ल में दिया बल्कि अमली जवाब भी दिया। हज़रत फ़ातिमा[अ०] ख़ुदा का अमली और 'हुवल अबतर' का जुमला ज़बानी जवाब है।

तोहफ़ा देने वाला ख़ुदा, लेने वाले पैग़मबर[स०] और वह तोहफ़ा ख़ुद हज़रत फ़ातिमा[अ०] हैं। इसलिए ''हमने आपको कौसर अता किया है'' जैसे अलफ़ाज़ इस्तेमाल हुए है जो ख़ुदा की अज़मत और इस तोहफ़े की फ़ज़ीलत को बयान करते हैं।

रसूल[स०] को अबतर कहा तो जवाब में ख़ुदा ने कहा कि 'इन्ना शानिआका हुवल अबतर' यानी यक़ीनन आपका दुश्मन बेऔलाद रहेगा। जो नबी को अबतर कहे तो उस का जवाब यह है कि ख़ुदा अपने नबी को ऐसा कौसर अता करेगा कि जिस से सब की आंखें चकाचौंध हो जाएंगी और अक़्लें दंग रह जाएंगी। ख़ुदा ने इस सूरे में कौसर के मायने और मिसदाक़ को साफ़-साफ़ नहीं बताया और उसे पर्दे में ही रहने दिया ताकि इससे इस बात का अंदाज़ा हो सके कि इस कौसर की ख़ैरो-बरकत कितनी ज़्यादा है, यहां तक कि ख़ुद रसूल[स०] के लिए भी पूरी तरह साफ़ नहीं है।

इस सूरे में आने वाले ज़माने के बारे में दो ग़ैबी चीज़ें छुपी हुई हैं: एक रसूले इस्लाम[स०] को कौसर का मिलना, वह भी मक्के में जहां रसूल[स०] ख़ाली हाथ थे और आप की कोई औलाद नहीं थी। दूसरी ख़बर दुश्मनों का अबतर होना जो औलाद और माल व दौलत के मालिक थे।

हिस्ट्री हज़रत फ़ातिमा[स०] के कौसर होने का बहतरीन सुबूत है क्योंकि पूरी दुनिया में किसी की नस्ल इतनी नहीं बढ़ी जितनी हज़रत फ़ातिमा[अ०] की नस्ल।

कौसर है क्या

इस सूरे की आख़िरी आयत से पता चलता है कि कौसर वह चीज़ है जो अबतर के मुक़ाबले में इस्तेमाल हुई है क्योंकि अरब में ऐसे लोगों को अबतर कहा जाता है जिनकी नस्ल न हो यानी जिनका बेटा न हो और उनके मरने के बाद उनकी नस्ल ख़त्म हो जाए। हज़रत फ़ातिमा[अ०] की नस्ल से मासूम इमामों की नस्ल कौसर की बहतरीन मिसाल है।

अगर कौसर का मतलब इल्म को ले लिया जाए तो यह वही चीज़ है जिसके मांगने का हुक्म ख़ुदा अपने नबी को दे रहा है।

अगर कौसर का मतलब अच्छा अख़्लाक हो तो पैग़मबर[स०] तो बहतरीन अख़्लाक़ वाले हैं।

अगर इसके मायने इबादत हों तो रसूल[स०] सबसे ज़्यादा इबादत करते हैं।

अगर कौसर का मतलब ज़्यादा औलाद हो तो आज सबसे ज़्यादा नस्ल पैग़मबर[स०] की है।

अगर कौसर का मतलब उम्मत का ज़्यादा होना हो तो ख़ुदा के वादे के मुताबिक़ इस्लाम पूरी दुनिया में फैल जाएगा।

अगर कौसर का मतलब शफ़ाअत हो तो ख़ुदा पैग़मबर[स०] की उम्मत को इतना बख़शेगा कि वह राज़ी हो जाएंगे।

कौसर कोई दुनियावी चीज़ नहीं है बल्कि रोज़ी-रोटी, माल-दौलत, नाम, मुक़ाम और दूसरी दुनियावी रंगीनियों से बढ़कर एक दूसरी ही चीज़ है क्योंकि ख़ुदा ने क़ुरआन में दुनिया को थोड़ा और ख़त्म हो जाने वाला कहा है।

हर ज़्यादा चीज़ कौसर नहीं होती।

कौसर ख़ुदा का बहुत बड़ा तोहफ़ा है जिसे क़ुरआन के सबसे छोटे सूरे में बयान किया गया है। ख़ुदा जैसे माबूद का रसूले इस्लाम[स०] जैसी शख़्सियत के लिए 'कौसर' के अलावा और कोई तोहफ़ा हो ही नहीं सकता था।

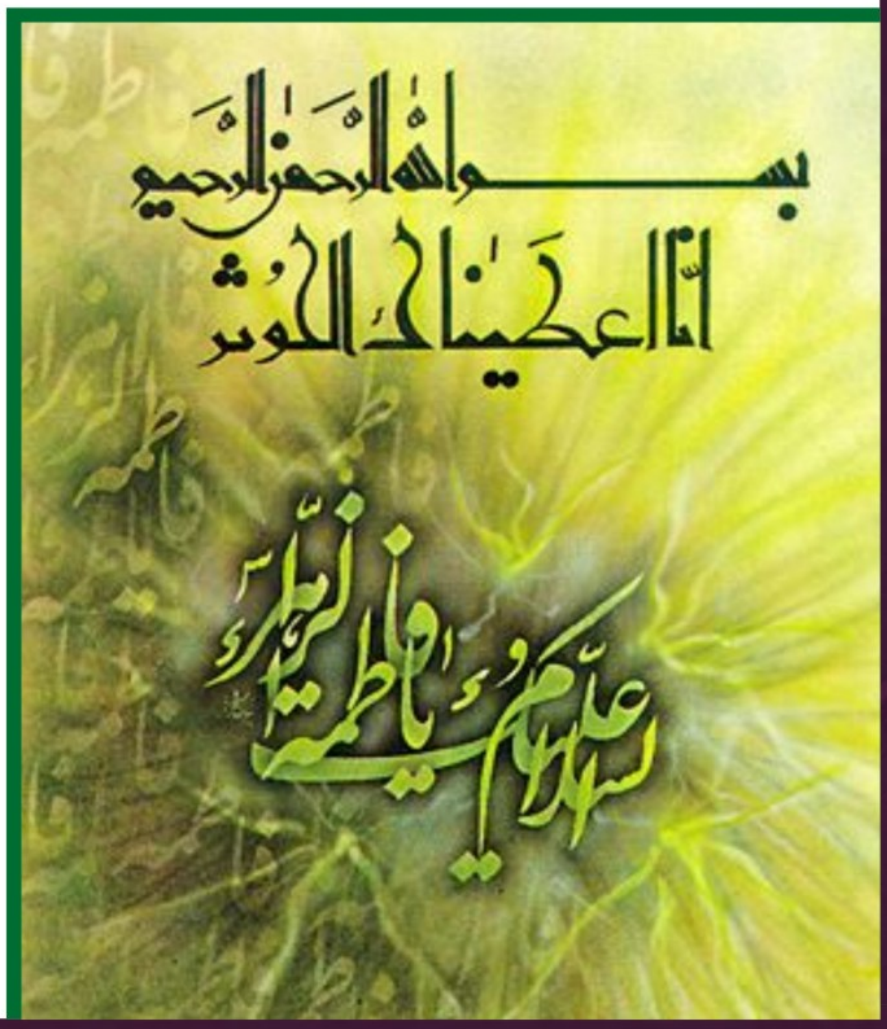

फ़तहे मक्का के मौक़े पर जब लोग गिरोह-गिरोह इस्लाम में आने लगे तो वहां ख़ुदा ने अपने नबी को सिर्फ़ तस्बीह का हुक्म दिया लेकिन 'कौसर' के बाद कहा कि अपने रब के लिए नमाज़ पढ़ो। इससे पता चलता है कि कौसर की अहमियत दुश्मनों के इस्लाम लाने से भी ज़्यदा है।

मिसाली सूरे में अनोखी अता

दी जाने वाली चीज़ बेमिसाल है क्योंकि कौसर है। यह सूरह सबसे बेमिसाल सूरह है क्योंकि क़ुरआन का सबसे छोटा सूरह है और उस के अल्फ़ाज़ भी बेमिसाल हैं क्योंकि पूरे क़ुरआन में यह अल्फ़ाज़ किसी और सूरे में इस्तेमाल नहीं हुए हैं।

ज़बान के हर ज़ख़्म और ताने का अपना एक वज़न होता है। पैग़मबर[स०] जैसी अज़ीम हस्ती की तौहीन की गई है और उन्हें मजनूं, शायर, जादूगर, काहिन और फ़ाल निकालने वाला कहा गया। इसी तरह उनके सहाबियों की भी जहां तक हो सकी तौहीन की गई है कि "इन फ़क़ीरों और बेचारों को अपने से दूर कर दो ताकि हम तुम्हारे पास आ सकें"।

सबसे ज़्यादा ध्यान देने वाली बात यह है कि किसी भी मतलब या वाक़िए के लिए पूरा सूरा नाज़िल नहीं हुआ लेकिन रसूले इस्लाम[स०] को जैसे ही 'अबतर' कहा गया तो फ़ौरन पूरा सूरा नाज़िल हो गया कि हमने आप को कौसर दिया है और आपका दुश्मन अबतर है और रहेगा। यह सब इसलिए था क्योंकि ख़ुदा बताना चाहता था कि ख़ुद रसूल[स०] और उनके सहाबियों की तौहीन तो बर्दाश्त की जा सकती है लेकिन उनके दीन और मकतब को अबतर और उनके रास्ते को फ़ानी कहा जाना किसी भी तरह बर्दाश्त नहीं किया जा सकता।

कभी-कभी जसारत व तौहीन बेहूदा और फ़ालतू बातों के ज़रिए होती है जिनसे मुकाबले के लिए ज़रूरी है कि उन बातों का जवाब ही न दिया जाए और कभी यह जसारत व तौहीन बुरे समाज और ख़राब दोस्तों की वजह से होती है कि उनका जवाब भी नहीं देना चाहिए।

कभी-कभी दीन, शरीअत और उसके रहबर की शान में जसारत की जाती है और कभी-कभी सियासी और समाज के अहम लोगों की तरफ़ से, इसलिए ऐसे लोगों को सख़्ती से जवाब देना चाहिए, जैसा कि क़ुरआन ने किया, "बेशक आप का दुश्मन बे औलाद रहेगा।"

पैग़ाम

ख़ुदा अपने वादों पर अमल करता है जैसे कि कौसर की शक्ल में अपना वादा पूरा कर दिया।

औलद और नस्ल, ख़ुदा का तोहफ़ा है।

क़ुरआन में नमाज़ या सजदए शुक्र पर ज़ोर दिया गया है।

नेमत का शुक्र फ़ौरन अदा करना चाहिए।

हमें शुक्र अदा करने का तरीक़ा भी ख़ुदा से सीखना चाहिए।

हमें चाहिए कि नेमतों और ख़ुशियों में अपने परवरदिगार को न भूलें।

जो चीज़ कौसर जैसी नेमत का शुक्राना हो सकती है, वह नमाज़ है क्योंकि नमाज़ एक मुकम्मल इबादत है जिसमें ज़रूरी है कि दिल के हुज़ूर और ध्यान के साथ इसे अदा किया जाए। साथ ही क़ुर्बत की नियत के साथ ज़बान से सूरए हम्द और एक दूसरे सूरे की तिलावत और बदन से रूकू और सजदों को बजा लाया जाए। सर और पावँ के मसेह से पता चलता है इंसान सर से पैर तक उसका बन्दा है।

पेशानी, जो इंसान के बदन का सबसे बुलंद हिस्सा है, उसको हर रोज़ 34 बार ज़मीन पर रखा जाता है ताकि इंसान में ग़ुरूर बाक़ी न रहे।

दीनी अहकाम इंसानी अक़्ल और नेचर के मुताबिक़ हैं और अक़्ल भी नेमत के शुक्राने को ज़रूरी बताती है और दीन भी यही हुक्म देता है।

चूंकि तोहफ़ा ख़ुदा की तरफ़ से है इसलिए शुक्रिया भी उसी की ज़ात का ही होना चाहिए।

क़ुरबानी करना भी ख़ुदा की नेमतों के शुक्राने का एक रास्ता है क्योंकि इसका फायदा ग़रीब लोगों को होता है।

नेमत जितनी बड़ी हो उसका शुक्रिया भी उसी के मुताबिक़ होना चाहिए।

ख़ुदा के रास्ते में ख़र्च करना उस वक़्त अहमियत रखता है जब उस के साथ ईमान और इबादत भी हो।

ख़ुदा के तोहफ़े का शुक्राना लोगों को देना और अता करना है।

वह नमाज़ अहमियत वाली है जो ख़ुलूस के साथ अदा की जाए।

ख़ुदा की राह में ख़र्च करना सिर्फ़ उसी वक़्त अहमियत रखता है जब वह सख़ावत के साथ हो।

हमें इस तरह की तौहीन से डरना नहीं चाहिए क्योंकि ख़ुदा अपने नेक बन्दों की ख़ुद हिफ़ाज़त करता है।

हमें चाहिए कि जल्दबाज़ी में फ़ैसला न करें।

दुश्मनों ने रसूल[स०] के बेटे की वफ़ात और अपने बेटों की ज़्यादा तादाद पर भरोसा करते हुए यह फैसला किया कि रसूले इस्लाम[स०] (और उनका दीन) अबतर हैं लेकिन नतीजा इसके बिल्कुल उल्टा निकला।

डायबिटीज़

90% ऐसे मरीज़ जो यह जानते हैं कि उन्हें शुगर की बीमारी है, वह आलू, चावल, चीनी, केला जैसे दूसरे मीठे फल ख़ुद ही खाना बंद कर देते हैं। अक्सर ऐसा वह डॉक्टरों की नहीं 'लोगों' की सलाह पर करते हैं। आम एक्सपर्टस का कहना है कि डायबिटीज़ के मरीज़ों के लिए कुछ भी खाना मना नहीं है लेकिन उसे इस्तेमाल करने के तरीक़े और मिक़दार पर ख़ास ध्यान देना होगा। डायबिटीज़ के मरीज़ भी न्यूट्रीशन एक्सपर्टस की सलाह से आम आदमी की तरह सारी चीज़े ले सकते हैं। एहतियात के तौर मिठाई, शहद, गुड़ और फलों का जूस नहीं लेना चाहिए क्योंकि यह हाई ग्लाइसमिक इंडेक्स फूड होते हैं। इनसे ख़ून में शुगर तेज़ी से बढ़ती है।

संजय गांधी पी. जी.आई. के प्रो. सुशील गुप्ता और न्यूट्रीशन एक्सपर्ट निरूपमा सिंह के मुताबिक, कार्बोहाइड्रेट वाली चीज़ें न लेने से बदन में इसकी कमी हो जाती है। बदन में इसकी एक तय मिक़दार होनी चाहिए। कुल खाने का 50 से 60% हिस्सा कार्बोहाइड्रेट होना चाहिए। ऐसा न होने पर शुगर कम होने लगती है। इससे मरीज़ हाइपोग्लादसीमिया की कंडीशन में आ जाता है। इससे मरीज़ को चक्कर आना, घबराहट, बेहोशी जैसी परेशानी होने के चांसेस पैदा हो जाते है। एक्सपर्ट्स के मुताबिक कुल खाने का 10 से 20% खाना प्रोटीन से भरा होना चाहिए। प्रोटीन बदन के बढ़ने में फ़ायदेमंद है। प्रोटीन दूध, दाल, गोश्त में ख़ास तौर पर पाया जाता है। फ़ैट सबसे अधिक एर्नजी बदन को देता है। एक ग्राम फैट से नौ किलो कैलोरी एर्नजी मिलती है। कुल खाने का 20% हिस्सा फ़ैट होना चाहिए। हर डायबिटीज़ मरीज़ के लिए अलग डाइट की ज़रूरत होती है। यह डिपेन्ड करता है कि मरीज़ कितना लंबा, मोटा और एक्टिव है। एक्सपर्टस के मुताबिक, 90% लोग खाते सिर्फ़ दो बार हैं लेकिन एक बार में इतना ज़्यादा खा लेते हैं कि शुगर की मिक़दार बिगड़ जाती है। खाना तीन घंटे के ब्रक पर थोड़ा-थोड़ा लेना चाहिए।

एक्र्सासाइज़

याद रखिए! चलना या वाकिंग अच्छी एक्र्सासाइज़ है। यह ख़ास तौर पर न सिर्फ़ डायबिटीज़ के मरीज़ों के लिए बल्कि हाई ब्लड प्रेशर और मोटापे के शिकार लोगों के लिए भी फ़ाएदेमंद है।

एक्र्सासाइज़ कैसे करें?

1- एक्र्सासाइज़ को वार्मअप से शुरू करें। झुकने और हाथ पांव फैलाने के ज़रिए जिस्म को वार्मअप किया जा सकता है। 2- वार्म-अप से जोड़ ढीले होते हैं और रगें व पुट्ठे एक्र्सासाइज़ के लिए तैयार हो जाते हैं। 3- उसके बाद अपनी पसंद की एक्र्सासाइज़ करें।

कब खाएं

सुबह का नाश्ता- 7:30 से 9:00 बजे तक।

मिड मार्निंग- 10:30 से 11:30 बजे के बीच।

लंच- 1 से 2 बजे के बीच।

इवनिंग टी- 5 से 6 बजे के बीच।

डिनर- 8:30 से 9:30 बजे के बीच।

क्या खाएँ

न्यूट्रीशन एक्सपर्टस निरूपमा सिंह के मुताबिक डायबिटीज़ के मरीज़ को बैलेंस्ड खाना जिसमें पाँच ज़रूरी फूड ग्रुप हों, लेना चाहिए यानी दूध और दूध से बनी चीज़ें, दालें, सभी सब्ज़ियाँ, हर तरह के फल, तेल और घी का इस्तेमाल मुनासिब मिक़दार में करना चाहिए। शुगर खाने की मिक़दार कम करने, दवा और एक्र्सासाइज़ से कंट्रोल होती है।

मिथ

डायबिटीज़ ठीक हो गई- आम तौर पर देखा गया है कि शुगर कंट्रोल रहने पर लोग सोचते हैं कि बीमारी ठीक हो गई। लोग दवा खाना छोड़ देते हैं। दवा बंद करने के 24 घंटे बाद ख़ून में शुगर लेवल बढ़ना शुरू हो जाता है। इसलिए शुगर कंट्रोल रहना, डायबिटीज़ के ठीक होने का इंडिकेशन हो, ऐसा ज़रूरी नहीं है।

ज़्यादा मिठाई खाने से डायबिटीज़ होती है- यह ख़्याल बिल्कुल ग़लत है। डायबिटीज़ इंसुलिन बनाने वाले आर्गेन के काम न करने या कम करने से होती है। इस आर्गेन के काम न करने पर इंसुलिन का बहाव नहीं हो पाता है। इसलिए खाने में मिले ग्लूकोज़ को एर्नजी में ट्रांसफ़र नहीं कर पाता।

कुछ भी खाओ, दवा से घटा लेंगे शुगर- अमूमन देखा गया है कि लोग जो मन में आता है खाते हैं और शुगर को कंट्रोल करने लिए दवा की मिक़दार या डोज़ बढ़ा देते है। इस ख़्याल को ज़हन से निकालना होगा। शुगर कम करने की दवा की भी एक लिमिट है।

आर्टिफ़िशियल शुगर डायबिटीज़ के मरीज़ों के लिए ज़्यादा ख़तरनाक है- यह बिल्कुल गलत है। एसपार्टम, सुक्रलोज के सेवन से शुगर नहीं बढ़ती। न्यूट्रीशन एक्सपर्ट्स की सलाह से इसका इस्तेमाल शुगर (चीनी) की जगह किया जा सकता है।

देशी घी और सरसों के तेल से बढ़ेगा फ़ैट- यह मानना पूरी तरह ग़लत है। जितना फ़ैट रिफाइंड में होता है उतना ही फ़ैट देशी घी और सरसों के तेल में भी होता है। इन सबका इस्तेमाल लिमिट में करना चाहिए।

शुगर फ़्री फ्रूट जूस से नहीं बढ़ती शुगर- यह मानना भी ग़लत है। एक्सपर्टस का कहना है कि शूगर फ़्री फ्रूट जूस भी उतना ही शुगर लेवल बढ़ाता है जितना आम फ्रूट जूस। ●

गर्मियों की छुट्टियां

■ अब्बास असग़र शबरेज़

कोई भी काम हो, चाहे पढ़ाई-लिखाई ही क्यों न हो, उसमें ब्रेक लेना एक नेचुरल चीज़ है और यह ब्रेक रोज़ाना, हफ़्तेवार और सलाना बुनियादों पर होना चाहिए। इसका फ़ाएदा यह होता है कि हम नए सिरे से चाक़-चौबंद होकर नया एजुकेशलन सेशन शुरू करते हैं और गर्मियों की छुट्टियों के बाद पढ़ाई की तरफ़ ध्यान बढ़ जाता है। बिना किसी ब्रेक के पूरे साल पढ़ाई-लिखाई करते रहने से मिज़ाज में चाहे पढ़ाई की तरफ़ रूजहान में कमी न भी हो लेकिन इससे ज़हन थक ज़रूर जाता है। यह न सिर्फ़ सेशन के बाक़ी हिस्से के लिए नुक़्सानदेह है बल्कि सेहत के लिए भी ख़तरनाक है। इसके साथ ही साथ यह भी अटल हक़ीक़त है कि यह छुट्टियां अगर लम्बी हो जाएं और स्टूडेंट्स यूं ही फ़ालतू घूमते रहें तो दो महीने के लम्बे ब्रेक के बाद अक्सर स्टूडेंट्स दोबारा पढ़ाई के लिए सभंल नहीं पाते और छट्टियों से आदत ख़राब हो जाती है और वह बुरी आदतों का शिकार हो जाते हैं।

इन सारी बुराईयों से बचाने के लिए पैरेंट्स भी इस तरफ़ से परेशान रहते हैं और टीचर्स भी इस बारे में फ़िक्रमंद रहते हैं। इसका आसान सा हल यह है कि न सिर्फ़ अपने बच्चों की निगरानी की जाए बल्कि उनको किसी न किसी एजुकेशनल एक्टिविटी में बिज़ी रखा जाए जो आम पढ़ाई की तरह लम्बी और थका देने वाली न हो कि बच्चे बोर हो जाएं बल्कि छोटे-छोटे कोर्सेज़ में उनको लगा दिया जाए ताकि वह न सिर्फ़ यह कि कुछ न कुछ सीखते रहें बल्कि फ़ुज़ूल क़िस्म की दोस्तियों और ग़लत हरकतों से भी बच जाएं। यही उनके सीखने की उम्र होती है और अभी जो कुछ सीख लेंगे वही उनकी बाक़ी ज़िंदगी में काम आएगा।

छुट्टियों की बहतरीन मशगूलियात और बच्चों की निगरानी के बारे में एक आर्टिकिल अरबी मैगज़ीन 'अल-तक़वा' रजब 1430 के इश्यु में छपा है जिसको आबेदा नासिरूद्दीन ने लिखा है। यह मैगज़ीन लेबनान के शहर तराबिलिस से निकलती है। हम इस आर्टिकिल का एक हिस्सा नक़ल कर रहे हैं:

''गर्मी की छुट्टियां स्टूडेंट्स के लिए शुरू हो चुकी हैं। छुट्टी के दिनों में स्टूडेंट्स अपने स्कूल-कालेजों से दूर रहते है। अगर हम उनकी भरपूर निगरानी और देख-भाल न करें तो उनकी ज़िंदगी में एक ख़तरनाक मोड़ आ जाएगा। स्टूडेंट्स की एक बहुत बड़ी तादाद अपनी छुट्टियों को सड़कों पर गुज़ार देती है जबकि कुछ दूसरे स्टूडेंट्स अपनी छुट्टियों को इंटरनेट कैफ़ों में गुज़ारते हैं जबकि एक और कुछ स्टूडेंट्स बुरे दोस्तों की सोहबत में वक़्त बर्बाद कर देते हैं जिससे यह स्टूडेंट्स बिगड़ जाते हैं। बहुत कम लोग आपको ऐसे मिलेंगे जो अपनी औलाद पर

ध्यान देते हों, उनको टोकते रहते हो, उनकी निगरानी करते रहते हुए उन्हें अपनी नज़र में रखें ताकि उनकी देख-भाल अच्छी तरह से हो सके। साथ ही उनकी समझ और अक़्ल भी फलती-फूलती रहे। छुट्टियां शुरू होने के बाद आम रूटीन और अच्छे कामों से दूरी बढ़ जाती है। हम अपनी औलाद को इन ख़तरनाक रास्तों और इन बुराईयों से कैसे बचाएं...?''

दीने इस्लाम के ज़रिए अल्लाह तआला ने हमें इज़्ज़त बख़्शी है और इस दीन को हम तक हमारे आख़िरी नबी[ﷺ] लेकर आए थे। आपने हमें इसकी तालीम दी और कितनी अच्छी तालीम दी, अदब सिखाया और ज़िंदगी गुज़ारने का पूरा सिस्टम दिया, हमें हर तरह की बुराईयों से बचाया, इस दुनिया और आख़िरत में कामयाब होने के लिए एक सही मक़सद तय किया, साथ ही दिन-रात से फ़ाएदा उठाने के उसूल भी बनाकर दिए जिस की वजह से हम बुराईयों से बच सकते हैं। इस मैदान का अहम काम यह है कि हम अपने बच्चों की परवरिश बचपन से ही इस्लामी अक़ीदे की बुनियादों पर करें। कहने का मक़सद यह है कि बच्चों पर शुरू से ही फ़ैमिली की निगरानी रहे जिस की वजह से हमारे बच्चे हर तरह की बुराईयों से बच जाएंगे।

निगरानी क्या है और यह कैसे हो?

हदीस में है, ''रसूल[ﷺ] के अपने घर वालों के साथ किए जाने वाले बर्ताव को देखो यानी उनकी तरह अपने घर वालों की परवरिश करो।''

एक दुसरी हदीस में है, ''हर नबी को सात रक़ीब और निगरानी करने वाले दिए गए हैं।''

रक़ीब के मायने हिफ़ाज़त करने वाले के होते हैं। कहा जाता है कि रक़ीबुल क़ौम, इससे मुराद चौकीदार होता है जो हिफ़ाज़त की ज़िम्मेदारी पूरी करे। इस लफ़्ज़ से हमें चौकीदारी और हिफ़ाज़त के मायने समझ में आते हैं। अगर हम अपने बच्चों की हिफ़ाज़त और चौकीदारी न करें तो फिर कौन उनकी हिफ़ाज़त करेगा? क्या हम उनको दुश्मनों का शिकार होने के लिए छोड़ दें। जबकि खुली आज़ादी के नारों और दावों की बुनियाद पर फ़ैमिली और समाजी सिस्टम को तबाह करने का प्रॉपेगंडा पूरे ज़ोर-शोर से जारी है। क्या यह सब चीज़ें हम से अपनी औलाद के लिए और निगरानी की डिमांड नहीं करती हैं?

कुछ लोगों का कहना तो यह है कि हर वह चीज़ अच्छी लगती है जिससे रोका जाए और जब भी किसी बात से मना किया जाएगा, उसी चीज़ का शौक़ बढ़ जाएगा और ऐसा लगेगा कि यह पाबंदियां बच्चों की आज़ादी पर पहरा बिठा रही हैं और यहीं से घरेलू, सोशल और इंडिवीजुअल पाबंबदयों के ख़िलाफ़ माहौल पैदा हो जाएगा।

इस नज़रिए के मानने वालों की तरह कुछ दूसरे लोगों का कहना यह है कि ज़िंदगी को अपनी डगर पर छोड़ दो ताकि हम हर नई चीज़, तरक़्क़ी और ज़माने के साथ-साथ चल सकें।

क्या हम फिर भी अपनी औलाद को इन जैसे आज़ादी के दावेदारों और दुश्मनों के लिए आज़ाद छोड़ सकते हैं?

अच्छा यही है कि हम अपने बच्चों पर नज़र रखें क्योंकि परवरिश एक मुस्तक़िल काम है जिसके लिए सिर्फ़ थोड़ा सा ध्यान दे देना ही काफ़ी नहीं है। इसी तरीक़े से बच्चों की सही और अच्छी परवरिश हो सकती है जो उनकी कामयाबी का ज़ीना होगी।

इसमें शक नहीं है कि बचपन का ज़माना यह असर और माहौल क़ुबूल करने का बहतरीन वक़्त है और यही क़ीमती टाइम है जिसमें उनके अंदर

अच्छी क्वॉलिटीज़ पैदा की जा सकती हैं।

बच्चे और जवान अल्लाह तआला की तरफ़ से ईनाम और तोहफ़ा होते हैं। हमें उनको दुनिया व आख़िरत के अज़ाब में नहीं डालना चाहिए बल्कि हमें चाहिए कि अपनी औलाद को नेक कामों की तरफ़ गाईड करें और उनको बताएं कि वह अपने वक़्त को कैसे यूज़फ़ुल बना सकते हैं जिससे वह ख़ुद भी फ़ाएदा उठाएं और समाज भी। उनके अंदर क़ूरआन की तिलावत करने, उसे पूरा या जितना हो सके, याद करने और मासूमीन की हदीसें समझने और उन पर अमल करने का शौक़ पैदा कीजिए ताकि वह उनसे सबक़ और ज़िंदगी जीना का सलीक़ा सीख सकें।

हमें अपने बच्चों को ज़िंदगी गुज़ारने के तरीक़े संजीदगी के साथ सिखाना चाहिएं। उनको आज़ादी दीजिए मगर खुली आज़ादी नहीं। सुस्ती और काहिली से दूर रखिए और इसके साथ ही साथ सही दीनी अक़ाएद पर उनको परवान चढ़ाइए। उनकी एक अच्छी पर्सनालिटी बनाइए ताकि बच्चे बड़े होकर समाज की शान बढ़ा सकें। इसके लिए ज़रूरी है कि वह अपने वक़्त को फ़ालतू कामों में बर्बाद न करें। पैरेंट्स का अपनी ज़िम्मेदारी से आंखें मूंद लेना या परवरिश का सही ढंग पर न करना यह बच्चों को तबाह कर सकता है।

हमारी औलाद एक ऐसे माहौल में रहती है जहां मीडिया हर तरफ़ छाया हुआ है और मीडिया से जहां बहुत ज़्यादा फ़ाएदे हैं वहीं इससे होने वाले नुक़सान भी कुछ कम नहीं हैं। मीडिया एक बहुत अच्छी चीज़ है अगर इसका सही से इस्तेमाल किया जाए यानी अगर हम अपने बच्चों को मीडिया के रहमो-करम पर आज़ाद छोड़ दें और उनकी कोई निगरानी न करें तो फिर सच यही है कि ख़ुद अपने ही हांथों अपने बच्चों को बर्बाद करना है, ख़ास कर वह मूवीज़, मैगज़ींनस, इंटरनेट और इस तरह की दूसरी चीज़ें जो बच्चों की सोच और अक़ीदे को ही ख़राब कर देती हैं।

इसलिए ज़रूरी है कि हम उन बच्चों को इन चीज़ों का इस्तेमाल तो ज़रूर कराएं मगर देखभाल के साथ। ज़हनी तौर पर फलने-फूलने के लिए इन चीज़ों का इस्तेमाल बहुत ज़रूरी है क्योंकि जो बच्चे मीडिया से दूर रहते हैं उन्हें अपने आस-पास की भी ख़बर नहीं होती। अपने बच्चों को ऐसे प्रोग्राम ज़रूर दिखाईए जो एजुकेशनल हों, इसके लिए डिस्कवरी, ऐनिमल प्लानेट, हिस्ट्री और नेशनल ज्योग्राफ़िक चैनल्स बहुत अच्छे हैं। यूं तो कार्टून चैनल्स के प्रोग्राम बड़ों तक को लुभा लेते हैं मगर इनमें से ज़्यादातर प्रोग्राम बच्चों पर ग़लत असर डालते हैं और उन्हें अपने कल्चर से दूर कर देते हैं। इसलिए ध्यान दें कि आपके बच्चे कार्टूनस देखकर अपनी छुट्टियां और ख़ुद को बर्बाद न करें। हां! अगर कार्टून दिखाना ही है तो अपनी निगरानी में दिखाईए।

छुट्टियों का ज़माना एक ऐसा ज़माना है जिसमें बच्चों को आप वह किताबें पढ़वा सकती हैं जिनसे बच्चों के अंदर सही इस्लामी मालूमात पैदा हो सकें क्योंकि आजकल स्कूल-कालिज वग़ैरा का कोर्स की इतना हैवी होता है कि आम दिनों में बच्चे इन किताबों को पढ़ ही नहीं पाते। इन किताबों को पढ़ने का फ़ाएदा यह होगा कि उनके अंदर सही इस्लामी सोच पैदा होगी और वह इस्लाम के बारे में भी कुछ सोच-समझ पाएंगे। बच्चों को ऐसे क़िस्से-कहानियों की किताबें लाकर दीजिए जिनसे उनके अंदर अच्छी-अच्छी बातें पैदा हों, उनकी अच्छी पर्सनालिटी डेवेलप हो और अच्छे इंसान बन सकें।

छुट्टियों का यह टाइम बच्चों को पार्ट-टाइम स्किल्स और हुनर सिखाने का भी बहतरीन मौक़ा है। आप अपने बच्चे को उसकी पसंद का कोई भी

कोर्स करा सकती हैं। आजकल ऐसे बहुत से कोर्स पाए जाते हैं जो एक-एक, दो-दो महीने के होते हैं जिन्हें बच्चा बहुत जल्दी और आसानी से सीख जाता है। कोर्स के बाद बच्चे के अंदर कांफ़िडेंस भी आएगा और यह स्किल आगे चलकर उसके काम भी आएगी।

आजकल तो अलग-अलग शहरों में ख़ासकर इन छुट्टियों के लिए इस्लामी शार्ट कोर्सेस भी शुरू हो गए हैं जिनमें बच्चों और नौजवानों को अक़ाएद, अख़लाक़, एहकाम वग़ैरा के छोटे-छोटे लेक्चर्स दिए जाते हैं और बच्चे बड़ी आसानी से इस्लाम के बारे में बहुत कुछ सीख लेते हैं। अगर आपके शहर में ऐसे कोर्सेस आग्रेनाइज़ नहीं होते हैं तो आप इस बारे में सोचिए और आग्रेनाइज़ कराईए, ख़ुद नहीं कर सकती हैं तो जो लोग ऐसा कर सकते हैं या करवा सकते हों उनसे बात कीजिए।

बच्चे हमारे पास ख़ुदा की एक अमानत हैं। अगर हम उनकी पढ़ाई के लिए सीरियस हैं तो ज़रूरी है कि हम उनके फ़ालतू टाईम और छुट्टियों में उनकी पर्सनालिटी को डेवेलप करने का कोई भी मौक़ा हाथ से न जोने दें और क्या ही अच्छा हो कि हम उनको छुट्टियों में पढ़ाई-लिखाई से बिलकुल बेपरवा न बनाएं कि चलो साल भर तो पढ़ते ही हैं अब ज़रा खेलकूद लें बल्कि उन्हें एजुकेशनल कोर्सेज़ में दाख़िल करवाएं या फिर घर में ही अलग-अलग चीज़ें सिखाने का इन्तेज़ाम करें जिस से उनका एक तरफ़ तो ज़हन खुलेगा और दूसरी तरफ़ बेकार रहने की वजह से फ़्युचर तबाह नहीं होगा। ●

सच्ची कहानियाँ

ज़माने से शिकवा

मुफ़ज़्ज़ल बिन क़ैस ग़रीबी, क़र्ज़ और ज़िंदगी के ख़र्चों की वजह से बहुत परेशान थे। एक दिन इमाम जाफ़र सादिक़[अ०] के पास गए और कहा कि इतना मुझ पर क़र्ज़ है लेकिन आमदनी का कोई ज़रिया नहीं, बहुत परेशान हो चुका हूं। मैं हर खुले हुए दरवाज़े पर गया लेकिन मेरे जाते ही वह बंद हो गया।

आख़िर में उन्होंने इमाम[अ०] से दरख़्वास्त की कि मेरे लिए दुआ कर दें ताकि ख़ुदा मेरी मुश्किल आसान कर दे। इमाम जाफ़र सादिक़[अ०] ने एक कनीज़ को हुक्म दिया कि जाओ वह अशर्फ़ियों की थैली ले आओ जो मंसूर ने मेरे लिए भेजी है। वह कनीज़ गई और फ़ौरन अशर्फ़ियों की थैली लेकर आई। इमाम[अ०] ने मुफ़ज़्ज़ल बिन क़ैस से फ़रमाया, "इस थैली में चार सौ दीनार हैं जो तुम्हारी ज़िंदगी के लिए कुछ दिन का सहारा बन सकते हैं। मुफ़ज़्ज़ल ने कहा, "मेरा यह मतलब नहीं था, मैं तो बस यह चाहता था कि आप मेरे लिए सिर्फ़ दुआ कर दें।"

इमाम ने कहा, "बहुत अच्छा! मैं दुआ करूंगा लेकिन एक बात तुम से कह रहा हूँ कि कभी भी अपनी सख़्तियां और परेशानियां लोगों को मत बताना क्योंकि इसका पहला असर तो यह होगा कि लोग जान जाएंगे और उन पर ज़ाहिर हो जाएगा कि तुम ज़मीन पर गिर चुके हो और ज़माने के सामने हार चुके हो, जिसकी वजह से तुम नज़र से गिर जाओगे और तुम्हारी शख़्सियत व इज़्ज़त लोगों की नज़रों में ख़त्म हो जाएगी।" ●

कहानी

काश मुझे पता होता!

■ शहीदा बिन्तुल हुदा सदर

राज़िया क्लीनिक के वेटिंग हॉल में बैठी हुई अपनी रिपोर्ट का इंतिज़ार कर रही थी। उसे बहुत जल्दी थी, रिपोर्ट की नहीं बल्कि उसे एक दोस्त के घर पर पार्टी में जाना था और उससे पहले ब्यूटी पार्लर में। वैसे भी यह चेकअप उसने अपनी मर्ज़ी से नहीं बल्कि घर वालों के बहुत ज़ोर देने पर कराया था। वरना उसे तो जोड़ों में दर्द के अलावा कोई और ख़ास बीमारी लग ही नहीं रही थी।

आख़िरकार उसका नम्बर आया और डॉक्टर ने उसे अपने केबिन में बुलाया। वह तेज़ी से अंदर गई। वह जल्दी से रिपोर्ट लेकर बाहर आना चाहती थी लेकिन डॉक्टर ने बहुत सीरियसली उससे पूछा, "यह आपकी रिपोर्ट है?"

वह सच बात मालूम करना चाहती थी इसलिए उसने फ़ौरन कहा, "नहीं, यह मेरी बहन की रिपोर्ट है।"

डॉक्टर ने बैठने का इशारा किया और वह कुर्सी पर बैठ गई। अगर डॉक्टर को मालूम होता कि रिपोर्ट उसकी है तो वह एहतियात से काम लेता। उसका दिल बहुत तेज़ी से धड़क रहा था और बहुत बेसब्री के साथ डॉक्टर को देख रही थी। उस वक़्त भी उसे जल्दी थी लेकिन बाहर जाने की नहीं बल्कि डॉक्टर की बात सुनने की...।

डॉक्टर ने पूछा, "मैडम! रिपोर्ट लेने के लिए कोई मर्द क्यों नहीं आया?"

"मैं इधर से गुज़र रही थी...सोचा कि ख़ुद ही ले लूं। वैसे भी जो कुछ भी हो मैं सुनने के लिए तैयार हूं।" उसने कहा।

डॉक्टर कुछ सेकेंड के लिए चुप हुआ और अफ़सोस के साथ उसे देखते हुए कहा, "वैसे तुम्हारे चेहरे से ही लग रहा है कि काफ़ी समझदार लड़की हो और सच्चाई का सामना कर सकती हो।"

यह कहकर डॉक्टर फिर चुप हो गया। अब तो उसे बहुत डर लग रहा था। उसने जल्दी से पूछा, "आपका क्या मतलब है डाक्टर साहब?"

"इस रिपोर्ट से पता चलता है कि मरीज़ को ख़ून की एक बीमारी है।" डाक्टर ने यह कहकर सर नीचे झुका लिया और ख़ामोश हो गया। अब राज़िया ने डाक्टर से कुछ पूछने के बजाए ख़ुद ही कांपते हुए होंठों से कहा, "कैंसर"?!

डाक्टर ने सर नहीं उठाया और वैसे ही ख़ामोश रहा। वह दिल ही दिल में उस लड़की के लिए अफ़सोस और हमदर्दी महसूस कर रहा था लेकिन डाक्टर की ख़ामोशी राज़िया के लिए मौत के सन्नाटे से कम नहीं थी। उसने क़रीब-क़रीब रोते हुए कहा, "इसका मतलब है कि मेरी ज़िंदगी के दिन ख़त्म हो चुके हैं।"

अब डाक्टर समझ गया था कि उसने झूठ बोला था लेकिन अब तो देर हो चुकी थी। उसने सर उठाकर बहुत आराम से उससे कहा, "मुझे बहुत अफ़सोस है बेटी! लेकिन तुम ने झूठ क्यों बोला? बहेरहाल मौत और ज़िंदगी ख़ुदा के हाथ में है। बहुत से बीमार लोग बच जाते हैं और बहुत से सेहतमंद लोग इस दुनिया से चले जाते हैं। राज़िया को अपना दिल डूबता हुआ लग रहा था और उसे लग रहा था कि जैसे कोई लोहे के पंजों से उसका दिल मसल रहा है। किसी तरह उसने हिम्मत जुटाई और कहा, "माफ़ कीजिएगा डाक्टर साहब! शुक्रिया!"

डाक्टर ने कहा, "बेटी! अपने ऊपर क़ाबू पाओ और हंसी ख़ुशी रहो। मेडिकल साइंस बहुत तेज़ी से तरक़्क़ी कर रही है। हो सकता है कि जिन बीमारियों के इलाज का अभी तक पता नहीं चल सका है वह बहुत जल्दी मालूम हो जाए। अभी भी उम्मीद है, मैं मेडिकल साइंस की नई रिसर्च देखूंगा, शायद कोई इलाज मालूम हो जाए। अपना मोबाइल नम्बर देती जाओ।"

उसने तेज़ी से अपना नम्बर बताया। उसे कुछ भी समझ में नहीं आ रहा था कि क्या कह रही है और क्या सुन रही है। इस ख़बर ने उसे बुरी तरह से तोड़ कर रख दिया था। दोबारा डाक्टर का शुक्रिया अदा करते हुए क्लीनिक से बाहर आ गई।

घर पहुंची लेकिन किसी को कुछ नहीं बताया। वह कुछ बता भी नहीं सकती थी बल्कि उसे तो यह भी नहीं मालूम था कि क्या कहे। दूसरी तरफ़ घर वाले पार्टी में जाने की तैयारी कर रहे थे और अपने आप में ही मगन थे। मां ने उसकी तरफ़ देख़ते हुए पूछा, ''राज़िया बेटी! क्लीनिक गई थी?ब्यूटी पार्लर क्यों नहीं गई?''

मां के पूछने के अंदाज़ से ही लग रहा था कि वह पूरा जवाब भी नहीं सुनना चाह रही हैं। इसीलिए राज़िया ने छोटा सा जवाब दे दिया, ''क्योंकि मैं पार्टी में नहीं जाऊंगी।''

यह कह कर अपने कमरे में चली गई। दरवाज़ा अंदर से बंद करके कपड़े चेंज किए बिना बिस्तर पर लेट गई। उसे लग रहा था कि घर वालों की आवाज़ बहुत दूर से उसके कानों में आ रही है। अपने अंदर उसे मौत का संनाटा महसूस हो रहा था जिसमें न मालूम कैसी भयानक सी आवाज़ें आ रही थीं। उसकी निगाहों में बचपन से लेकर अब तक का सारा ज़माना घूम रहा था। उसे अपने प्रिंसपल रूम में भी अजनबी पन सा लग रहा थी क्योंकि कुछ दिनों बाद यह उससे छूट जाने वाला था। शायद उसकी जगह दूसरे लोग आ जाएंगे और कुछ दिनों के लिए उसे याद भी करेंगे लेकिन बहेरहाल भूल जाएंगे।

वह चिल्ला-चिल्ला कर रोना चाह रही थी लेकिन उसके आंसू भी उसका साथ नहीं दे रहे थे। वह रोने के बजाए बहुत गहरी सोच में डूब चुकी थी। कमरे में इधर-उधर ख़ाली-ख़ाली आंखों से घूर रही थी। उसकी निगाह पर्दों पर पड़ी। कितनी मुश्किल के बाद उसने अपने पसंदीदा पर्दे ढूंढ कर ख़रीदे थे। उनकी कितनी डिज़ाइनें देखीं थीं और उसके बाद उसे पसंद किया था लेकिन अब उसे छोड़ कर जाना होगा। अब क्या फ़र्क़ पड़ता है कि यह रेशम के हैं या रूई के?! उसे इन सब को दूसरों के लिए छोड़ कर जाना होगा। वह सोच रही थी कि काश उनके लिए इतना वक़्त ख़र्च न किया होता। इतना पैसा और वक़्त बर्बाद किया लेकिन अब उसके क्या काम आ सकता है। वह अपने ज़ेहन में कोई ऐसी चीज़ ढूंढ रही थी जो उसके काम आ सके। जवानी की सारी नेमतें उसके पास थीं, ख़ूबसूरती, अच्छी एजूकेशन, दौलत और बहुत सारी आरामदेह चीज़ें लेकिन क्या उनमें से कोई उसकी मदद कर सकता है या उससे मौत को दूर कर सकता है?कभी उसकी तमन्ना यह थी कि कोई अच्छी सी जॉब मिल जाए ताकि अच्छी सेलरी मिलने लगे। अब उसके पास अच्छी जॉब और सेलरी थी लेकिन क्या उसकी सेलरी उसे मौत से बचा सकती है?

अचानक उसके ज़ेहन में एक बात आई। उसकी आंख़ों में चमक आ गई थी। तेज़ी से मोबाइल उठाया और क्लीनिक फ़ोन किया। डाक्टर से बहुत ख़ुशी से पूछा, ''डाक्टर साहब! अगर मैं फ़ॉरेन चली जाऊं तो मेरी बीमारी का इलाज हो सकता है?''

डाक्टर ने कहा, ''मुझे तो नहीं लगता। वहां पर भी इसका कोई इलाज नहीं है सिवाए पैसा बर्बाद करने और परेशान होने के कुछ नहीं होगा।''

मोबाइल रखकर मायूसी के साथ कुर्सी पर बैठ गई। उसकी सारी दौलत भी इस सच्चाई को बदल नहीं सकती थी।

वह उठ कर इधर-उधर टहलते हुए घर का कोना-कोना देख रही थी। जैसे वह दुनिया जिससे बहुत ज़्यादा मुहब्बत करती थी उसे रुख़सत कर रही हो। उसकी निगाह बग़ीचे के ख़ूबसूरत पेड़ों और फूलों पर पड़ी। अपने दिल में कहा कि काश यह पेड़-पौधे जानते होते... काश यह जानते होते कि मैं जाने वाली हूं! काश इन पत्थरों और ख़ूबसूरत दीवारों को पता होता कि मैंने सफ़र का सामान तैयार कर लिया है और हमेशा के लिए उनके पास से जाने वाली हूं! काश इन फूलों को पता होता कि मैं जाने वाली हूं, इन्हें मैंने कितनी मेहनत से उगाया था, अगर मैंने उन्हें पानी न दिया होता तो यह मुरझा गए होते। क्या यह सब मुझे याद करेंगे?! काश यह समझ सकते होते, काश मेरे आस-पास जितनी चीज़ें हैं यह मेज़, कुर्सी, क़लम यह सब समझ सकते होते कि मैं जाने वाली हूं।

और ऐ काश! मैं जानती होती कि मैंने इस दुनिया से इतना ज़्यादा दिल क्यों लगा लिया था और किस बात पर मुझे इतना ज़्यादा घमंड था। हां! काश मैंने दुनिया को पहले ही समझा लिया होता कि मैं सिर्फ़ उसकी कुछ दिनों की मेहमान हूं तो दुनिया मुझे अपनी चमक-दमक से धोखा नहीं दे सकती थी। काश मुझे मालूम होता कि एक लग्जरी ज़िंदगी से अलग होना आसान नहीं है लेकिन सादी ज़िंदगी आराम से छोड़ी जा सकती है। अगर मैं इस दुनिया की चमक-दमक में इतना ज़्यादा न डूब गई होती तो शायद दूसरी दुनिया में जाना मेरे लिए आसान होता। मेरे घर वाले अभी पार्टी में गए हैं और वह इस तरह की कितनी पार्टियों में जाते रहेंगे कि मैं जिनका इंतिजार किया करती थी। उनमें जाने के लिए मंहगे से मंहगे कपड़े और ज़ेवर ख़रीदती थी। क्या सच में यह सब कुछ मेरे किसी काम का था?

राज़िया अपने आपसे यह सारी बातें करते-करते अचानक कुर्सी पर बैठ गई। जैसे कोई सच्चाई जिससे वह अंजान थी अब उसके सामने आ गई थी। एक बार फिर उसने अपने आप से कहा, ''मैं अपने साथ क्या ले जा रही हूं? क्या एक कफ़न और अपने कैरेक्टर व अच्छे-बुरे आमाल के अलावा कुछ और ले जाऊंगी?इस लंबे सफ़र में कौन सा अमल मेरे काम आ सकता है? कोई भी नहीं...कोई भी नहीं!

उसे अपनी दोस्त की बातें याद आईं जो उसे समझाते हुए कहती थी कि

ख़ुदा की इताअत करो, सफ़र के लिए ज़रूरत का सामान ले लो और बेहतरीन सामान तक़वा और परहेज़गारी है।''

उस वक़्त रज़िया को किसी दूसरी दुनिया के लिए तैयार होने और सामान लेने की बातें समझ में नहीं आती थीं लेकिन आज जब उसे अपने ख़ुदा के सामने जाने के लिए उस सामान और नेक अमल की ज़रूरत थी तो वह क्या कर सकती थी और इस तरह क़यामत में कैसे जाएगी?

वह ख़ुदा की रहमत से कैसे उम्मीद लगा सकती थी जबकि उसने ख़ुदा के छोटे से छोटे हुक्म को भी नहीं माना था? काश वह सारी उल्टी-सीधी किताबें पढ़ने के बजाए क़ुरआन पढ़ती, काश फ़िल्मी मैगज़ीनों और बॉलीवुड और हॉलीवुड की न्यूज़ ढूंढने के बजाए अपने दीन के बारे में मालूमात हासिल करती।

राज़िया इसी तरह सोचों में गुम थी और अपने आपसे बातें कर रही थी कि काश फुलां को परेशान न किया होता! काश उस पर टांटिंग न की होती, काश उसका मज़ाक़ न उड़ाया होता! काश ग़ीबत न की होती! काश ग़रीबों के सामने अपनी दौलत पर घमंड न किया होता और अपने आपको उनसे बड़ा न समझा होता! और काश, काश, काश एक दूसरी ज़िंदगी गुज़ारने का मौक़ा मिल जाता ताकि अपनी ग़ल्तियां सुधार सकती और अपने ख़ुदा को राज़ी करने वाले काम कर सकती। मैं तो अपने नफ़्स की ग़ुलाम थी, काश कुछ दिन और ज़िंदा रह जाती ताकि अपने गुनाहों को धो सकूं।

उसने अपने पापा की ज़ुबान से कभी यह आयत सुनी थी, ''यहां तक कि जब उनमें से किसी की मौत आ गई तो कहने लगा कि परवरदिगार मुझे पलटा दे। शायद मैं अब कोई नेक काम कर सकूं। हरगिज़ नहीं! यह एक बात है जो यह कह रहा है और उनके पीछे एक बरज़ख़ है जो क़यामत के दिन तक बाक़ी रहने वाला है।'' [1]

जैसे यह तो उसके दिल की आवाज़ थी कि वह अपने परवरदिगार से मुनाजात कर रही थी। नहीं, नहीं मेरे ख़ुदा मैं ग़लत नहीं कह रही हूं। मैं पूरे दिल से कह रही हूं।

और यह कहते-कहते उसकी आंख़ों से आंसू निकल आए। वह अपना सर पकड़ कर रोने लगी। यह किसी दर्द के नहीं बल्कि पछतावे और शर्मिंदगी के आंसू थे। उसने फ़ैसला किया कि अगर वह कुछ दिन और जीती है तो कभी भी अपने ख़ुदा की नाफ़रमानी नहीं करेगी।

मोबाइल की रिंग ने उसकी सोचों का सिलसिला तोड़ा...बहुत मुश्किल से कुर्सी से उठ कर गई। फ़ोन उठाया और रुंधी हुई आवाज़ में कहा, हैलो! उस तरफ़ से आवाज़ आई, ''राज़िया मैडम?''

राज़िया ने डाक्टर की आवाज़ पहचान ली थी। फ़ौरन कहा, ''जी डाक्टर साहब! राज़िया बोल रही हूं।''

डॉक्टर ने ख़ुशी से चहकते हुए कहा, मुबारक हो बेटी! तुम बिल्कुल ठीक हो। एक छोटी सी ग़लती हो गई थी लेकिन ख़ुदा का शुक्र है कि तुम बिल्कुल ठीक हो।''

राज़िया यह बात सुनकर चौंक गई थी। जैसे वह ख़्वाब देख रही हो। उसे कुछ समझ में ही नहीं आ रहा था कि क्या कहे।

उसने ताअज्जुब और ख़ुशी के मिले-जुले अंदाज़ में पूछा, ''मैं ठीक हूं? यह कैसे हो सकता है? आप मज़ाक़ तो नहीं कर रहे हैं?''

डाक्टर ने कहा, ''नहीं मज़ाक़ नहीं कर रहा हूं। अभी-अभी क्लीनिक से फ़ोन करके मुझसे बताया गया है कि ग़लती से एक दूसरे मरीज़ की जगह तुम्हारा नाम लिख दिया गया था। उन लोगों ने माफ़ी भी मांगी है। मेरे हाथ में तुम्हारी असली रिपोर्ट है और तुम बिल्कुल ठीक हो। ख़ुदा का शुक्र अदा करो बेटी...!''

राज़िया ने जल्दी से डाक्टर की बात दोहराई और कहा, ''ख़ुदा का शुक्र और आपका भी शुक्रिया डाक्टर साहब!''

फ़ोन डिस्कनेक्ट हो चुका था। उसे महसूस हो रहा था कि जैसे उसे दूसरी ज़िंदगी दे दी गई हो। उसने अपने ख़ुदा से जो वादा किया था उसे वह याद आया। वह समझ चुकी थी कि इस बार मौत से छुटकारा पा गई है लेकिन मौत का तो कोई भी टॉइम नहीं है, वह किसी भी वक़्त आ सकती है। आदमी की उम्र चाहे जितनी लंबी क्यों न हो लेकिन वह इस दुनिया में सिर्फ़ एक मेहमान है।

सबसे पहला काम उसने यह किया कि वुज़ू करके मग़रिब और इशा की नमाज़ पढ़ी यानी वह काम किया जो काम उसने सालों से छोड़ रखा था। नमाज़ के बाद दोबारा ख़ुदा से वादा किया कि वह नमाज़, रोज़ा, हिजाब, दूसरे वाजिब काम और ख़ुदा के सारे एहकाम की पाबंद हो जाएगी और जिन चीज़ों से ख़ुदा ने मना किया है उनको नहीं करेगी। उसके बाद यह आयत काग़ज़ पर लिख़ कर कमरे की दीवार पर लगा दी ताकि हमेशा उसके ज़ेहन में रहे।

''यहां तक कि जब उनमें से किसी की मौत आ गई तो कहने लगा कि परवरदिगार मुझे पलटा दे। शायद मैं अब कोई नेक काम कर सकूं। हरगिज़ नहीं! यह एक बात है जो यह कह रहा है और उनके पीछे एक बरज़ख़ है जो क़यामत के दिन तक बाक़ी रहने वाला है।''

यह ख़ूबसूरत सेंटेंस भी लिख कर सामने की दीवार पर चिपका दिया, **''मरने से एक दिन पहले तौबा कर लो और क्योंकि मौत का दिन नहीं जानते हो इसलिए हमेशा गुनाहों से बचो और तौबा करते रहो।''**

1- सूरए मोमिनून/100

इसराफ़

फ़ुज़ूलख़र्ची

■ फ़रहा नाज़

इसराफ़ यानी फ़ुज़ूलख़र्ची न सिर्फ़ यह कि गुनाहे कबीरा है बल्कि समाज पर भी इसका बहुत ही बुरा असर पड़ता है। हम यहां क़ुरआन की आयतों और रिवायतों की रौशनी में फ़ुज़ूलख़र्ची पर बात करेंगे। यह भी ख़याल रहे कि फ़ुज़ूलख़र्ची के लिए क़ुरआन और हदीसों में जो लफ़्ज़ आया है वह 'इसराफ़' है।

इसराफ़ के मायने

इसराफ़ किसी भी काम में हद से आगे बढ़ जाने का नाम है यानी किसी भी चीज़ का बहुत ज़्यादा इस्तेमाल इसराफ़ कहलाता है।

फ़ुज़ूलख़र्ची की जगहें

1- माल-दौलत को फ़ुज़ूल में ख़र्च करना, चाहे कम ही क्यों न हो जैसे फ़ंक्शन्स में पहने जाने वाले क़ीमती कपड़ों को रोज़ाना के तौर पर घर में पहनना या ग्लास में बचा हुआ पानी फेंक देना। हाँ! अगर यह काम बेक्टीरीया से बचने के लिए हो तो फ़ुज़ूलख़र्ची नहीं है।

2- ऐसी चीज़ें ख़ाना जो बदन के लिए नुक़सानदेह हों या भरे हुए पेट में खाना।

ध्यान देने की बात यह है कि ख़ुदा की राह में ख़र्च करने में भी हद से आगे बढ़ जाने को भी फ़ुज़ूलख़र्ची कहा गया है क्योंकि बीवी-बच्चों और घर वालों की ज़रूरतों को पूरा करना भी इंसान की ज़िम्मेदारियों में शामिल है जबकि इन्फ़ाक़ एक मुस्तहब काम है।

हिस्ट्री बताती है कि मदीने में एक शख़्स का इंतेक़ाल हो गया। रसूले ख़ुदा[स०] ने उसकी नमाज़े जनाज़ा पढ़ाई और लोगों से पूछा कि क्या इसके बच्चे हैं और उसने बच्चों के लिए क्या छोड़ा है?

लोगों ने बताया कि इसके पास कुछ दौलत थी लेकिन मरने से पहले उसने वह सब इसने ग़रीबों में बांट दी और बच्चों के लिए कुछ नहीं रखा।

रसूले ख़ुदा[स०] ने कहा कि अगर यह बात मुझे पहले मालूम हो जाती तो मैं उसकी नमाज़े जनाज़ा न पढ़ाता। उसने अपने बच्चों को लोगों के रहम व करम पर भूखा छोड़ दिया है।

इस्लामी समाज की एक बहुत ख़ास बात यह है कि इस्लाम ने चीज़ों के इस्तेमाल में लोगों के स्टेटस और हैसियत को भी नज़र में रखा है लेकिन इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि सादगी और वुसअत अलग चीज़ है जबकि झूठी शान-शौकत और हद से ज़्यादा ऐशो आराम से दिलचस्पी अलग चीज़ है। इस्लाम की नज़र में पहला काम अच्छा और दूसरा बुरा है।

ख़ुदा की नेमतों से फ़ायदा उठाना हर आदमी का बुनियादी हक़ है लेकिन हद से गुज़र जाना फ़ुज़ूलख़र्ची कहलाता है जबकि ज़रूरत से कम इस्तेमाल कंजूसी में गिना जाता है। इसलिए सबसे अच्छा काम बस वही है जिसमें बैलेंस रखा जाए। हज़रत इमाम अली[अ०] फ़ुज़ूलख़र्ची करने वाले की निशानी बताते हुए फ़रमाते हैं, "फ़ुज़ूलख़र्ची करने वाले की तीन निशानियां हैं, वह अपनी हैसियत से बढ़कर खाता, पीता और ख़रीदता है।"

तक़वे वाले और परहेज़गार लोगों के कपड़ों के बारे में इमाम अली[अ०] फ़रमाते हैं, "उनके कपड़े उनकी बैलेंस्ड-लाइफ़ का सुबूत होते हैं। वह न ज़्यादा मेंहगे कपड़े पहनते हैं और न ही बिल्कुल घटिया बल्कि मामूली और देखने में ख़ूबसूरत व पाकीज़ा कपड़े पहनते हैं।

फ़ुज़ूलख़र्ची की वजहें

हर काम की तरह फ़ुज़ूलख़र्ची की भी कुछ वजहें होती हैं जिन्हें समाज से ख़त्म किए बिना फ़ुज़ूलख़र्ची को ख़त्म नहीं किया जा सकता। यहां कुछ ऐसी ही वजहों को बताया जा रहा है:

1-ख़ुदनुमाई

जिसने अपनी पूरी ज़िंदगी नाकामियों और नाउम्मीदी में गुज़ारी हो, हमेशा ग़ुरबत का शिकार रहा हो, मुश्किलों में गिरफ़्तार रहा हो, ऐसा शख़्स अपनी ज़िंदगी में एक तरह की कमी महसूस करने लगता है। वह ख़ुद को अधूरा समझता है और फिर अपनी नाकामियों पर पर्दा डालने के लिए हर मिलने वाली चीज़ को हद से ज़्यादा इस्तेमाल करने लगता है और समझता है कि चीज़ों के बहुत ज़्यादा और ग़लत इस्तेमाल से वह अपनी खोई हुई शख़्सियत को हासिल कर लेगा। उसकी यह सोच समाज के लिए भी नुक़सानदेह हो जाती है।

2-घरेलू माहौल

किसी की भी परवरिश में फ़ैमिली का रोल बहुत अहम होता है। बच्चों की आदतों और नेचर में उनके घर वालों का चेहरा साफ़ झलकता है। बच्चे अपनी बहुत सी आदतें, रस्मो-रिवाज और नेचर को अपने मां-बाप और दूसरे घर वालों से ही सीखते हैं और ज़रूरत के वक़्त वह वैसा ही करते हैं जैसा बचपन में देखते और सुनते आए होते हैं।

एक मां जो अपने बच्चों के लिए आइडियल की हैसियत रखती है, अगर घर में फ़ुज़ूलख़र्ची जैसे

गुनाह से बचे और चीज़ों का सही इस्तेमाल करे तो यक़ीनी तौर पर उसकी बेटी भी अपनी मां के नक़्शे क़दम पर चलती हुई उसी को फ़ॉलो करेगी। लेकिन इसके उलट अगर कोई मां बिला सोचे समझे चीज़ों का बेजा इस्तेमाल करे और ख़र्च करने में कोई कमी न करे तो यक़ीनी तौर पर उसकी बेटी भी बिल्कुल उसकी तरह फ़ुज़ूलख़र्च और फ़ुज़ूलख़र्ची करने वाली बन जाएगी।

3-अख़्लाक़ी बुराई

फ़ुज़ूलख़र्ची को छोड़ देना एक दीनी काम और मज़हबी पाबंदी है जिस पर अच्छी परवरिश और अच्छी तहज़ीब की सूरत में ही अमल होगा। कुछ लोगों में फ़ुज़ूलख़र्ची की आदत उनकी अख़्लाक़ी और रूहानी शख़्सियत में कमज़ोरी की वजह से होती है क्योंकि गुनाहगार इंसान हरगिज़ अपने या लोगों के माल को बैलेंस के साथ इस्तेमाल नहीं कर सकता। वह हमेशा अपने ज़ाती फ़ायदों के हासिल करने में लगा रहेगा और उसके लिए माल ख़र्च करने या बर्बाद करने से भी नहीं बचेगा।

4-दूसरों की देखा-देखी

इंसानी ज़िंदगी और परवरिश में नक़्ल की बहुत ज़्यादा अहमियत है। इंसान हमेशा इस कोशिश में रहता है कि वह ख़ुद को अपनी मनपसंद शख़्सियत के रूप में ढाल ले। अगर इस पसंद की कसौटी इल्म की रौशनी हो और आइडियल को अक़्ल के ज़रिए चुना जाए तो इस नक़्क़ाली से बहुत से फ़ाएदे मिल जाएंगे लेकिन अगर इसके उलट जाहिलाना सोच की बिना पर किसी को अपना आइडियल मान लिया जाए और फिर उसकी नक़्ल की जाए तो इससे इंसान आगे बढ़ने के बजाए पिछड़ जाता है और उसकी दीनी और दुनियावी दोनों पर्सनॉलिटी तबाह हो जाती है।

कुछ लोग अपनी ग़ल्तियों पर पर्दा डालने के लिए और अपनी फ़ुज़ूलख़र्ची की आदत को छुपाने के लिए कोई न कोई रीज़न पेश कर देते हैं। जैसे कहते हैं कि फ़ुलां का भी यही तरीक़ा है या फ़ुलां भी ऐसे ही करता है। दूसरों की देखा-देखी मेंहगे-मेंहगे कपड़े पहनना, मेंहगी-मेंहगी डिशेज़ खाना, ऐश करना और लगज़रीज़ के पीछे भागना, यह सब फ़ुज़ूलख़र्ची है। इमाम मुहम्मद बाक़िर[अ] फ़रमाते हैं, "मैं तुम्हें अपने से ऊंचे स्टेटस वाले की ज़िंदगी की तरफ़ लालच की निगाह डालने से डराता हूं।"

फ़ुज़ूलख़र्ची और ग़रीबी के बीच आपसी रिश्ता

जिस तरह दूसरे गुनाह इन्सान की दुनियावी और रूहानी ज़िंदगियों पर असर डालते हैं उसी तरह फ़ुज़ूलख़र्ची का असर भी इन्सानी ज़िंदगी पर साफ़ नज़र आ जाता है। फ़ुज़ूलख़र्ची का असर सिर्फ़ इन्सान की अपनी ज़िंदगी पर ही नहीं बल्कि उसके साथ रहने वालों पर भी पड़ता है। वह लोग जो ख़ुद तो फ़ुज़ूलख़र्ची नहीं करते लेकिन दूसरों को करते हुए देख कर उन्हें मना भी नहीं करते, ऐसे लोग भी फ़ुज़ूलख़र्ची की तबाहियों का शिकार हो जाते हैं।

ग़रीबी, फ़ुज़ूलख़र्ची की तबाहियों में से एक है। इमाम मूसा काज़िम[अ] इस बारे में फ़रमाते हैं, "जो अपनी ज़िंदगी में बैलेंस और क़िनाअत को अपनाता है, नेमतें उनके लिए बाक़ी रहती हैं और जो फ़ुज़ूलख़र्ची करता है, नेमत उससे वापस ले ली जाती है।"

जब इन्सान से नेमतें वापस ले ली जाती हैं तो ग़रीबी उससे चिपक जाती है। वह हर काम में दूसरों का मोहताज हो जाता है। इमाम जाफ़र सादिक़[अ] फ़रमाते हैं, "बेशक फ़ुज़ूलख़र्ची बरकतों में कमी कर देती है।"

एक छोटी सी रिसर्च के ज़रिए समाज में रोज़ाना होने वाली बर्बादी को आसानी से महसूस किया जा सकता है। रोज़ाना हज़ारों किलो के हिसाब से रोटी भूसी के टुकड़े वालों को दे दी जाती है, सब्ज़ी और फल इस्तेमाल किए बिना ही सड़ जाते हैं और हज़ारों लीटर पानी फ़ालतू बहा दिया जाता है। रिवायत में है कि एक दिन इमाम जाफ़र सादिक़[अ] ने अपने घर के बाहर एक ऐसा फल पड़ा हुआ देखा जिसे पूरा खाए बिना फेंक दिया गया था। इमाम ने नाराज़ होकर अपने घर वालों से कहा कि यह क्या है? अगर तुम्हारा पेट भर गया है तो अभी दूसरे बहुत से लोगों का पेट नहीं भरा है। इसे किसी ज़रूरतमंद को दे दिया होता।

हमें अपने आपसे पूछना चाहिए कि आख़िर ज़रूरत से ज़्यादा खाना क्यों पकाया जाता है? पानी और बिजली के इस्तेमाल में कमी क्यों नहीं की जाती? क्यों हम काग़ज़, पेन वग़ैरा के इस्तेमाल में ज़्यादती करते हैं? फलों को पूरा खाए बिना क्यों फेंक देते हैं? रोटी को सही से पकाते और इस्तेमाल क्यों नहीं करते? क्यों दूसरों की देखा-देखी फ़ुज़ूलख़र्ची पर उतर आते हैं? इमाम सादिक़[अ] फ़रमाते हैं, "ज़िंदगी में बैलेंस को ख़ुदा पसंद करता है और फ़ुज़ूलख़र्ची को पसंद नहीं करता, चाहे यह फ़ुज़ूलख़र्ची खजूर की गुठली को फेंक देने के बराबर ही क्यों न हो क्योंकि यह गुठली काम में आ सकती है या बचा हुआ पानी ही क्यों न हो।"

फ़ुज़ूलख़र्ची और दुआओं का क़ुबूल न होना

फ़ुज़ूलख़र्ची करने वाला अपने ही हाथों इस बीमारी में फंसा हुआ होता है। इसलिए अगर वह अपनी ग़रीबी दूर करने के लिए दुआ मांगेगा तो उसकी दुआ क़ुबूल नहीं होगी। इमाम जाफ़र सादिक़[अ] दुआ के क़ुबूल न होने की एक वजह फ़ुज़ूलख़र्ची करने को भी बताते हैं।

फ़ुज़ूलख़र्ची और ख़ुदा से दूरी

सच तो यह है कि दुनियावी और रूहानी कामों में हद से आगे बढ़ जाना हक़ को झुठलाने के बराबर है। ऐसा शख़्स धीरे-धीरे ख़ुदा से दूर हो जाता है और फिर अल्लाह की हिदायत से बिल्कुल ही महरूम हो जाता है। यूं उसकी ज़िंदगी गुमराही का शिकार होकर रह जाती है और वह बेमक़सद ज़िंदगी गुज़ारने लगता है, लोग उसे बुरी नज़रों से देखते हैं और उससे दूर हो जाने में ही ख़ैरियत समझते हैं।

मरसिया

रसूल[स०] की बेटी, हज़रत फ़ातिमा ज़हरा[स०] की शहादत पर

■ अल्लामा रियाज़ हाशिम
'रियाज़' नौगांनवी

घर में अली के मातमे ज़हरा[स०] बपा है आज
लरज़ां अलम से मरक़दे ख़ैरूल वरा[स०] है आज
मग़मूम कायनात का मुश्किल कुशा[अ०] है आज
यह कैसा वक़्त आले नबी[अ०] पर पड़ा है आज

बेचैन फ़रते ग़म से है इतरत रसूल[स०] की
जन्नत को जा रही है सवारी बुतूल[स०] की

इस मुख़्तेसर हयात में दाग़े पिदर मिला
जारी तमाम उम्र रहा ग़म का सिलसिला
क्या-क्या सितम उठाती रही बिन्ते मुस्तफ़ा[स०]
यह ज़ुल्मो-जौर और यह शहज़ादिये किसा

बिन्ते नबी[स०] को और रूलाने के वास्ते
असहाब आए घर को जलाने के

कोई न था जो कहता यह बेटी नबी[स०] की है
पढ़ते हो जिसका कलमा यह बेटी उसी की है
बादे रसूल[स०] हद भी कोई दुश्मनी की है
यह तो दलील दीन से ही बेरूख़ी की है

दरवाज़ा क्यों गिरा दिया लोगो बुतूल[स०] का
पहलू शिकस्ता हो गया बिन्ते रसूल[स०] का

जाती थी रोज़ बाप के मरक़द पे सैय्यदा[स०]
कहती थी बाबा जान से आंसू बहा-बहा
रूदाद अपनी बेटी की सुन लीजिए ज़रा
ग़म इस क़द्र उठाए हैं या शाहे अम्बिया

बाद आपके न चैन मयस्सर हुआ हमें
हर रोज़ ज़ुल्म सहने पड़े हैं सिवा हमें

कुछ यूं रक़मतराज़ है रावीये मौतबर
असमा से फ़ातिमा[स०] ने कहा थाम के जिगर
सूवे जिनां में दुनिया से कर जाऊं जब सफ़र
हसनैन[अ०] को न देना मेरी मौत की ख़बर

पहले तो मेरे बेटों को खाना खिलाईयो
फिर उनको मेरे मरने की बाबत बताइयो

नहला रहे थे बिन्ते पयम्बर[स०] को मुरतज़ा[अ०]
वह मुरतज़ा[अ०] न फ़ौजों की कसरत से जो डरा
ज़हरा ने जिसका ज़िक्र तलक भी किया न था
पसली जो देखी टूटी, तहम्मुल न हो सका

एक चीख़ निकली मूंह से वसीए रसूल[अ०] के
क़ुरबान जाऊं सब्रे जनाबे बुतूल[स०] के

दी यह सदा जनाज़ा है तैयार देख लो
बिन्ते नबी[स०] का आख़िरी दीदार देख लो
जल्दी से आओ इतरते अतहार[स०] देख लो
रूख़सत के वक़्त और भी एक बार देख लो

होगी न फिर नसीब ज़ियारत बुतूल[स०] की
ता उम्र अब सताएगी फ़ुरक़त बुतूल[स०] की

पहुंचे हुसैन[अ०] मां के जनाज़े पे जिस घड़ी
कहने लगे ऐ अहमदे मुर्सल की लाडली
कर दीजिए पूरी मेरी तमन्ना यह आख़िरी
सीने से अपने मुझ को लगा लीजिए अभी

करके 'रियाज़' इशारा बुलाया हुसैन[अ०] को
फिर तो गले से ख़ूब लगाया हुसैन[अ०] को

GULSHAN

MEHANDI & HERBALS

IRFAN ALI PRADHAN
403 & 404, A Block
REGALIA HEIGHT
S Ahmadabad Palace Road
KOHE-FIZA
BHOPAL (M.P.) 462001, INDIA.
+919893030792, +917554220261

MOHTARMA "GULSHAN"
G-1, Krishna Apartment
Plot No. 2, Firdaus Nagar
Bairasia Road, BHOPAL
+91-755-2739111